RNI No. GUJHIN/2010/35230

महानगर मेट्रो

राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र

कार्यालय :- सी-8 रिची हाउस, स्वामी नारायण मंदिर के सामने मणिनगर अहमदाबाद गुजरात-380008

महानगर मेट्रो
राष्ट्रीय दैनिक हिन्दी समाचार पत्र, प्रेस नोट एवं विज्ञापन के लिए कार्यालय पर सम्पर्क करें
सरबजीत माकन
+91-9638877700
mahanagarmetro7@gmail.com

वर्ष :15 । अंक:255। पेज:12। mahanagarmetro7@gmail.com || अहमदाबाद, (गुरुवार) 07 मई 2026 || सम्पादक - सरबजीत माकन (9638877700)।। मूल्य :- 1.50 रु.-/

भारत-वियतनाम साथ चलेंगे, साथ बढ़ेंगे, साथ जीतेंगे : पीएम नरेंद्र मोदी

'हम एक-दूसरे की रैपिड ग्रोथ के सहायक बनेंगे'

एजेंसी

नई दिल्ली । प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को कहा कि भारत और वियतनाम के संबंध अब बेहतर व्यापक रणनीतिक साझेदारी के नए

- 'यह साझेदारी अब और ऊंचे लक्ष्यों की ओर अग्रसर होगी।'

चरण में प्रवेश कर रहे हैं और दोनों देश मिलकर विकास और समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ेंगे। उन्होंने जोर देते हुए कहा, 'हम साथ चलेंगे, साथ बढ़ेंगे, और साथ जीतेंगे। ' प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और वियतनाम के राष्ट्रपति तो लाम के बीच बुधवार को हुई उच्चस्तरीय वार्ता के बाद भारत और वियतनाम ने अपने संबंधों को बेहतर व्यापक रणनीतिक साझेदारी के स्तर तक बढ़ाने की घोषणा की। दोनों देशों ने व्यापार, रक्षा, कनेक्टिविटी और रणनीतिक सहयोग को नई गति देने का संकल्प संकल्प

भी लिया। प्रधानमंत्री मोदी ने संयुक्त पत्रकार वार्ता में कहा कि राष्ट्रपति तो लाम का भारत दौरा दोनों देशों के बीच मजबूत होते संबंधों और आपसी प्राथमिकता को दर्शाता है। उन्होंने बताया कि यह साझेदारी अब और ऊंचे लक्ष्यों की ओर अग्रसर होगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत-वियतनाम के बीच व्यापार पिछले दशक में दोगुना होकर 16 अरब डॉलर तक पहुंच गया है। अब दोनों देशों ने इसे 2030 तक 25 अरब डॉलर तक ले जाने का लक्ष्य तय किया है। दवाओं, कृषि, मत्स्य और पशु उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए कई समझौतों पर सहमति बनी है। बहुत जल्द, वियतनाम भारत के अंगूर और अनार का और हम वियतनाम के डूरियन और पोमेलो का स्वाद लेंगे। दोनों देशों ने वित्तीय सहयोग बढ़ाने के तहत भारत के यूपीआई और वियतनाम के फास्ट पेमेंट सिस्टम को जोड़ने पर सहमति जताई। साथ ही एयर कनेक्टिविटी, स्टेट-टू-स्टेट और सिटी-टू- सिटी सहयोग को भी बढ़ाया जाएगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि वियतनाम भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी और विजन महासागर का एक मुख्य स्तंभ है। दोनों देशों ने इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में शांति, स्थिरता और नियम-आधारित व्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए रक्षा और सुरक्षा सहयोग मजबूत करने पर जोर दिया। वियतनाम के सहयोग से भारत, आसियान के साथ अपने संबंधों को भी और व्यापक बनाएगा।

पहलगाम आतंकी हमले की कड़ी निंदा करने और हमारा साथ देने के लिए वियतनाम का आभार:मोदी

नई दिल्ली । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 22 अप्रैल 2025 को पहलगाम में हुई बर्बर आतंकी हमले की निंदा करने और विषम स्थिति में भारत का साथ देने के लिए वियतनाम का आभार जताया। राष्ट्रीय राजधानी स्थित हैदराबाद हाउस में एक संयुक्त प्रेस वार्ता के दौरान पीएम मोदी ने इन भावनाओं को अहम बताया। सुशासन, विरासत, विकास और साझा सांस्कृतिक मूल्यों को द्विपक्षीय संबंधों का आधार बताया। आतंकवाद के विरुद्ध भारत का साथ देने के लिए पीएम मोदी ने वियतनाम की सरकार का आभार जताते हुए कहा, 'पहलगाम आतंकी हमले की कड़ी निंदा करने और आतंकवाद के विरुद्ध हमारे संघर्ष में साथ खड़े रहने के लिए हम वियतनाम के आभारी हैं।

विज्ञान और स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए भारत-जापान के बीच हुए कई अहम समझौते

एजेंसी

नई दिल्ली। विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में सहयोग को और मजबूत करने की दिशा में बुधवार को भारत और जापान के बीच समझौता किया गया है। इसके लिए जापान की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नीति मंत्री ओनोडा किमी ने एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल के साथ केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह से मुलाकात की।

इस बैठक में दोनों देशों के बीच स्वास्थ्य और मेडिकल डिवाइस के क्षेत्र में सहयोग के लिए करार किया गया। यह समझौता जापान एजेंसी फॉर मेडिकल रिसर्च एंड डेवलपमेंट, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद और विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के बीच हुआ। इसके अलावा, क्वांटम साइंस और टेक्नोलॉजी में सहयोग बढ़ाने के लिए जापान के कैबिनेट ऑफिस और विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के बीच लेटर ऑफ इंटेंट पर भी हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 2025 में जापान यात्रा के बाद भारत-जापान विज्ञान एवं तकनीक साझेदारी एक नए चरण में प्रवेश कर चुकी है।

क्वांटम और हेल्थ सेक्टर पर फोकस

बैठक में नेशनल क्वांटम मिशन, क्वांटम कंप्यूटिंग, सुरक्षित संचार और हेल्थ रिसर्च जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर चर्चा हुई। साथ ही रिसर्च, इंडस्ट्री और स्टार्टअप्स के बीच साझेदारी को मजबूत करने पर भी जोर दिया गया। दोनों देशों ने रिसर्च सहयोग, संयुक्त परियोजनाओं, और वैज्ञानिकों के आदान-प्रदान को बढ़ाने पर सहमति जताई।

दोनों देशों की ताकत का मेल

उन्होंने कहा कि जापान के पास उन्नत तकनीक है, जबकि भारत के पास युवा और कुशल मानव संसाधन की बड़ी ताकत है। दोनों मिलकर नई तकनीकों में तेजी से नवाचार कर सकते हैं।

जापान की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नीति मंत्री ओनोडा किमी ने भारत की तेज आर्थिक वृद्धि और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के व्यापक इस्तेमाल की सराहना की। उन्होंने भारतीय युवाओं में नवाचार और असफलताओं से सीखने की क्षमता को भी खास बताया।

आदि कैलाश व ओम पर्वत यात्रा पर 8 को हल्द्वानी से रवाना होगा पहला दल

नैनीताल। कुमाऊं मण्डल विकास निगम (केएमवीएन) की ओर से संचालित आदि कैलाश व ओम पर्वत यात्रा का प्रथम दल आगामी शुक्रवार 8 मई को प्रातः 8 बजे हल्द्वानी से रवाना होगा। इसमें बीस यात्री शामिल होंगे। निगम के व्यवसाय विकास प्रबंधक दीपक पांडे ने बताया कि आदि कैलाश व ओम पर्वत यात्रा पर श्रद्धालुओं का पहला दल शुक्रवार को तिकोनिया स्थित लोक निर्माण विभाग के विश्राम गृह से अपनी यात्रा प्रारंभ करेगा। यात्रा के दौरान श्रद्धालु पहले दिन कैंची धाम, चितई गोलू देवता मंदिर एवं जागेश्वर धाम के दर्शन करेंगे। इसके उपरांत दल पर्यटक आवास गृह जागेश्वर में मध्याह्न भोजन करेगा और फिर पिथौरागढ़ के लिए प्रस्थान करेगा। उन्होंने बताया कि प्रथम यात्रा दल में कुल 20 यात्री शामिल हैं, जिनमें 13 महिला एवं 7 पुरुष यात्री हैं। निगम की ओर से यात्रियों की सुविधा एवं सुरक्षा के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं।

गांधी के गुजरात में 'खाकी' बिक गई 'अंग्रेजी' के भाव! वापी से सूरत तक पटरियों पर बह रही शराब की नदियां

महानगर मेट्रो ब्यूरो/पवन माकन

वलसाड/वापी। गुजरात में शराबबंदी का ढिंढोरा पीटने वाले सिस्टम के मुंह पर यह एक करारा तमाचा है! राज्य में कहने को तो 'ड्राई स्टेट' है, लेकिन हकीकत में वापी से लेकर सूरत तक का रेलवे ट्रैक अब शराब तस्करों का 'ग्रीन कॉरिडोर' बन चुका है। 'महानगर मेट्रो' की पड़ताल में यह साफ हो गया है कि कानून अंधा नहीं हुआ है, बल्कि उसे 'हफ्तों' की मोटी गड्डियों से अंधा कर दिया गया है।

'प्रवीण' का समानांतर राज और रोज़ाना उतरता 'जहर'

इस पूरे काले साम्राज्य का बेताज बादशाह है– 'प्रवीण'। यह सिर्फ एक नाम नहीं, बल्कि वो 'वहीवटदार' (कलेक्शन एजेंट) है जिसके इशारे पर पुलिस और रेलवे सुरक्षा एजेंसियां दुम हिलाती हैं।

पार्सल की आड़ में मौत का यह 'जहर' बेखौफ बांटा जा रहा है। रेलवे का पूरा नेटवर्क प्रवीण की मुट्ठी में है, जिसके चलते वापी, वलसाड, उड़वाड़ा, अतुल और पारदी जैसे स्टेशनों पर रोज़ाना 500 से 800 पेटी अंग्रेजी शराब सरेआम उतारी जा रही है।

सिंडिकेट का 'गोवा कनेक्शन' और उसके मोहरे

इस अवैध धंधे को चलाने के लिए एक बेहद संगठित और शातिर गैंग काम कर रहा है, जिसकी जड़ें गुजरात से लेकर गोवा तक फैली हैं:

ग्राउंड ऑपरेटर्स: आकाश, विनोद, सागर और विजय – ये वो गुर्गे हैं जो धरातल पर स्टेशनों से शराब की डिलीवरी और हेराफेरी का पूरा नेटवर्क संभालते हैं।

गोवा सिंडिकेट: बाबू माजरो, जीतू माल्या और टीनू – ये वो सफेदपोश तस्कर हैं जो इस पूरी अवैध सप्लाई लाइन को सीधे गोवा से ऑपरेट कर रहे हैं।

इन सबका 'बॉस' प्रवीण वहीवटदार है, जो ऊपर से लेकर नीचे तक पूरे सिस्टम का 'मैनेजमेंट' (रिश्वत का बंटवारा) देखता है।

खाकी का 'गठजोड़': लाखों का हफ्ता, इसलिए सब 'दफा'

शराब की इतनी बड़ी खेप बिना 'खाकी' के आशीर्वाद के नहीं उतर सकती। सबसे खौफनाक सच यह है कि इस अवैध धंधे को संरक्षण देने के बदले रेंज ढूत, रेलवे SP, RPF और GRP के नाम पर हर महीने लाखों रुपये का हफ्ता वसूला जा रहा है। प्रवीण वह अहम कड़ी है जो पुलिस के अलग-अलग विंग्स तक यह काली कमाई पहुंचाता है। यही वजह है कि आज तक इन तस्करों पर कोई बड़ी कार्रवाई करने की हिम्मत किसी ने नहीं जुटाई।

महानगर मेट्रो के सीधे और तीखे सवाल:

1.सीसीटीवी का मजाक: जब स्टेशनों पर चप्पे-चप्पे पर कैमरे और भारी पुलिस बल तैनात है, तो रोज़ाना शराब की 800 पेटियां हवा में कैसे गायब हो जाती हैं?

2.किसका है हाथ?: प्रवीण जैसे मामूली 'वहीवटदार' को आखिर किस बड़े राजनेता या आला अफसर का संरक्षण प्राप्त है जो वह पूरी सत्ता को चुनौती दे रहा है?3. सरकार की चुप्पी: क्या रेंज IG और SP स्तर तक पहुंच रहे इस 'हफ्ते' की भनक गांधीनगर में बैठी सरकार को नहीं है? या जानबूझकर आंखें मूंदी गई हैं?

असम के मुख्यमंत्री ने राज्यपाल को सौंपा इस्तीफा

एजेंसी

गुवाहाटी। असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने विधानसभा चुनाव 2026 के नतीजे आने के दो दिन बाद बुधवार को लोक भवन में राज्यपाल से मुलाकात कर अपने पद से इस्तीफा दे दिया। मुख्यमंत्री के इस्तीफा के बाद राज्य में नई सरकार के गठन के लिए आगे की कार्रवाई आज से आरंभ हो गयी। उल्लेखनीय है कि, बीते 9 अप्रैल को असम की 126 विधानसभा के लिए मतदान हुआ था। मतों की गिनती बीते 4 मई को हुई थी। जिसमें भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने अकेले 82 सीटें जीतकर स्पष्ट बहुमत प्राप्त कर लिया है। बावजूद भाजपा ने इस बार का चुनाव एनडीए के बैनर तले लड़ा था।

चुनाव आयुक्त कानून पर केंद्र की अर्जी खारिज

सुप्रीम कोर्ट ने कहा- यह मामला सबरीमाला से भी अधिक अहम

एजेंसी

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति से जुड़े 2023 के नए कानून को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई टालने से साफ इनकार कर दिया है। बुधवार को शीर्ष अदालत ने केंद्र सरकार की उस दलील को ठुकरा दिया, जिसमें सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने अन्य व्यस्तताओं का हवाला देकर समय मांगा था। जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने कहा कि यह मामला देश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। शीर्ष अदालत की सख्त टिप्पणी

सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि वह फिलहाल सबरीमाला मंदिर से जुड़े नौ जजों की पीठ के सामने व्यस्त हैं। इस पर जस्टिस दत्ता ने कहा, 'यह मामला किसी भी अन्य विषय से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।' उन्होंने केंद्र को निर्देश दिया कि उनके सहयोगी वकील आज नोट्स लें, लेकिन सुनवाई नहीं रुकेगी। कोर्ट ने याचिकाकर्ताओं को गुरुवार तक अपनी बहस पूरी करने का आदेश दिया है।

सीजेआई ने खुद को किया अलग

इससे पहले 20 मार्च को मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने इस मामले से खुद को अलग कर लिया था। उन्होंने कहा था कि इस समिति में सीजेआई को रखने या हटाने का सवाल है, इसलिए वह हितों के टकराव के चलते इस बेंच का हिस्सा नहीं बनेंगे। वर्तमान में सुनवाई जस्टिस दीपांकर दत्ता की अध्यक्षता वाली बेंच कर रही है।

आंध्र प्रदेश में 51 डॉक्टर बर्खास्त

छह वर्ष, तीन वर्ष तो कोई सात वर्ष ने नहीं आया काम पर, मंत्री का एक्शन

एजेंसी

अमरावती। आंध्र प्रदेश सरकार ने स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में लापरवाही पर कड़ा रुख अपनाया है। राज्य के स्वास्थ्य मंत्री सत्य कुमार यादव ने आज घोषणा की कि चिकित्सा शिक्षा निदेशक (डीएमई) के तहत कार्यरत 51 डॉक्टरों को काम से बिना की कारण या जानकारी के अनुपस्थिति के कारण स्थायी रूप से बर्खास्त कर दिया गया है। यह कदम राज्य में स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए किया गया है। इन डॉक्टरों में एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर और ट्यूटर शामिल हैं, जिनमें से कुछ कई वर्षों से अनुपस्थित थे। यादव ने एक आधिकारिक प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि 51 डॉक्टरों को बिना अनुमति के छुट्टी पर रहने के कारण काम से हटा दिया गया है। उन्होंने चेतावनी दी कि काम में लापरवाही किसी भी परिस्थिति में बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बर्खास्त किए गए डॉक्टरों में आठ

एसोसिएट प्रोफेसर, 41 असिस्टेंट प्रोफेसर और दो ट्यूटर शामिल हैं। इनमें से कई डॉक्टर व्यक्तिगत व्यावसायिक हितों के कारण अनुपस्थित थे। इससे रोगी की देखभाल और चिकित्सा सेवाएं गंभीर रूप से प्रभावित हुईं। डॉक्टरों को एपी सिविल सेवा (आचरण) नियम (उल्लंघन)-3-1964 के तहत सेवा से हटाया गया है। यह नियम सरकार को एक वर्ष से अधिक समय तक अनुपस्थित रहने वाले कर्मचारियों को इस्तीफा दिया हुआ मानने का अधिकार देता है। संबंधित डॉक्टरों को स्पष्टीकरण

स्वास्थ्य सेवा में सुधार के प्रयास

स्वास्थ्य मंत्री यादव ने कहा कि सरकार सरकारी स्वास्थ्य सेवा संस्थानों में कर्मचारियों की संख्या को मजबूत करने के लिए शून्य रिक्ति नीति के तहत एक साथ भर्तियां कर रही है। यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि स्वास्थ्य सेवाओं में कोई कमी न आए। मरीजों को उचित देखभाल मिल सके। सरकार का लक्ष्य राज्य की स्वास्थ्य प्रणाली को अधिक कुशल और जवाबदेह बनाना है।

नोटिस जारी किए गए थे और जवाब देने के लिए पर्याप्त समय दिया गया था। लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली, जिसके बाद बर्खास्तगी की कार्रवाई शुरू की गई।

प्रधानमंत्री मोदी ने निःस्वार्थ सेवा और करुणा का दिया संदेश

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने निःस्वार्थ सेवा, करुणा और मानवता के मूल्यों पर जोर देते हुए एक संस्कृत सुभाषित साझा किया है। उन्होंने कहा कि निःस्वार्थ भाव से किया गया कार्य ही सच्ची मानवता की पहचान है, जो न केवल व्यक्ति को आत्मिक संतोष देता है बल्कि समाज के कल्याण में भी अहम भूमिका निभाता है। प्रधानमंत्री ने आज सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि बिना किसी स्वार्थ के किए गए कर्म से भीतर खुशी मिलती है और यह समाज को भी बेहतर बनाता है। उन्होंने एक सुभाषित भी साझा किया इस सुभाषित का अर्थ है कि सभी प्राणियों के प्रति मन, वचन और कर्म से किसी प्रकार का द्वेष न रखना, सभी के प्रति दया और अनुग्रह का भाव रखना तथा दानशील होना ये गुण सर्वोत्तम आचरण माने जाते हैं।

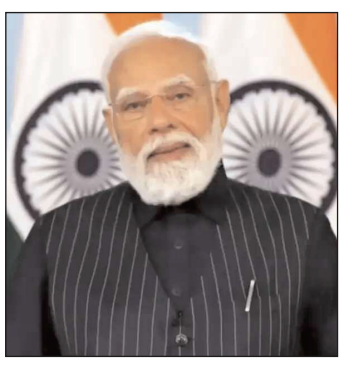

सुप्रीम कोर्ट की बड़ी टिप्पणी, कहा-

एजेंसी

अमरावती। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को एक बड़ा फैसला लिया। अदालत अब 20 मई को खनिज अधिकारों पर टैक्स लगाने से जुड़ी याचिकाओं पर सुनवाई करेगी। केंद्र सरकार ने कोर्ट को बताया कि इस मामले में उसकी क्यूरेटिव याचिका अभी लंबित है। यह पूरा मामला राज्यों की विधायी शक्ति और टैक्स वसूलने के अधिकार से जुड़ा है।

नौ जजों की पीठ का ऐतिहासिक फैसला

सितंबर 2024 में शीर्ष अदालत ने समीक्षा याचिकाओं को खारिज कर दिया था। इससे पहले 25 जुलाई 2024 को नौ जजों की बेंच ने बड़ा फैसला सुनाया था। अदालत ने 8:1 के बहुमत से कहा था कि खनिज अधिकारों पर टैक्स लगाने की शक्ति राज्यों के पास है। शीर्ष अदालत ने कहा कि केंद्र के पास संविधान की सूची-1 की प्रविष्टि 54 के तहत यह अधिकार नहीं है।

केंद्र की दलील और राज्यों का विरोध

सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने जस्टिस विक्रम नाथ की बेंच से सुनवाई टालने का अनुरोध किया। उन्होंने लंबित क्यूरेटिव याचिका का हवाला दिया। कुछ वकीलों ने इसे जुलाई तक टालने की मांग की। हालांकि, राज्यों के वकीलों ने इसका विरोध किया। उन्होंने कहा कि समीक्षा याचिकाएं पहले ही खारिज हो चुकी हैं। कुछ अपीलें तो 1999 और 2011 से लंबित हैं। बेंच ने सभी पक्षों को सुनने के बाद अगली तारीख 20 मई तय की।

14 अगस्त 2024 को सुप्रीम कोर्ट ने राज्यों को बड़ी राहत दी थी। खनिज संपन्न राज्यों को एक अप्रैल 2005 से बकाया रॉयल्टी वसूलने की अनुमति मिली। यह बकाया राशि हजारों करोड़ रुपये है। शीर्ष अदालत ने आदेश दिया कि यह भुगतान 1 अप्रैल 2026 से शुरू होगा। कंपनियां और केंद्र इसे 12 साल की किश्तों में चुकाएंगे। राहत की बात यह है कि 25 जुलाई 2024 से पहले के बकाये पर जुर्माना और ब्याज माफ कर दिया गया है।

खनिज टैक्स पर राज्यों का अधिकार, 20 मई को सुनवाई

दहेज हत्या मामला: सुप्रीम कोर्ट ने आरोपी पति की जमानत रद्द की, कहा- ऐसे अपराधों को हल्के में न लें अदालतें

सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश के एक दहेज हत्या मामले में आरोपी पति को इलाहाबाद हाईकोर्ट की ओर से दी गई जमानत रद्द कर दी है। न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति विजय बिश्नोई की पीठ ने मामले की सुनवाई करते हुए कहा कि महिलाओं के विरुद्ध होने वाले जघन्य अपराधों में जमानत देते समय अदालतों को अत्यंत संवेदनशील और सतर्क रहने की आवश्यकता है।

एक सप्ताह में आत्मसमर्पण का आदेश

शीर्ष अदालत ने मृतक महिला के पिता की अपील को स्वीकार करते हुए आरोपी पति को आदेश दिया है कि वह एक सप्ताह के भीतर जेल अधिकारियों के समक्ष आत्मसमर्पण करे। अदालत ने चेतावनी दी कि यदि वह निर्धारित समय में सरेंडर नहीं करता है, तो उसके खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

मोरबी में टूटी पुरानी परंपराएं: 6 बेटियों ने अपनी मां की अर्थी को दी आखिरी विदाई

महानगर मेट्रो ब्यूरो/पवन माकन

मोरबी। कहते हैं कि बेटी प्यार का सागर होती है, लेकिन आज मोरबी में इस परिभाषा में एक नया और शानदार अध्याय जुड़ गया है। मोरबी में आज एक ऐसी घटना हुई जिसने समाज की सदियों पुरानी मान्यताओं को तोड़ दिया और एक नई राह दिखाई। एक मां की मौत के बाद उसकी 6 बेटियां बेटों की पहचान बन गईं और अपनी मां की अर्थी को कंधा दिया। पुरानी परंपराओं पर हमला आमतौर पर समाज में यह मान्यता है कि दाह संस्कार या अर्थी को कंधा देने का काम सिर्फ पुरुष ही कर सकते हैं। लेकिन मोरबी के इस परिवार ने साबित कर दिया कि बच्चा तो बच्चा ही होता है, चाहे वह बेटा हो या बेटी। अपनी मां की मौत के बाद चचेरे भाई-बहनों या दूसरे पुरुष रिश्तेदारों का इंतजार करने के बजाय, 6 बहादुर बेटियां आगे आईं और अपनी मां के पार्थिव शरीर को श्मशान घाट तक ले गईं। अंतिम संस्कार के दौरान सबकी आंखें नम हो गईं जब इन 6 बेटियों ने अपनी मां की अर्थी को अपने कंधों पर उठाया, तो अंतिम संस्कार में शामिल हर कोई हैरान रह गया। बेटियों की यह हिम्मत और मां के प्रति उनकी अटूट भक्ति देखकर वहां मौजूद सभी लोगों की आंखें नम हो गईं। लोगों ने इन बेटियों के फैसले की खुले दिल से तारीफ की। बेटियों का सटीक संदेश इस मौके पर बेटियों ने कहा, 'जिस मां ने उंगली पकड़कर हमें चलना सिखाया, जो हमें इस दुनिया में लाई, उसे आखिरी विदाई देने का पहला हक हमारा है। हमें बेटा न होने का कोई अफसोस नहीं है, क्योंकि हम खुद अपनी मां के बेटे हैं। ' **गर्व का कदम:** पूरे गुजरात के लिए प्रेरणा मोरबी की यह घटना सिर्फ एक खबर नहीं है, बल्कि सामाजिक बदलाव की दिशा में एक बड़ा कदम है। यह उन लोगों के लिए आंखें खोलने वाली कहानी है जो बेटियों को 'विदेशी संपत्ति' मानते हैं। यह इस बात का जीता-जागता उदाहरण है कि समाज में बेटियों का स्थान कितना ऊंचा है और वे कैसे मुसीबत के समय परिवार के लिए मजबूत ढाल बन सकती हैं।

ऊंझा गंज बाजार में जीरे के दामों में बड़ा अंतर: तेजी खत्म, किसान और व्यापारी परेशान

महानगर मेट्रो ब्यूरो

ऊंझा। एशिया की सबसे बड़ी मसाला मंडी के तौर पर मशहूर ऊंझा गंज बाजार में इस समय जीरे के दाम को लेकर 'मंदी का ग्रहण' लगा हुआ है। जीरे का गढ़ माने जाने वाले ऊंझा में अकेले पिछले एक हफ्ते में ही दामों में आए बड़े अंतर से किसानों और व्यापारियों का आर्थिक संतुलन बिगड़ गया है। 17 से 18 हजार बोरियों की कमाई के बीच डिमांड न होने से जीरे के दाम सबसे निचले स्तर पर हैं।

कीमतों में भयानक गिरावट: 20 kg. 200 रुपये का नुकसान मार्केट यार्ड सूत्रों के मुताबिक, अकेले पिछले सात दिनों में जीरे के दाम में 150 से 200 रुपये प्रति 20 द्मद्द की कमी आई है। जीरा जो पहले 4000 से 4100 रुपये था, वह अब 3800 से 3900 रुपये पर आ गया है। इस मंदी के कारण किसानों को 200 से 250 रुपये का सीधा नुकसान उठाना पड़ रहा है। **कारोबार ठप:** 17 हजार बोरियों की इनकम के मुकाबले बिक्री आधी ऊंझा यार्ड को अभी हर दिन 17 हजार बोरियों से ज़्यादा की इनकम हो रही है, लेकिन उसके मुकाबले सिर्फ़ 7 से 8 हजार बोरियों का ही कारोबार हो रहा है। बाकी माल बिना बिके वेयरहाउस में पड़ा है। डिमांड कम होने के कारण यार्ड में वेयरहाउस जैसी स्थिति बन गई है। मंदी के कारण: युद्ध और कमज़ोर घरेलू डिमांड कारोबारियों के अनुसार, जीरे में मंदी के दो मुख्य कारण हैं: 1. ग्लोबल अशांति: इंटरनेशनल लेवल पर युद्ध के हालात के कारण एक्सपोर्ट लगभग बंद है। 2. लोकल डिमांड की कमी: अभी लोकल मार्केट में डिमांड नहीं होने की वजह से जीरे के दाम नहीं बढ़ रहे हैं। किसानों की परेशानी किसान अपनी मेहनत की फसल लेकर उम्मीद लेकर ऊंझा यार्ड आते हैं, लेकिन यहां के दाम देखकर उनकी आंखों में आंसू आ जाते हैं। जो किसान अच्छे दाम की उम्मीद में अपना माल लाए थे, वे अब बेबस हैं और उन्हें अपना माल कम दाम पर बेचना पड़ रहा है

गुजरात बनेगा ग्लोबल हब: मोदी कैबिनेट का बड़ा फैसला, 2 और सेमीकंडक्टर प्लांट को हरी झंडी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

गांधीनगर/दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय कैबिनेट ने तीन बड़े प्रोजेक्ट्स को मंजूरी दे दी है, जो गुजरात के विकास को रॉकेट बूस्ट देंगे। गुजरात अब न केवल भारत का बल्कि दुनिया का 'सेमीकंडक्टर हब' बनने की ओर मजबूत कदम बढ़ा रहा है। कैबिनेट ने राज्य में दो और नए सेमीकंडक्टर प्लांट और वाडिनार में एक मॉडर्न शिप रिपेयर फैसिलिटी बनाने की घोषणा की है।

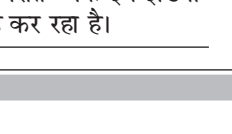

सेमीकंडक्टर में गुजरात का 'सुपर सिक्स'

पहले के माइक्रोन और टाटा प्रोजेक्ट्स के बाद, गुजरात अब दो और सेमीकंडक्टर प्लांट्स को मंजूरी देकर इस सेक्टर में मोनोपॉली बनाने जा रहा है।

• **प्लांट्स की खास बातें:** इन प्लांट्स में मॉडर्न चिप डिजाइनिंग और पैकेजिंग का काम किया जाएगा। • **इन्वेस्टमेंट:** इन प्रोजेक्ट्स में करोड़ों रुपये इन्वेस्ट किए जाएंगे, जिससे गुजरात की इकॉनमी नई ऊंचाइयों पर पहुंचेगी। • **रोज़गार:** इन प्लांट्स के शुरू होने से ढ्ढञ्ज और इंजीनियरिंग सेक्टर के हज़ारों युवाओं को घर बैठे हाई-प्रोफ़ाइल जॉब्स मिलेंगी। कैबिनेट ने देवभूमि द्वारका के वाडिनार में शिप रिपेयरिंग फैसिलिटी को भी मंजूरी दे दी है। 1. अब तक बड़े जहाजों को रिपेयर के लिए विदेश जाना पड़ता था, अब यह काम वाडिनार में होगा। 2. इस फैसिलिटी से ब्लू इकॉनमी को बढ़ावा मिलेगा और तटीय इलाकों का चौतरफा विकास होगा। 3. शिपिंग इंडस्ट्री में गुजरात का दबदबा और मज़बूत होगा। गुजरात को मोदी सरकार का बड़ा तोहफ़ा इस मंजूरी के बाद मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने प्रधानमंत्री का शुक्रिया अदा किया और कहा कि गुजरात 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' कैंपेन को लीड कर रहा है।

धानी मीडिया परिवार का गौरव, पवन माकन की सुपुत्रियों ने SSC परीक्षा में गाड़े सफलता के झंडे

मां सरबजीत माकन के संस्कार और मार्गदर्शन लाए रंग: धानी और साची की इस 'ट्विन सक्सेस' पर मीडिया जगत से मिल रही ढेरों बधाइयां, शानदार अंकों के साथ पाई सफलता

महानगर मेट्रो ब्यूरो

गांधीनगर/अहमदाबाद। कहते हैं कि 'पूत के पांव पालने में ही दिख जाते हैं', लेकिन जब बेटियां अपनी मेहनत से आसमान छू लें, तो पूरे समाज का सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है। कुछ ऐसा ही कर दिखाया है धानी मीडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर (स्ख्ड) श्री पवन माकन जी की सुपुत्रियों ने। हाल ही में घोषित हुए स्स्ट परीक्षा परिणामों में माकन परिवार की बेटियों ने अपनी मेधा और परिश्रम से वह मुकाम हासिल किया है, जिसकी गूंज आज पूरे मीडिया जगत और समाज में सुनाई दे रही है।

बेटियों ने बढ़ाया परिवार का मान: धानी और साची अंशी की शानदार जीत धानी मीडिया के स्ख्ड पवन माकन की सुपुत्री धानी माकन ने स्स्ट की परीक्षा में शानदार सफलता प्राप्त कर पिता के नाम को गौरवान्वित किया है। सफलता का यह सिलसिला यहीं नहीं थमा, पवन जी की दूसरी सुपुत्री साची अंशी माकन ने भी बेहतरीन अंक हासिल कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। इन दोनों बेटियों की इस 'ट्विन सक्सेस' ने साबित कर दिया है कि दृढ़ संकल्प और एकाग्रता हो, तो सफलता कदम चूमती है।

मां सरबजीत माकन की तपस्या का मिला फल

किसी भी बच्चे की सफलता के पीछे उसकी मां का त्याग सबसे बड़ा होता है। धानी और साची की इस सफलता की असली सूत्रधार उनकी माता श्रीमती सरबजीत माकन हैं। संतानों के उज्ज्वल भविष्य के लिए उन्होंने दिन-रात एक कर दिए। बच्चों को पढ़ाई के प्रति प्रेरित करने से लेकर उन्हें उचित मार्गदर्शन देने तक, सरबजीत जी का समर्पण आज परिणाम के रूप में सबके सामने है 'संतानों की सफलता, माता के संस्कारों और उसकी तपस्या का ही प्रतिबिंब होती है।

'बधाइयों का तांता: मीडिया जगत में खुशी की लहर माकन परिवार में आई इस दोहरी खुशी के बाद स्नेहीजनों, मित्रों और शुभचिंतकों की ओर से बधाइयों का तांता लगा हुआ है। ऐसी माताओं को समाज नमन करता है जो अपने बच्चों को उच्च शिक्षा और बेहतर संस्कारों के साथ राष्ट्र निर्माण के लिए तैयार कर रही हैं। 'महानगर मेट्रो' परिवार की ओर से धानी माकन, साची अंशी माकन और पूरे माकन परिवार को इस स्वर्णिम सफलता पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए अनंत शुभकामनाएं!

फुलवासन बाई यादव को अपहरणकर्ता ले जा रहे थे ट्रेफिक पुलिस की सूझबूझ से किडनैपर चढ़े पुलिस के हत्थे 5 आरोपी गिरफ्तार

महानगर मेट्रो ब्यूरो

राजनांदगांव। जिला पुलिस ने अपनी सक्रियता और सूझबूझ से एक बड़ी वारदात को होने से पहले ही टाल दिया है। पुलिस ने पद्मश्री सम्मानित श्रीमती फूलबासन बाई यादव के अपहरण के प्रयास को विफल करते हुए पांच आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। यह पूरी कार्रवाई चुस्त दुरुस्त पुलिसिंग का एक उत्कृष्ट उदाहरण बनकर सामने आई है।

चेकिंग के दौरान खुला राज

?घटना 5 मई 2026 की सुबह करीब 11:00 बजे की है। गडुला रोड क्षेत्र में ट्रैफिक इंस्पेक्टर नवरत्न कश्यप, आरक्षक कपिल श्रीवास्तव और सुखदेव साहू नियमित वाहन

चेकिंग कर रहे थे। इसी दौरान एक सफेद रंग की स्कॉर्पियो (नंबर CG08ँ/2334) को संदिग्ध मानकर रोका गया। मिर्गी का बहाना बनाकर पुलिस को बरगलाने की कोशिश वाहन की जांच के दौरान पीछे बैठी महिला (श्रीमती फूलबासन बाई) की स्थिति असामान्य दिखी। जब पुलिस ने पूछताछ की, तो वाहन में सवार व्यक्तियों ने उन्हें 'मिर्गी की मरीज' बताकर पुलिस को गुमराह करने की कोशिश की। हालांकि, पुलिस टीम की सतर्कता और महिला द्वारा दिए गए इशारे के बाद टीम ने तत्काल हस्तक्षेप किया और सभी को नीचे उतारकर पूछताछ की।

मिर्च स्प्रे और धमकी के दम पर किया था अपहरण

?पूछताछ में खुलासा हुआ कि आरोपियों ने श्रीमती फूलबासन बाई यादव को बहला-फुसलाकर वाहन में बैठाया था और जबरन ले जा रहे थे। आरोपियों ने उन्हें मिर्च स्प्रे दिखाकर जान से मारने की धमकी दी थी और उन पर महिला समूह व अन्य कार्यों को लेकर दबाव बना रहे थे। गिरफ्तार आरोपी और बरामदगी पुलिस ने इस मामले में धारा 140(1), 140(3), 351(3), और 61(2) BNS के तहत अपराध क्रमांक 182/2026 दर्ज किया है।

गिरफ्तार आरोपियों के नाम इस प्रकार हैं: खुशबू साहू (27 वर्ष) - बेमेतरा सलोनी महेश्वरी - बेमेतरा दिनेश बंजारे (35 वर्ष) - बेमेतरा गोपाल खेलवार (25 वर्ष) - दुर्ग चिनक राम साहू (38 वर्ष) - बेमेतरा पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से घटना में प्रयुक्त स्कॉर्पियो वाहन, मोबाइल फोन और मिर्च स्प्रे बरामद किया है। पुलिस टीम को मिलेगा पुरस्कारपुलिस अधीक्षक सुश्री अंकिता शर्मा के निर्देशन मार्गदर्शन में हुई इस त्वरित कार्रवाई की चहुंओर प्रशंसा हो रही है। महानिरीक्षक राजनांदगांव बालाजी राव और एसपी अंकिता शर्मा ने इस साहसी कार्य के लिए पुलिस टीम को उचित पुरस्कार देने की घोषणा की है।

बाइट एसपी अंकिता शर्मा राजनांदगांव

बाल रत्न मंच सेवा समिति की अनूठी पहल: 108वें मंगलवार को हनुमान जी के चरणों में समर्पित हुई भक्ति की 'माला'

महानगर मेट्रो ब्यूरो

बाल रत्न मंच सेवा समिति के सेवाभावी राहुल अग्रवाल संदेश जैन मयंक शर्मा, रितेश यादव सौरभ खंडेलवाल ने बताया कि शहर की सेवाभावी संस्था बाल रत्न मंच सेवा समिति द्वारा विगत अनेक वर्षों से सेवा कार्य संस्था द्वारा किए जा रहे हैं सनातन संस्कृति एवं धार्मिक आयोजन के माध्यम से बाल रत्न मंच सेवा समिति द्वारा संचालित प्रत्येक मंगलवार को सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ का आयोजन महालक्ष्मी मंदिर परिसर हमाल पारा में आयोजन के प्रभारी मनीष यादव ,महेश शर्मा, कैलाश शर्मा की भक्ति के समर्पण भाव के साथ छोटे-छोटे नन्हे बच्चों युवा एवं माता बहनों की उपस्थिति में प्रत्येक मंगलवार रात्रि 8:30 किया गया आज हनुमान चालीसा पाठ का 108 वा मोती पिरोकर एक माला हनुमान जी के श्री चरणों में समर्पित की गई इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य सनातन एकता को मजबूत करना एवं धर्म के प्रति लोगों को जागृत करना व सनातन संस्कृति के ज्ञानवर्धक धार्मिक प्रश्नोत्तरी के माध्यम से प्रत्येक मंगलवार बच्चों को संस्कारवान बनाने के लिए पहल की गई जिसमें बच्चों ने अपनी उपस्थिति प्रत्येक मंगलवार उत्साह पूर्वक प्रदान कर सहभागिता निभाते हुए भक्ति का समर्पण भाव प्रस्तुत किया। इस अवसर पर उन्हें प्रत्येक मंगलवार उपहार भी दिए गए। हनुमान चालीसा पाठ के विराम के अवसर पर हनुमान जी को प्रिय लड्डू का भोग लगाकर महा आरती की गई एवं भंडारा महाप्रसाद जी के रूप में मुरमुरे की भेल प्रसाद का वितरण किया गया गोविंद जोशी , लोकेश अग्रवाल, अरविंद गुप्ता , पप्पू कन्हैया, इंडिया नागवंशी, आरती गुप्ता ,प्रतिभा खंडेलवाल , सनम राजपूत , मंजू चौरसिया रोशनी नागवंशी , जय श्री कन्हैया, प्रीति गुप्ता, रोमा नागवंशी एवं अन्य छोटे-छोटे नन्हे बच्चे बड़ी संख्या में उपस्थित रहे सभी ने सामूहिक स्वर में जय श्री राम एवं हनुमान जी के जय घोष के साथ विराम हुआ 1 उपरोक्त जानकारी बाल रत्न मंच सेवा समिति के सेवा भावी सेवक सौरभ खंडेलवाल ने दी

सुप्रीम कोर्ट की अनुराग ठाकुर और परवेश वर्मा को क्लीन चिट: क्या 'गोली मारो...' के नारे हिंसा भड़काने के लिए काफ़ी नहीं हैं?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में 29 अप्रैल 2026 का दिन कानूनी जानकारों और आम जनता के लिए चर्चा का विषय बन गया है। सुप्रीम कोर्ट ने 2020 के एंटी-CAA आंदोलन के दौरान BJP नेता अनुराग ठाकुर और परवेश वर्मा के विवादित भाषणों के मामले में FIR दर्ज करने से मना कर दिया है। जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की बेंच ने हाई कोर्ट के फ़ैसले को सही ठहराते हुए जो तर्क दिए, उन्हें सुनकर आम नागरिक के मन में बस एक ही सवाल उठता है - यह इंसाफ़ है या सिर्फ़ टेक्निकल दिक्कतों का ड्रामा? कोर्ट ने साफ़ किया कि 'देश के गद्दारों को, गोली मारो...' जैसे नारे किसी खास कम्युनिटी के खिलाफ़ नहीं थे और रिकॉर्ड में ऐसा कोई सीधा सबूत नहीं है जिससे पता चले कि इससे हिंसा भड़की हो। कोर्ट ने यह भी कहा कि हेट स्पीच संवैधानिक मूल्यों के खिलाफ़ है, लेकिन इस मामले में कानूनी कार्रवाई के लिए सबूतों की कमी है। इसके अलावा, उसने CrPC के सेक्शन 196 का हवाला दिया और कहा कि किसी सरकारी कर्मचारी के खिलाफ़ केस चलाने के लिए सरकार से पहले मंजूरी लेना ज़रूरी है।

महानगर मेट्रो का सवाल: क्या आम नागरिक के लिए भी यही कानून है? यहां सबसे बड़ा और ज़रूरी सवाल यह है कि अगर यही नारे किसी विपक्षी नेता या आम एक्टिविस्ट ने लगाए होते, तो क्या पुलिस इतनी नरमी दिखाती? क्या पुलिस तब भी FIR दर्ज करने के लिए 'सीधे सबूत' और 'सरकार से पहले मंजूरी' का इंतज़ार करती? इतिहास गवाह है कि कई एक्टिविस्ट को सिर्फ़ सोशल मीडिया पोस्ट या असहमति की आवाज़ उठाने के लिए UAPA जैसे कड़े कानूनों के तहत जेल भेजा गया है। तो फिर रूलिंग पार्टी के नेताओं के लिए इतनी कानूनी देखभाल क्यों ज़हरीली भाषा: लोकतंत्र की नींव में एक कांटा भले ही कोर्ट ने टेक्निकली इसे जुर्म न माना हो, लेकिन क्या परवेश वर्मा का 'पूरा बॉयकॉट' का आह्वान समाज को बांटने वाला नहीं है? क्या ऐसे शब्द समाज में डर और नफ़रत का माहौल नहीं बनाते? नफ़रत हमेशा तलवार लेकर नहीं आती, कभी-कभी यह धीरे-धीरे शब्दों के रूप में समाज के मन में घुस जाती है और फिर एक बड़ी त्रासदी का कारण बनती है। लोकतंत्र की पतली लाइन बोलने की आज़ादी यकीनन लोकतंत्र की आत्मा है, लेकिन जब इस आज़ादी का इस्तेमाल दूसरों के वजूद को नकारने या डराने के लिए किया जाता है, तो यह खतरनाक हो जाती है। अगर सत्ता की नज़र में हेट स्पीच कानून बदलते रहते हैं, तो न्यायपालिका पर जनता का भरोसा कमज़ोर होता है। सिर्फ़ किताबों में कानून का बराबर होना ही काफ़ी नहीं है, उसका लागू होना भी बराबर होना चाहिए।

मेडिकल रिपोर्ट के बाद चांदखेड़ा 'खीरा केस' में नया मोड़: डॉक्टरों के खुलासे से सिस्टम में हलचल

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। अहमदाबाद के चांदखेड़ा इलाके में हलचल मचाने वाले 'खीरा केस' में हर दिन नए खुलासे हो रहे हैं। मासूम लड़कियों से जुड़ी इस कथित घटना में अब मेडिकल रिपोर्ट आ गई हैं। इन रिपोर्ट को देखने के बाद डॉक्टरों ने जो बातें कहीं हैं, उनसे केस की दिशा बदल सकती है।

मेडिकल रिपोर्ट में क्या पता चला?

लड़कियों के शरीर की जांच करने वाले एक्सपर्ट डॉक्टरों के मुताबिक, शुरुआती रिपोर्ट में कुछ गंभीर बातें दर्ज की गई हैं। डॉक्टर ने साफ किया है कि:

• लड़कियों के शरीर पर मिले निशान और उनकी मेडिकल कंडीशन एक खास तरफ इशारा करती हैं।

• रिपोर्ट में कुछ ऐसी बातें हैं जो पुलिस कंप्लेंट में दर्ज बातों को सपोर्ट करती हैं।

• लड़कियों की मेंटल हालत और उनके व्यवहार को देखते हुए साइकोलॉजिकल काउंसलिंग की भी सलाह दी गई है। पुलिस की

जांच तेज

मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर चांदखेड़ा पुलिस अब इस केस में और सख्त धाराएं जोड़ सकती है। जांच अधिकारियों के मुताबिक, डॉक्टरों की राय इस केस में सबसे अहम सबूत साबित होगी। आरोपियों के खिलाफ सबूत मजबूत करने के लिए FSL की भी मदद ली जा रही है।

स्थानीय लोगों में गुस्सा: सख्त सजा की मांग

जैसे-जैसे इस केस में डिटेल्स सामने आ रही हैं, स्थानीय लोगों में काफी गुस्सा है। लोगों की बस यही मांग है कि मासूम बच्चियों के साथ ऐसा करने वाले के खिलाफ सख्त कार्रवाई हो ताकि भविष्य में कोई ऐसा करने की हिम्मत न करे।

हमारा अखबार बच्चियों की सुरक्षा और न्याय के लिए इस केस पर लगातार नजर रख रहा है। यह देखना अहम होगा कि मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर आगे की कानूनी प्रक्रिया कैसे आगे बढ़ती है।

स्पेशल रिपोर्ट: EVM हैक नहीं हो सकतीं, लेकिन क्या उन्हें प्रोग्राम किया जा सकता है? जानिए EVM के पीछे छिपा साइंस!

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। जब चुनाव आते हैं, तो EVM को लेकर सवाल उठते हैं और इलेक्शन कमीशन एक ही जवाब देता है: 'EVM सिंपल कैलकुलेटर हैं, वे इंटरनेट से कनेक्टेड नहीं हैं, इसलिए उन्हें हैक नहीं किया जा सकता।' लेकिन, क्या सिक्योरिटी सच में इतनी मज़बूत है? आज 'पक्को गुजरात' आपको EVM की अंदर की दुनिया को प्योर टेक्निकल लॉजिक और मैथ से समझाएगा, न कि किसी गॉसिप या पॉलिटिकल बकवास से।

1. **OTP चिप:** सिक्योरिटी या लूपहोल?

इलेक्शन कमीशन का कहना है कि EVM में एक 'वन टाइम प्रोग्रामेबल' चिप होती है, जिसे एक बार लिखने के बाद बदला नहीं जा सकता। यह सच है, लेकिन आधा ही। जिसे IT की भाषा में 'सप्लाई चेन अटैक' कहते हैं, उसके मुताबिक, अगर चिप बनाते समय फैक्ट्री प्रोग्रामर ओरिजिनल कोड में कोई 'मैलिशियस कोड' डाल देता है, तो यही OTP फीचर उस गड़बड़ी को हमेशा के लिए लॉक कर देगा! क्योंकि सोर्स कोड सीक्रेट होता है, इसलिए कोई बाहरी इसे चेक नहीं कर सकता।

2.**'अगर-तो' लॉजिक:** मॉक पोल की सीमाएं चुनाव से पहले, 'मॉक पोल' कैंडिडेट के एजेंट की मौजूदगी में किए जाते हैं। लेकिन कंप्यूटर प्रोग्रामिंग में इंटरनल काउंटर नाम की एक चीज़ होती है। मशीन आसानी से समझ सकती है कि पहले 200-500 वोट (मॉक पोल) में सही रिज़ल्ट दिखना चाहिए, लेकिन जब वोटिंग

बढ़कर 1000 हो जाए, तो असली गेम शुरू होना चाहिए!

• **उदाहरण:** अगर मशीन में ऐसा कोड है कि हर 5 वोट में से 1 किसी खास सिंबल को जाता है, तो वह मॉक पोल में नहीं पकड़ा जाएगा क्योंकि वोटों की संख्या तब कम होगी।

3. **कैलकुलेटर का उदाहरण:** 'हिडन ट्रिगर' का गेम

मान लीजिए एक कैलकुलेटर में एक हिडन कोड है जो सही जवाब (2+2=4) देता है, जब तक आप नॉर्मल कैलकुलेशन करते हैं। लेकिन अगर कोई खास 'सीक्रेट की' (जैसे 999+) दबाई जाए, तो मशीन 'मैनिपुलेशन मोड' में चली जाती है और रिज़ल्ट बदलने लगती है। श्वङ्कारू में भी, बटनों के एक खास कॉम्बिनेशन को दबाने से ऐसा 'ट्रिगर' एक्टिवेट हो सकता है, जो नॉर्मल चेकिंग में कभी पकड़ा नहीं जाता।

4. VVPATÑ क्या जो दिखता है, वही सच है?

VVPAT में कांच के पीछे 7 सेकंड के लिए जो पर्ची दिखती है, वह सिर्फ़ देखने का दिखावा है, वह 'क्रिप्टोग्राफ़िक वेरिफ़िकेशन' नहीं है। जब तक वोटर खुद कागज़ लेकर बॉक्स में नहीं डालता, तब तक 100' गारंटी नहीं है कि मशीन ने जो प्रिंट किया है, वह असल में बॉक्स में गिरा है। 5. **मैथ्स का मैथ्स:** क्या रैंडम चेकिंग में चोरी पकड़ी जा सकती है?

अगर 100 में से सिर्फ़ 5 बूथ पर मशीनें खराब हैं और जीत-हार का अंतर सिर्फ़ 2' से 3' है, तो रैंडम VVPAT ऑडिट में इस चोरी के पकड़े जाने की संभावना न के बराबर है। डेमोक्रेसी में लॉजिक सबसे बड़ी ताकत है। अगर सिस्टम का सोर्स कोड सीक्रेट है और 100' फिजिकल ऑडिट नहीं किया गया है, तो इसे 'हैक-प्रूफ' कहना साइंस और लॉजिक के हिसाब से अधूरा है। मशीन स्क्रीन पर दिख रहे नंबरों पर आंख मूंदकर भरोसा करने के बजाय 100' VVPAT ऑडिट की मांग साइंटिफिक रूप से सही है।

महानगर मेट्रो
www.mahanagarmetro.com
अहमदाबाद, (गुरुवार)
07 मई 2026

बनास की 'बेटी' के अपमान पर पालनपुर में हंगामा

जगदीश विश्वकर्मा के बयान के खिलाफ भारी भीड़ जमा, कलेक्टर ऑफिस में विरोध की गूंज!

महानगर मेट्रो ब्यूरो

पालनपुर। बनासकांठा की राजनीति की एक तस्वीर सामने आई है जो इस समय हद पार कर रही है। BJP के प्रदेश अध्यक्ष (संगठन/मंत्री) जगदीश विश्वकर्मा द्वारा बनासकांठा की लोकप्रिय MP गेनीबेन ठाकोर के बारे में की गई भद्दी और अपमानजनक टिप्पणी ने बड़ा मोड़ ले लिया है। इस टिप्पणी के विरोध में आज पालनपुर की सड़कों पर भारी भीड़ जमा हो गई और BJP के खिलाफ जमकर नारे लगाए गए।

पूरे समाज से आवाज़ उठी: 'यह गेनीबेन का नहीं, बल्कि बनास की नारी शक्ति का अपमान है 'पालनपुर में हुई इस विरोध रैली में न सिर्फ कांग्रेस कार्यकर्ता, बल्कि पूरे समाज के नेता, बड़ी संख्या में युवा और महिलाएं शामिल हुए। रैली में शामिल लोगों की एक ही आवाज़ थी, 'पॉलिटिकल मतभेद हो सकते हैं, लेकिन एक महिला जनप्रतिनिधि के लिए इतनी घटिया भाषा

का इस्तेमाल करना गुजरात का कल्चर नहीं है। '

कलेक्टर ऑफिस में पिटीशनः सख्त एक्शन की मांग

एक बड़ी रैली की शक्ल में कलेक्टर ऑफिस पहुंचे नेताओं ने पिटीशन देकर जगदीश विश्वकर्मा के खिलाफ सख्त लीगल एक्शन की मांग की है। प्रदर्शनकारियों ने चेतावनी दी है कि अगर पब्लिक लाइफ में रहने वाले नेताओं ने अपनी ज़बान पर कंट्रोल नहीं रखा तो आने वाले दिनों में यह आंदोलन और भी उग्र होगा।

पॉलिटिकल गर्मी: क्या BJP बैकफुट पर आएगी? गेनिबेन ठाकोर बनासकांठा की जुझारू नेता मानी जाती हैं और उनकी पॉपुलैरिटी आखिरी आदमी तक है। फिर BJP नेता का यह बयान खुद BJP के लिए गले की हड्डी बन सकता है। कांग्रेस ने अब इस मुद्दे को महिलाओं की इज्ज़त से जोड़कर पूरे राज्य में उठाने की तैयारी कर ली है।

जनता जो सवाल पूछ रही है:

1. सत्ता का नशा या कल्चर की कमी? क्या सत्ता में होने का मतलब यह है कि आप किसी भी महिला के बारे में कुछ भी कह सकते हैं?

2. BJP हाईकमान चुप क्यों है? महिला सशक्तिकरण की बात करने वाली पार्टी अपने नेता के अश्लील कमेंट्स पर कब एक्शन लेगी?

3. क्या बनास के लोग इसका जवाब देंगे? डेमोक्रेसी में सबसे बड़ा जवाब बैलेट बॉक्स है, क्या इससे BJP को भारी नुकसान होगा?

नज़रिया: पॉलिटिक्स में आलोचना और कमेंट्स होने चाहिए, लेकिन यह मुद्दे पर आधारित होने चाहिए,

प्रतिभा का परचमः तखतगढ़ की बेटी राशी जैन ने आईसीएसई बोर्ड में गाड़े सफलता के झंडे

महानगर मेट्रो ब्यूरो

सूरत। कहा जाता है कि सूरत म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन देश की सबसे अमीर म्युनिसिपैलिटी में से एक है। हर साल 11,000 करोड़ रुपये का मामूली बजट पेश किया जाता है। लेकिन क्या ये आंकड़े सिर्फ कागजों पर चमकने के लिए हैं? पक्को गुजरात की ग्राउंड रिपोर्ट में जो सच सामने आया है, वह सूरत के टैक्सपेयर्स के होश उड़ाने के लिए काफी है। लोगों के खून-पसीने, टैक्स के पैसे से बने करोड़ों के प्रोजेक्ट आज मेंटेनेंस के अभाव में धूल फांक रहे हैं। **पाल एक्वेरियमः** एक शानदार प्रोजेक्ट अब खंडहर में जिस एक्वेरियम को देखने के लिए पूरे साउथ गुजरात से लोग आते थे, वह पाल एक्वेरियम आज खंडहर में है। करोड़ों की लागत से लाई गई मछलियां और टेक्नोलॉजी खराब हालत में हैं। म्युनिसिपैलिटी के पास नए प्रोजेक्ट्स का फाउंडेशन स्टोन रखने के लिए पैसा है, लेकिन चल रहे प्रोजेक्ट्स को मेंटेन करने की इच्छाशक्ति नहीं है। **फ्लोरल गार्डन और साइंस सेंटरः** सिर्फ डेकोरेटिव सजावट? विदेशी धरती पर गार्डन का सपना लेकर बनाया गया फ्लोरल गार्डन आज बंद है। पौधे सूख रहे हैं और स्ट्रक्चर टूट रहा है। यही हाल साइंस सेंटर का भी है, जहां एग्जीबिशन के नाम पर गंदगी है। बच्चों को साइंस समझाने के लिए बनाया गया सिस्टम 'कोमा' में चला गया लगता है।

सवाल जनता का है... जवाब कौन देगा?

1. जब कोई प्रोजेक्ट बनता है, तो उसके मेंटेनेंस की प्लानिंग क्यों नहीं होती? 2. क्या अधिकारियों और नेताओं की दिलचस्पी सिर्फ कॉन्ट्रैक्ट देने और कमीशन लेने में है? 3. अगर 11 हजार करोड़ का बजट खर्च करने के बाद भी जनता को सुविधाएं नहीं मिल रही हैं, तो यह पैसा कहां जाता है? पाको गुजरात का सीधा हमलाः डेवलपमेंट सिर्फ सड़क और फ्लाईओवर के एडवर्टाइजमेंट से नहीं होता। डेवलपमेंट का मतलब है जनता के पैसे से बनी प्रॉपर्टी को बचाना। सूरत म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के हुक्मरानों को समझना होगा कि यह टैक्सपेयर का पैसा है,

सनसनीखेजः पत्थर दिल वाला पति अपनी पत्नी की लाश पर पार्टी करता रहा, एक 'गलती' ने पाप का घड़ा खोल दिया!

महानगर मेट्रो ब्यूरो

बेंगलुरु। आपने क्राइम की दुनिया में कई कहानियां सुनी होंगी, लेकिन स्वामी श्रद्धानंद (असली नामः मुरली मनोहर मिश्रा) नाम के इस आदमी ने जो बेरहमी की, उसे सुनकर पत्थर दिल आदमी की भी रूह कांप जाए। जिस पत्नी ने उस पर भरोसा करके करोड़ों की प्रॉपर्टी सौंपी, उसी पत्नी को आंगन में जिंदा दफना दिया और यह कातिल महीनों तक उसकी कब्र पर पार्टी करता रहा!

प्यार, दौलत और फिर धोखा

घटना की डिटेल्स ये हैं कि श्रद्धानंद ने शकरेह खलीली से शादी की थी, जो बेंगलुरु के शाही परिवार से ताल्लुक रखती थी। शकरेह के पास करोड़ों की प्रॉपर्टी थी, जिसे हड़पने के लिए श्रद्धानंद ने साजिश रची थी। 1991 में उसने अपनी पत्नी को ड्रग्स देकर बेहोश कर दिया और आंगन में खोदे गए गहरे में ज़िंदा दफ़ना दिया।

कब्र पर डांस और पार्टियां

इस मर्डर के बाद श्रद्धानंद इतना बेफ़िक्र हो गया कि उसने उस आंगन में पक्का फ़्लोरिंग करवा दिया जहाँ उसकी पत्नी दफ़नाई गई थी। उसी जगह पर वह अपने करीबी दोस्तों और मेहमानों के साथ पार्टी करता था, शराब की पार्टियां करता था और देर रात तक डांस करता था। यह आदमी उस ज़मीन पर बेशर्मी से डांस करता था जहाँ उसकी पत्नी आखिरी सांस ले रही थी। एक 'गलती' और पुलिस की सख्ती श्रद्धानंद ने दुनिया को बताया था कि शकरेह हैदराबाद चली गई है।

पोरबंदर में इंसानियत शर्मसारः 12 साल के लड़के ने 4 साल की मासूम बच्ची से रेप किया

महानगर मेट्रो ब्यूरो

पोरबंदर। गांधीभूमि पोरबंदर से एक ऐसी घटना सामने आई है जिसे सुनकर किसी का भी दिल पिघल जाएगा। पड़ोस में रहने वाले 12 साल के लड़के ने डेढ़ महीने के छोटे से समय में 4 साल की मासूम बच्ची से तीन बार रेप किया, जिससे हड़कंप मच गया है। यह पूरा मामला तब सामने आया जब मकान बेचने के झगड़े में पुलिस ने दखल दिया।

क्या है पूरा मामला?

मिली जानकारी के मुताबिक, पोरबंदर में पड़ोस में रहने वाले 12 साल के लड़के ने 4 साल की बच्ची को अपनी हवस का शिकार बनाया। जब लड़की के माता-पिता को इस बारे में पता चला,

तो उन्होंने समाज की इज़्ज़त और आस-पड़ोस के रिश्तों को ध्यान में रखते हुए किशोरी के माता-पिता के सामने यह मामला रखा। डरी हुई किशोरी के माता-पिता ने तुरंत घर खाली कर दिया और कहीं और रहने चले गए।

घर बेचने को लेकर झगड़ा हुआ

किशोरी के माता-पिता घर खाली करने के बाद घर बेचना चाहते थे। घर बेचने की प्रक्रिया के दौरान किसी बात पर झगड़ा होने के कारण पुलिस को सूचित किया गया। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच की और पूरी जांच की, तो पता चला कि इस बेहद गंभीर अपराध को छिपाया गया था। पुलिस ने पूरी सच्चाई जानने के बाद कानूनी कार्रवाई की है।

कानूनी कार्रवाइ पुलिस ने 4 साल की बच्ची के साथ हुई इस दुखद घटना के संबंध में POCSO एक्ट और अन्य गंभीर धाराओं के तहत शिकायत दर्ज की है। चूंकि आरोपी नाबालिग है, इसलिए कानूनी प्रक्रिया अपनाई गई है, और लड़की के माता-पिता से बयान लेने की भी कोशिश की गई है।

समाज के लिए रेड लाइट जैसा मामला

यह मामला समाज के लिए आंखें खोलने वाला है। अब समय आ गया है कि 12 साल के टीनेजर की ऐसी बिगड़ी हुई सोच के पीछे के कारणों और सोशल मीडिया या दूसरे मीडिया के बच्चों पर पड़ने वाले बुरे असर पर सोचा जाए। इसके अलावा, ऐसे गंभीर अपराधों को छिपाना भी कानून के तहत जुर्म बन जाता है।

कोलकाता में 'बुलडोजर' पॉलिटिक्सः न्यू मार्केट में ञ्जस्ष्ट ऑफिस और मीट की दुकान को जमींदोज कर दिया गया!

महानगर मेट्रो ब्यूरो

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की पॉलिटिक्स में इस समय उथल-पुथल मची हुई है। कोलकाता के दिल 'न्यू मार्केट' इलाके में अचानक बुलडोजर गरजे और तृणमूल कांग्रेस ऑफिस समेत कई मीट की दुकानों को पलक झपकते ही गिरा दिया गया। इस घटना के बाद पॉलिटिकल आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू हो गया है और इस बात की पूरी संभावना है कि यह मामला सुप्रीम कोर्ट या कानून के पास जाएगा।

BJP पर गंभीर आरोपः 'संविधान को खत्म कर दिया गया? ' इस तोड़फोड़ के बाद ञ्जस्ष्ट समर्थकों और स्थानीय लोगों में काफी गुस्सा है। विपक्ष और पीड़ितों का सीधा आरोप है कि, 'यह कोई लीगल कार्रवाई नहीं है, बल्कि BJP के इशारे पर एक पॉलिटिकल साज़िश है।' यह भी आरोप

है कि बिना किसी पहले से नोटिस दिए और लीगल प्रोसेस को फॉलो किए बिना बुलडोजर चलाया गया है।

यह डेमोक्रेसी है या बदले की पॉलिटिक्स?

बंगाल की पॉलिटिक्स में हिंसा और तोड़-फोड़ कोई नई बात नहीं है, लेकिन जब पॉलिटिकल पार्टियों के ऑफिस पर बुलडोजर चलने लगते हैं, तो सवाल उठता है कि देश में कानून का राज है या यह बुलडोजर का मामला है • **सवाल 1:** क्या बुलडोजर चलाने से पहले कोर्ट के ऑर्डर या म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के नियमों का पालन किया गया था?

• **सवाल 2:** क्या यह एक्शन किसी खास आइडियोलॉजी को टारगेट करने के लिए लिया गया था? हिसाब तो देना ही होगा! एक तरफ जहां BJP शासित राज्यों में बुलडोजर मॉडल पर चर्चा हो रही है, वहीं बंगाल जैसे राज्य में ऐसा कदम आने वाले चुनावों से पहले एक बड़े तूफान का इशारा करता है। अगर यह तोड़-फोड़ गैर-कानूनी साबित होती है, तो इसके पीछे जिम्मेदार अधिकारियों और नेताओं को जनता की अदालत में जवाब देना होगा। गुजरात से एक सवालः डेवलपमेंट के नाम पर बुलडोजर चलाने और पॉलिटिकल बदले की भावना से बुलडोजर चलाने में बहुत पतली लाइन होती है। क्या कोलकाता की यह घटना सिर्फ प्रेशर कम करने का ऑपरेशन है या विपक्ष की आवाज दबाने की कोशिश है?

सूरत के वराछा में खून के धंधे का भंडाफोड़ः गैर-कानूनी अबॉर्शन के बड़े रैकेट का भंडाफोड़, 'पापों की लाइन' में कौन-कौन ?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

सूरत। डायमंड सिटी सूरत एक बार फिर बदनाम हुई है। हेल्थ डिपार्टमेंट और पुलिस ने सूरत के वराछा इलाके में जॉइंट रेड मारकर गैर-कानूनी अबॉर्शन के एक बड़े नेटवर्क का भंडाफोड़ किया है। पैसे के लालच में मासूमों की जान लेने का यह सिस्टमैटिक पाप कब से चल रहा था, यह जानकर आप भी चौंक जाएंगे।

ऑपरेशन 'वराछा': पाप के अड्डे पर पुलिस का प्रहार

जब टीम ने सूचना के आधार पर वराछा के एक रिहायशी इलाके में रेड मारी, तो वहां गैर-कानूनी अबॉर्शन किट, बैन दवाएं और इक्विपमेंट मिले। बिना किसी डिग्री या पहचान के, गली-मोहल्लों में चल रही इस 'मौत की फैक्ट्री' में कई महिलाओं की जान खतरे में डाली जा रही थी।

सवाल जो सीधे सिस्टम पर हमला करते हैं:

1. प्रशासन की आंखों के सामने इतना बड़ा रैकेट कैसे चल रहा था? क्या लोकल प्रशासन सो रहा था या 'हफ्ता' की मिठास इस पाप को ढक रही थी?

2. सिर्फ़ एजेंट या डॉक्टर भी शामिल? पुलिस जांच में बड़ा खुलासा होने की उम्मीद है कि इसमें किसी बड़े हॉस्पिटल के डॉक्टर या लैब के लोगों की मिलीभगत है या नहीं।

3. गर्भ में बेटियों को मारने की यह बुराई कब रुकेगी? टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल जान बचाने के लिए होना चाहिए, इसका इस्तेमाल प्रेग्नेंसी टेस्टिंग और अबॉर्शन के लिए क्यों किया जा रहा है?

'पाको गुजरात' की सूरत के लोगों को चेतावनी

यह सिर्फ़ एक रैकेट नहीं है, बल्कि समाज की बिगड़ी हुई सोच को दिखाता है। लालची लोग चंद रुपयों के लिए किसी की जान से खेलते हैं। अगर आपको भी अपने आस-पास ऐसी कोई संदिग्ध एक्टिविटी दिखे, तो तुरंत आवाज़ उठाएं। आपकी एक सावधानी किसी बेगुनाह की जान बचा सकती है। पुलिस ने अब संदिग्धों को हिरासत में ले लिया है

अब सख्त कार्रवाई की उम्मीद

और उनसे जुड़ी चीज़ें ज़ब्त कर ली हैं। लेकिन सवाल यह है कि क्या ये लोग जेल जाएंगे या राजनीतिक तरीकों से छूट जाएंगे? 'पाको गुजरात' इस केस पर अपडेट देता रहेगा।

जिला पंचायत सदस्य विभा साहू ने उठाई आवाज, कंपनियों को दी चेतावनी प्रदूषण रोको, वरना होगी उच्च स्तरीय शिकायत

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। देश की सबसे प्रतिष्ठित मानी जाने वाली PSC (यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन) की परीक्षाओं में अब बड़ा उलटफेर हो सकता है। अभी तक रिजर्वेशन का फायदा उठाने के लिए सिर्फ मेन कैटेगरी बतानी पड़ती थी, लेकिन अब यह सिफारिश की गई है कि कैंडिडेट्स को अपनी 'उप-जाति' भी बतानी होगी। इस सिफारिश ने देश के एजुकेशनल और पॉलिटिकल सर्कल में एक नई बहस छेड़ दी है।

यह मांग क्यों उठी? इसके पीछे क्या लॉजिक है? इस सिफारिश के पीछे मुख्य कारण यह है कि रिजर्वेशन का फायदा आखिरी आदमी तक पहुंचे।

• **असमान बंटवाराः** आरोप है कि SC-ST और OBC कैटेगरी में भी सालों से कुछ खास जातियां ही बाहर हैं, जबकि इसी कैटेगरी की दूसरी छोटी और पिछड़ी उपजातियां अभी भी पीछे हैं। ज़ डेटा एनालिसिसः अगर सब-कास्ट का ज़िक्र होगा, तो सरकार के पास सही आंकड़े होंगे

कि किस जाति से कितने ऑफिसर बन रहे हैं और किसे सच में मदद की ज़रूरत है। सुप्रीम कोर्ट का हालिया फ़ैसला और कनेक्शन याद रखें कि कुछ समय पहले सुप्रीम कोर्ट ने राज्यों को SC-ST रिज़र्वेशन में 'सब-क्लासिफ़िकेशन' करने की भी इजाज़त दी थी। PSC में इस सिफारिश को उसी दिशा में एक कदम माना जा रहा है। जिसका मकसद 'पिछड़ों में सबसे पिछड़े' को न्याय दिलाना है।

मन में यह सवाल उठता है...

1. क्या इससे जातिवाद बढ़ेगा? आलोचकों का मानना है कि फ़ॉर्म में सब-कास्ट पूछने से जातिवाद की जड़ें और गहरी होंगी।

2. **क्या सिस्टम और मुश्किल हो जाएगा?** हज़ारों सब-कास्ट के सर्टिफ़िकेट वेरिफ़ाई करना UPSC के लिए एक बड़ी चुनौती हो सकती है।

3. **पॉलिटिकल मैथः** क्या इस सिफारिश के पीछे जाति-आधारित वोट बैंक की पॉलिटिक्स ज़िम्मेदार है? अगर यह सिफारिश लागू होती है, तो यह **UPSC** के इतिहास का सबसे बड़ा एडमिनिस्ट्रेटिव बदलाव होगा। एक तरफ यह वंचितों को अधिकार देने की बात करता है, दूसरी तरफ यह मेरिट और जाति के समीकरणों को और उलझा सकता है। सवाल यह है कि क्या फॉर्म में सिर्फ उपजाति लिखने से उस समुदाय को न्याय मिलेगा जो सालों से पीछे छूट गया है?

जन आक्रोश वाली संघर्ष समिति ने शुरू किया जन जागरूकता अभियान, पेरेंट्स से चेक करके एडमिशन लेने की अपील

महानगर मेट्रो ब्यूरो

खोखरा। अहमदाबाद के खोखरा इलाके में विवादित सेवेंथ डे स्कूल को एडमिनिस्ट्रेशन ने टेम्परारी तौर पर स्कूल को सौंप दिया है। उस समय, जन आक्रोश वाली संघर्ष समिति आज, 6 मई को सेवेंथ डे स्कूल के बाहर इकट्ठा हुई और पेरेंट्स को स्कूल में एडमिशन लेने के बारे में जागरूक करते हुए कहा कि इस स्कूल के पास काफी सबूत हैं और यह वैलिड है या नहीं, और एक बार चेक करके फिर एडमिशन लेने का प्रस्ताव रखा। सेवेंथ डे स्कूल का रजिस्ट्रेशन कैंसिल होने के डर से पेरेंट्स कन्फ्यूज हैं। जन आक्रोश वाली संघर्ष समिति ने स्कूल अधिकारियों से जवाब मांगा था। नए एडमिशन लेने वाले पेरेंट्स को फीस की बड़ी रकम गंवाने का खतरा हो सकता है। उन्होंने मांग की है कि एडमिशन इस भरोसे के साथ दिया जाए कि स्कूल का रजिस्ट्रेशन कैंसिल नहीं किया जाएगा।

कमेटी ने जांच के बाद ही एडमिशन लेने की अपील की

खोखरा इलाके के सेवेंथ डे स्कूल में एक स्टूडेंट की मौत के बाद स्कूल को सरकार ने अपने कब्ज़े में ले लिया था। स्कूल के सबूत, वैलिडेशन वगैरह मांगे गए थे, जिसके बाद सारा एडमिनिस्ट्रेशन स्कूल को वापस कर दिया गया था। हालांकि, नया

सेशन शुरू होने से पहले जन आक्रोश वाली संघर्ष समिति ने आज स्कूल अधिकारियों के सामने एक प्रेजेंटेशन दिया कि सारा एडमिनिस्ट्रेशन स्कूल को टेम्परारी तौर पर सौंप दिया गया है। राकेश मखीजा नाम के एक गार्जियन ने बताया कि नयन की हत्या के बाद डिस्ट्रिक्ट एजुकेशन ऑफिसर ने स्कूल को बार-बार नोटिस देकर सबूत और दूसरी बातें बताने को कहा था, लेकिन उन्होंने कोई कोऑपरेट नहीं किया।

स्कूल को राज्य सरकार ने अपने कब्ज़े में ले लिया था। स्कूल ने गुजरात हाई कोर्ट में एक पिटीशन फाइल की थी। स्कूल को फिर से सुनने का सुझाव दिया गया था और जिसे मान लिया गया था और स्कूल को फिर से सुनने का सरकार का प्रस्ताव कैंसिल कर दिया गया था, ताकि यह न कहा जा सके कि स्कूल की कमियां दूर हो गई हैं।ञ्स्ष्ट की तरफ से भी एक नोटिस जारी किया गया था, जिसमें अभी तक कोई एक्शन नहीं लिया गया है। हम पेरेंट्स से रिक्वेस्ट करते हैं कि स्कूल में एडमिशन लेने से पहले सब कुछ चेक कर लें ताकि हमारे बच्चे का भविष्य खतरे में न पड़े। उन्होंने आगे कहा कि स्कूल को सिर्फ़ एडमिनिस्ट्रेशन के भरोसे रखा गया है। जब स्कूल ने नए एडमिशन लेना शुरू किया है, तो सवाल यह है कि स्कूल इतनी जल्दी में क्यों है। स्कूल अपने डॉक्यूमेंट्स पेश नहीं कर रहा है। नगर निगम एग्रीमेंट में जो उल्लंघन किया गया है, उसे पूरा नहीं कर सकता। सिर्फ़ एडमिशन लेकर बिज़नेस करना ठीक नहीं है। स्कूल के स्पोक्सपर्सन ने स्कूल के डॉक्यूमेंट्स के बारे में जवाब देने से परहेज़ किया.

दैनिक राशिफल

7 मई 2026, गुरुवार

मेष (Aries) आज का दिन आपके लिए ऊर्जा से भरा रहेगा। कार्यक्षेत्र में नेतृत्व क्षमता की सराहना होगी। आर्थिक सुधार के योग हैं।

वृषभ (Taurus) वाणी और व्यवहार पर नियंत्रण रखें। व्यापार में नई योजनाएं फलदायी होंगी। स्वास्थ्य पर सतर्कता बरतें।

मिथुन (Gemini) रचनात्मक और मीडिया कार्यों में सफलता मिलेगी। परिवार और मित्रों के साथ अच्छा समय बीतेगा। शुभ समाचार मिल सकता है।

कर्क (Cancer) आर्थिक मामलों में शुभ दिन है। अटका धन वापस मिलने की संभावना है। कार्यस्थल पर सहयोग मिलेगा।

सिंह (Leo) आत्मविश्वास से भरपूर रहेंगे। रुके काम तेजी से पूरे होंगे। दांपत्य जीवन में मधुरता रहेगी।

कन्या (Virgo) अनावश्यक खर्चों पर लगाम लगाएं। महत्वपूर्ण यात्रा की रूपरेखा बन सकती है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

तुला (Libra) व्यापार में धन लाभ के अवसर मिलेंगे। नौकरीपेशा लोगों को सकारात्मक खबर मिल सकती है।

वृश्चिक (Scorpio) कार्यक्षेत्र में मेहनत अधिक करनी पड़ सकती है। विरोधियों से सावधान रहें। व्यावसायिक नीतियां गुप्त रखें।

धनु (Sagittarius) सामाजिक कार्यों में भागीदारी बढ़ेगी। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। परिवार में सुख-शांति रहेगी।

मकर (Capricorn) कामकाज में व्यस्तता के कारण थकान होगी। मानसिक तनाव से बचें। निवेश से पहले सलाह लें।

कुंभ (Aquarius) पुराने मित्रों से मुलाकात होगी। नए व्यापार में साझेदारी से लाभ होगा। निर्णय भविष्य में फायदेमंद होंगे।

मीन (Pisces) दिन मिला-जुला रहेगा। वाद-विवाद से दूर रहें। अचानक नए स्रोत से आय के संकेत हैं।

बंगाल विजयः संघ की जमीनी साधना शांति से शक्ति तक

पवन माकन
ग्रुप एडिटर, महानगर मेट्रो

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के नतीजों ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि राजनीति केवल बड़े मंचों, विशाल रैलियों और जोरदार नारों से तय नहीं होती। कई बार असली लड़ाई उन स्तरों पर लड़ी जाती है, जहां न कैमरे पहुंचते हैं और न ही जमीनी प्रयास सुर्खियां बनती हैं। इस बार के चुनाव में एक ऐसी ही खामोश रणनीति कारगर साबित हुई है।

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की ऐतिहासिक, अद्भुत, अविस्मरणीय एवं करिश्माई जीत के पीछे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (संघ) की बहुत बड़ी भूमिका रही है। निश्चिततौर पर इस शानदार जीत के लिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं गृहमंत्री अमित शाह मुख्य भूमिका में हैं। लेकिन बंगाल में ममता बनर्जी की मजबूत चुनौती के सामने भाजपा की जीत के लिए संघ लंबे समय से मेहनत कर रही थी और उसकी वह मेहनत ही जीत का सशक्त माध्यम बनी है। पश्चिम बंगाल में लगातार चल रही हिन्दू विरोधी गतिविधियों एवं मुसलमानों के बढ़ते वर्चस्व को देखते हुए संघ ने इस चुनाव के मद्देनजर बहुत पहले से ही कमर कस ली थी, संघ ने पश्चिम बंगाल में 1.75 लाख से अधिक छोटी-बड़ी बैठकें आयोजित कीं। पिछले 15 सालों में संघ ने पश्चिम बंगाल में तेजी से विस्तार किया है और एक मजबूत ह्यहिंदू वोट बैंकह्ल तैयार किया है। पश्चिम बंगाल में पिछले 15 वर्षों में संघ की शाखाओं की संख्या 900 से बढ़कर 5,000 तक पहुंच गई है। संघ के स्वयंसेवकों ने पश्चिम बंगाल में घर-घर जाकर 'बंग बचाओ' इस थीम पर 'मतदाता जागरूकता अभियान' चलाया। संघ की माइक्रो प्लानिंग ने बंगाल में भाजपा को ऐतिहासिक बढ़त दिलाई और सत्ता परिवर्तन का माध्यम बनी। पश्चिम बंगाल चुनाव भाजपा के लिए एक ऐतिहासिक 'मील का पत्थर' और ऐतिहासिक सफलता साबित हुआ।

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के नतीजों ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि राजनीति केवल बड़े मंचों, विशाल रैलियों और जोरदार नारों से तय नहीं होती। कई बार असली लड़ाई उन स्तरों पर लड़ी जाती है, जहां न कैमरे पहुंचते हैं और न ही जमीनी प्रयास सुर्खियां बनती हैं। इस बार के चुनाव में एक ऐसी ही खामोश रणनीति कारगर साबित हुई है। जहां एक ओर ममता बनर्जी और उनकी पार्टी तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) का आक्रामक चुनाव प्रचार केंद्र में रहा, वहीं दूसरी ओर संघ से जुड़े कार्यकताओं ने अपेक्षाकृत शांत रहकर 'निःशब्द विप्लव' या 'मूक क्रांति' को अंजाम देते हुए जमीनी स्तर पर अपनी पकड़ मजबूत करने पर ध्यान दिया। बंगाल की अस्मिता, विकास और सांस्कृतिक पहचान जैसे मुद्दों को आधार बनाकर जनजागरण अभियान चलाया गया। इस दौरान महिला, युवा, प्रबुद्ध वर्ग, किसान, श्रमिक और अनुसूचित जाति-जनजाति समुदायों तक अलग-अलग तरीकों से पहुंचने की कोशिश की गई।

निश्चिततौर पर पश्चिम बंगाल की राजनीति ने वर्ष 2026 में जो ऐतिहासिक करवट ली, वह केवल सत्ता परिवर्तन की घटना नहीं है, बल्कि एक गहरे सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक परिवर्तन का संकेत भी है। लंबे समय तक वामपंथी प्रभाव और उसके बाद ममता बनर्जी के नेतृत्व में ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस का वर्चस्व रहा, लेकिन इस बार

जनमत ने जिस प्रकार से भाजपा के पक्ष में निर्णायक रूप से झुकाव दिखाया, उसने स्थापित राजनीतिक धारणाओं को चुनौती दी है। इस परिवर्तन के मूल में जो शक्ति को सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानी रही है तो वह है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जिसने एक अदृश्य लेकिन अत्यंत प्रभावशाली भूमिका निभाई है। यह विजय केवल चुनावी रणनीतियों का परिणाम नहीं, बल्कि वर्षों से चल रहे संगठनात्मक परिश्रम, वैचारिक विस्तार और समाज के भीतर गहराई तक किए गए संवाद का परिणाम है। पश्चिम बंगाल में संघ का विस्तार किसी तात्कालिक राजनीतिक उद्देश्य से प्रेरित नहीं था, बल्कि यह एक दीर्घकालिक सामाजिक दृष्टि का हिस्सा था। पिछले डेढ़ दशक में संघ ने प्रांत में जिस प्रकार अपनी शाखाओं का विस्तार किया और समाज के विभिन्न वर्गों तक अपनी पहुंच बनाई, उसने एक मजबूत वैचारिक आधार तैयार किया। यह कार्य किसी प्रचार की तरह नहीं, बल्कि एक शांत सामाजिक प्रक्रिया एवं क्रांति की तरह हुआ, जिसने धीरे-धीरे जनमानस को प्रभावित किया। यही कारण है कि जब चुनाव का समय आया, तो एक पहले से तैयार मानसिकता भाजपा के पक्ष में खड़ी दिखाई दी।

इस पूरे परिदृश्य में सरसंघचालक मोहन भागवत की रणनीतिक दृष्टि को भी विशेष रूप से रेखांकित किया जाना चाहिए। उन्होंने बंगाल को केवल एक राजनीतिक इकाई के रूप में नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक भूमि के रूप में देखा, भारत की अस्मिता के रूप में देखा। जिसकी अपनी विशिष्ट पहचान और परंपराएं हैं। संघ के प्रयासों में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि उसने बंगाल की सांस्कृतिक चेतना को समझने और उससे जुड़ने का प्रयास किया। दुर्गा पूजा, काली पूजा और रामनवमी जैसे पर्वों को सामाजिक एकता और सांस्कृतिक गौरव के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया, जिससे एक व्यापक सामाजिक जुड़ाव स्थापित हुआ। इस प्रक्रिया में हिंदुत्व को किसी बाहरी विचारधारा के रूप में नहीं, बल्कि बंगाल की सांस्कृतिक आत्मा के एक स्वाभाविक विस्तार के रूप में प्रस्तुत किया गया। लंबे समय तक यह धारणा बनी रही कि बंगाली अस्मिता और हिंदुत्व परस्पर विरोधी हैं, लेकिन इस चुनाव में यह धारणा काफी हद तक टूटती हुई दिखाई दी। 'जय श्री राम' के साथ 'जय मां काली' और 'जय मां दुर्गा' जैसे नारों का समन्वय केवल राजनीतिक नारा नहीं था, बल्कि एक सांस्कृतिक संदेश था, जिसने यह स्थापित किया कि क्षेत्रीय पहचान और व्यापक सांस्कृतिक विचारधारा के बीच कोई टकराव नहीं है। इस समन्वय ने मतदाताओं के भीतर एक नई प्रकार की आत्मजागरूकता उत्पन्न की, जहां वे केवल विकास या योजनाओं के आधार पर नहीं, बल्कि अपनी पहचान, सुरक्षा और सांस्कृतिक गौरव के आधार पर भी निर्णय लेने लगे।

चुनाव के दौरान जिस प्रकार से 'अस्तित्व' एवं 'अस्मिता' का विमर्श उभरा, उसने इस पूरे राजनीतिक परिदृश्य को एक नई दिशा दी। संघ और भाजपा ने इसे केवल एक चुनावी मुकाबले के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि एक वैचारिक संघर्ष के रूप में स्थापित किया, जिसमें पहचान और सम्मान के प्रश्न प्रमुख हो गए। ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस पर लगाए गए तुष्टिकरण के आरोपों ने इस विमर्श को और तीव्र किया, जिससे मतदाताओं के बीच एक स्पष्ट ध्रुवीकरण देखने को मिला। इस पूरे प्रक्रिया में संघ ने जमीनी स्तर पर संवाद स्थापित कर इस विचार को सामाजिक स्वीकृति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संगठनात्मक दृष्टि से भी यह चुनाव एक उदाहरण प्रस्तुत करता है कि किस प्रकार मजबूत जमीनी ढांचा चुनावी सफलता का आधार बन सकता है। बूथ स्तर तक सक्रियता, कार्यकताओं के बीच समन्वय, गुटबाजी पर नियंत्रण और नए-पुराने कार्यकताओं का एकीकरण-इन सभी पहलुओं में संघ की भूमिका महत्वपूर्ण रही। यह केवल एक राजनीतिक दल का प्रयास नहीं था, बल्कि एक व्यापक संगठनात्मक सहयोग का परिणाम था, जिसने भाजपा को एक सशक्त चुनावी शक्ति के रूप में स्थापित किया।

इस जीत में नरेन्द्र मोदी की लोकप्रियता और अमित शाह की रणनीतिक क्षमता ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया, लेकिन इन प्रयासों को प्रभावी बनाने के लिए जिस सामाजिक आधार की आवश्यकता थी, वह संघ ने तैयार किया। यही कारण है कि यह जीत केवल शीर्ष नेतृत्व की सफलता नहीं, बल्कि जमीनी स्तर पर किए गए सामूहिक प्रयासों का परिणाम है। इस चुनाव में बंगाल के मध्यम वर्ग का झुकाव भी एक महत्वपूर्ण संकेत के रूप में सामने आया। यह वर्ग परंपरागत रूप से विचारशील और राजनीतिक रूप से सजग माना जाता है और इसका समर्थन किसी भी राजनीतिक दल के लिए निर्णायक होता है। संघ ने इस वर्ग के बीच संवाद और जागरूकता के माध्यम से एक वैचारिक आधार तैयार किया, जिससे यह वर्ग भाजपा के समर्थन में एक मजबूत स्तंभ के रूप में उभरा। इस पूरे परिवर्तन को जनसंघ के संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी के दृष्टिकोण और उनके सपनों के संदर्भ में भी देखा जा सकता है। उन्होंने जिस राष्ट्रवादी विचारधारा की नींव रखी थी, उसे आज बंगाल की धरती पर एक नए रूप में साकार होते हुए देखा जा रहा है। यह केवल एक राजनीतिक उपलब्धि नहीं, बल्कि एक वैचारिक निरंतरता का प्रतीक भी है।

अंततः यह स्पष्ट होता है कि पश्चिम बंगाल 2026 का चुनाव केवल एक चुनावी घटना नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक और वैचारिक परिवर्तन का प्रतीक है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने जिस प्रकार से वर्षों तक धैर्य और अनुशासन के साथ समाज के भीतर कार्य किया, वह आज परिणाम के रूप में सामने आया है। यह परिवर्तन यह संकेत देता है कि जब संगठनात्मक शक्ति, वैचारिक स्पष्टता और नेतृत्व की दिशा एक साथ मिलती है, तो वे न केवल राजनीतिक परिणामों को प्रभावित करती हैं, बल्कि समाज की दिशा को भी बदलने की क्षमता रखती हैं। आने वाले समय में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि यह परिवर्तन किस प्रकार आगे विकसित होता है और क्या यह केवल सत्ता परिवर्तन तक सीमित रहता है या एक स्थायी सामाजिक पुनर्जागरण का आधार बनता है।

संपादकीय

भगवा हुआ बंगाल

बंगाल में भाजपा का खेला काम कर गया। ऐसा भी नहीं है कि तीन बार से सत्ता पर काबिज बंगाल की शेरनी ममता से जनता का मोहभंग हाल-फिलहाल की घटना है। भाजपा ने दशकों से आक्रामक रणनीति से चुनावी तैयारी की है। केंद्र सरकार के तमाम संसाधनों का गाहे-बगाहे प्रयोग किया। बंगालियों को रास आने वाले तमाम विमर्श गढ़े और मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण के जरिये लाखों मतदाताओं को बाहर का रास्ता दिखाया। मोदी-शाह की आक्रामक रणनीति के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यकर्ता स्तर पर गहन अभियान चले। फिलहाल, गंगोत्री से गंगासागर तक भाजपा का शासन हो गया है। गंगा के प्रवाह के साथ बहने वाले झारखंड को छोड़ दें तो बाकी राज्य भगवामय हैं। जहां बंगाल में पहली बार कमल खिला है, वहीं तमिलनाडु में थलापति के नाम से चर्चित सुपरस्टार विजय की दमदार एंट्री हुई है। उन्होंने भी परंपरागत राजनीतिक दलों की घोषणाओं से बढ़कर लोकलुभावने वायदे किए हैं। फलतः दो ध्रुवीय द्रविड़ राजनीति सत्ता से बाहर हुई है। स्टालिन न केवल हारे हैं, बल्कि उनकी सरकार भी गई। छह दशक बाद राज्य में गैर द्रविड़ियन सरकार बनने जा रही है। हालांकि, अभी सत्ता में आने के लिये टीवीके को गठबंधन का सहारा लेना होगा। भाजपा के लिये भी पत्ते खेलने के अवसर हैं। जहां बंगाल, केरलम व तमिलनाडु में सत्ता विरोधी लहर में सरकारें धराशायी हुई हैं,वहीं असम में भाजपा की हैट्रिक बनी है। हेमंत बिस्व सरमा के नेतृत्व में भाजपा ने भरपूर बहुमत पाया है। पुडुचेरी में फिर एनडीए सत्ता पर काबिज हुआ है। लेकिन भाजपा की इस जीत की खुशी के बीच केरलम में कांग्रेस नीत गठबंधन की वापसी हुई है। पांच राज्यों के चुनाव परिणाम वाम दलों के लिये दुःस्वप्न ही साबित हुए हैं, केरलम में उनका आखिर गढ़ भी हाथ से निकल गया है। हालांकि, केरलम में भाजपा ने तीन व तमिलनाडु में एक सीट जीतकर हिंदी बेल्ट की पार्टी के ठप्पे से मुक्त होने का प्रयास किया है। इन विधानसभा चुनाव परिणामों का निष्कर्ष यह भी है कि अब क्षेत्रीय क्षत्रपों की मुखर आवाज कुंद हो गई है। जहां ममता,स्टालिन व विजयन सत्ता से बाहर हो गए हैं, वहीं शरद पवार, अरविंद केजरीवाल, नीतीश कुमार, नवीन पटनायक का प्रभाव भी फीका हुआ है। वर्तमान विधानसभा चुनाव परिणामों के बाद देश का 72 फीसदी भूभाग व 78 फीसदी आबादी भाजपा शासित है। अनुमान है कि अब भाजपा ह्यएक देश, एक चुनावह्ल के मुद्दे पर मुखर हो सकती है। कयास बंगाल को लेकर भी हैं कि वहां आंदोलनों के अगुवा रहे सुवेंदु अधिकारी को सत्ता की बागडोर सौंपी जाएगी, या भाजपा कोई चौंकाने वाली पहल करती है। बहरहाल, बंगाल में भाजपा ने आक्रामक चुनावी रणनीति से महज 8 फीसदी वोट प्रतिशत की वृद्धि से 131 सीटें बढ़ा ली हैं।

योगेश कुमार गोयल

चिंतन-मनन

भय को निकालें

जब क्रियता का संवेदन होता है तो अक्रियता का संवेदन भी होगा। हमारे सारे तनाव इस परिधि में हो रहे हैं। क्रियता का संवेदन हो, क्रिय मिले, क्रिय को वियोग न हो और अप्रियता का योग न हो। बस, सारी तनाव की यह सीमा है। इसी सीमा में सारे तनाव प्रकट हो रहे हैं। पर मूल में जो छिपा हुआ कारण कार्य कर रहा है, वह मात्र एक ही है- प्रियता का संवेदन, अप्रियता का संवेदन। अब यह संवेदन है तो भय भी पैदा होगा।

एक छोटी सी कहनी है। एक आदमी बहुत डरता था। वह समझदार आदमी के पास गया जो मंत्र को जानता था। उसके पास जाकर बोला, मुझे डर बहुत लगता है। उसने ताबीज बना दिया और कहा, इसको बांध लो। तुम्हारा डर समाप्त हो जाएगा। ताबीज बांध लिया। डर लगना कम हो गया। पर मंत्र जानने वाला व्यक्ति कुछ दिन बाद ही आया और पूछा- भाई! अब डर तो नहीं लगता? उसने कहा, जो काल्पनिक था, वह तो नहीं लगता किन्तु एक डर और पैदा हो गया। निरन्तर मन में भय बना रहता है कि कहीं ताबीज गुम न हो जाए। एक भय तो समाप्त हुआ, दूसरा भय और आ गया। जब यह दृष्टि मूल में बनी रहती है कि प्रिय का वियोग न हो जाए, अप्रिय का योग न हो जाए, तब भय अनिवार्य है। उस मूल कारण से तनाव पैदा होता है। जब प्रिय संवेदन की भावना है, उसका तनाव भी पैदा होता है। हमारे जीवन के संचालन के केन्द्र में जो तत्व है, वह है लोभ। मनोविज्ञान के अनुसार हर व्यक्ति में कुछ मौलिक मनोवृत्तियां होती हैं। जीने की इच्छा भी इसी में एक है।

भारत की सांस्कृतिक पहचान के प्रतीक हैं टैगोर

कोलकाता में साहित्यिक माहौल वाले कुलीन धनाढ्य परिवार में 7 मई 1861 को जन्मे रवीन्द्रनाथ टैगोर एक कवि, उच्च कोटि के साहित्यकार, उपन्यासकार और नाटककार के अलावा संगीतप्रेमी, अच्छे चित्रकार तथा दार्शनिक भी थे। टैगोर एशिया के प्रथम ऐसे व्यक्ति थे, जिन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्हें वर्ष 1913 में विश्वविख्यात महाकाव्य 'गीतांजली' की रचना के लिए साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार दिया गया था। हालांकि उन्होंने यह पुरस्कार स्वयं समारोह में उपस्थित होकर ग्रहण नहीं किया था बल्कि ब्रिटेन के एक राजदूत ने यह पुरस्कार लेकर उन तक पहुंचाया था। नोबेल पुरस्कार में मिले करीब एक लाख आठ हजार रुपये की राशि टैगोर ने किसानों की बेहतरी के लिए कृषि बैंक तथा सहकारी समिति की स्थापना और भूमिहीन किसानों के बच्चों की शिक्षा के लिए स्कूल बनाने में इस्तेमाल की। टैगोर की महान रचना 'गीतांजली' का प्रकाशन वर्ष 1910 में हुआ था, जो उनकी 157 कविताओं का संग्रह है। इसी काव्य संग्रह को बाद में दुनिया की कई भाषाओं में प्रकाशित किया गया। मार्च 1913 में लंदन की मैकमिलन एंड कंपनी ने इसे प्रकाशित किया और 13 नवम्बर 1913 को नोबेल पुरस्कार की घोषणा से पहले इसके दस संस्करण छापे गए।

टैगोर की कुछ कविताएं तो बांग्लादेश के स्कूली पाठ्यक्रम का हिस्सा भी हैं। जहां तक भारत के राष्ट्रीय गीत 'जन गण मन' की बात है कि इसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन के दूसरे दिन का काम शुरू होने से पहले 27 दिसम्बर 1911 को पहली बार गाया गया था। हालांकि उस दौरान इस बात को लेकर भी कुछ विवाद चला कि कहीं उन्होंने यह गीत अंग्रेजों की प्रशंसा में तो नहीं लिखा लेकिन इसके रचयिता टैगोर ने स्पष्ट करते हुए कहा था कि इस गीत में वर्णित 'भारत भाग्य विधाता' के केवल दो ही अर्थ हो सकते हैं, देश की जनता या फिर सर्वशक्तिमान ऊपर वाला, फिर चाहे उसे भगवान कहें या देव। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तथा रवीन्द्र नाथ टैगोर राष्ट्रीयता, देशभक्ति, तर्कशक्ति इत्यादि विभिन्न मुद्दों पर अलग-अलग राय रखते थे लेकिन दोनों एक-दूसरे का बहुत सम्मान भी किया करते थे। साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार मिलने के बाद टैगोर को गांधीजी ने ही सर्वप्रथम 'गुरूदेव' कहा था जबकि गांधीजी को महात्मा की उपाधि टैगोर ने दी थी। उन्होंने 12 अप्रैल 1919 को गांधीजी को 'महात्मा' का सम्बोधन करते हुए एक पत्र लिखा था, उसके बाद ही गांधीजी को महात्मा कहा जाने लगा।

मात्र आठ वर्ष की आयु में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी पहली कविता लिखी थी और 16 वर्ष की आयु में कहानियां तथा नाटक लिखना शुरू कर दिया था। बैरिस्टर बनने के सपने के साथ वह 1878 में इंग्लैंड चले गए थे लेकिन दो ही वर्ष बाद डिग्री लिए बिना ही भारत लौट आए। 1901 में सियालदह छोड़कर पश्चिम बंगाल के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शांतिनिकेतन में आने के बाद रवीन्द्रनाथ टैगोर ने वहां प्रकृति की गोद में खुले प्राकृतिक वातावरण में वृक्षों, बगीचों और एक लाइब्रेरी के साथ केवल पांच छात्रों के साथ छोटे से 'शांतिनिकेतन स्कूल' की स्थापना की, जो 1921 में 'विश्वभारती' नाम से एक समृद्ध विश्वविद्यालय बना।। 1919 में उन्होंने शांतिनिकेतन कला के एक स्कूल 'कला भवन' की भी नींव रखी, जो दो साल बाद विश्वभारती विश्वविद्यालय का हिस्सा बन गया। शांतिनिकेतन में ही गुरूदेव ने अपनी कई साहित्यिक कृतियां लिखी और यहां मौजूद उनका घर आज भी ऐतिहासिक महत्व का है। उनका ज्यादातर साहित्य काव्यमय रहा और अनेक रचनाएं गीतों के रूप में प्रसिद्ध हैं। 1880 के दशक में उन्होंने कविताओं की कई पुस्तकें प्रकाशित की और 1890 में 'मानसी' की रचना की।

कविता, गान, उपन्यास, कथा, नाटक, प्रबंध, शिल्पकला इत्यादि साहित्य की शायद ही ऐसी कोई विधा है, जिसमें उनकी रचना न हो। उनकी प्रमुख रचनाओं में गीतांजली, गीताली, गीतिमाल्य, कथा ओ कहानी, शिशु, शिशु भोलानाथ, कणिका, क्षणिका, खेया हैमांति, क्षुदिता, मुसलमानिर गोल्पो आदि प्रमुख हैं। उन्होंने कई किताबों का अनुवाद अंग्रेजी में किया, जिसके बाद उनकी रचनाएं पूरी दुनिया में पढ़ी और सराही गई। उपन्यास में गोरा, चतुरंगा, नौकादुबी, जोगजोग, घारे बायर, मुन्ने की वापसी, अंतिम प्यार, अनाथ इत्यादि गुरूदेव के कुछ प्रमुख उपन्यास हैं। इनके अलावा काबुलीवाला, मास्टर साहब, पोस्टमास्टर इत्यादि उनकी

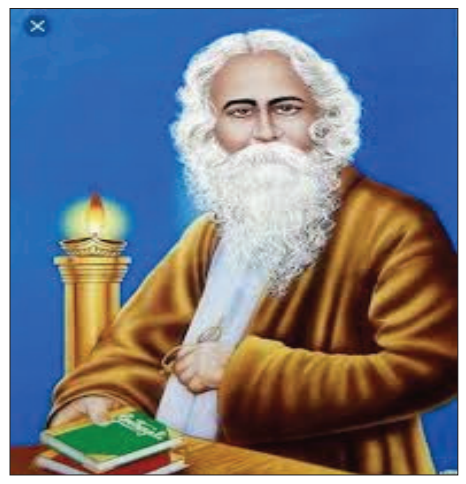

कई कहानियों को भी बेहद पसंद किया गया। अपने जीवनकाल में गुरूदेव ने करीब 2230 गीतों की रचना की और बांग्ला साहित्य के जरिये भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नई जान डाली। अपनी अधिकांश रचनाओं में उन्होंने इंसान और भगवान के बीच के संबंधों तथा भावनाओं को उजागर किया। सही मायनों में गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर मानवता के मुखर पैरोकार थे। उन्होंने अमेरिका, ब्रिटेन, जापान, चीन सहित दर्जनों देशों की यात्राएं की। स्वामी विवेकानंद के बाद वे दूसरे ऐसे भारतीय थे, जिन्होंने विश्व धर्म संसद को दो बार सम्बोधित किया। बहुआयामी प्रतिभा के धनी गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने प्रोस्टेट कैंसर के कारण 7 अगस्त 1941 को कोलकाता में अंतिम सांस ली।

तेल कंपनियों का रिकॉर्ड मुनाफा और उपभोक्ताओं पर बढ़ता बोझ

कांतिलाल मांडोत

भारत में पेट्रोलियम क्षेत्र एक बार फिर चर्चा के केंद्र में है। वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान देश की प्रमुख तेल कंपनियों ने जिस तरह से मुनाफा कमाया है, उसने आम जनता, विशेषज्ञों और नीति निमार्ताओं के बीच नई बहस को जन्म दे दिया है। रिपोर्ट्स के अनुसार, इन कंपनियों ने रोजाना औसतन 116 करोड़ रुपये का लाभ कमाया, जो पूरे वर्ष में करीब 1.37 लाख करोड़ रुपये के आसपास बैठता है। यह आंकड़ा न केवल चौंकाने वाला है बल्कि यह भी संकेत देता है कि बाजार की जटिल परिस्थितियों के बावजूद कंपनियों की कमाई लगातार मजबूत बनी हुई है।

पिछले तीन वर्षों से तेल कंपनियों का मुनाफा लगातार बढ़ रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव, भू-राजनीतिक तनाव और आर्थिक अनिश्चितताओं के बावजूद कंपनियों ने अपने मार्जिन को बनाए रखा है। खास बात यह है कि जब वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतें बढ़ती हैं, तो कंपनियां कीमतें बढ़ाने की बात करती हैं, लेकिन जब कीमतें घटती हैं, तो उपभोक्ताओं को उसका पूरा लाभ नहीं मिल पाता।

2022-23 में रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद कच्चे तेल की कीमतें 125 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गई थीं। उस समय भी अधिकांश तेल कंपनियों ने भारी मुनाफा कमाया था। इसके बाद 2023-24 और 2024-25 में कीमतों में कुछ गिरावट आई, लेकिन कंपनियों के लाभ में कोई खास कमी नहीं आई। 2025-26 में भी यही ट्रेंड जारी रहा। केयर एज रेटिंग के अनुसार, तीसरी तिमाही में रिफाइनिंग मार्जिन प्रति बैरल लगभग 13 डॉलर तक पहुंच गया था, जो भारतीय मुद्रा में करीब 1,235 रुपये होता है। इसका सीधा असर कंपनियों की कमाई पर पड़ा। अगर पेट्रोल और डीजल के स्तर पर देखा जाए, तो कंपनियों को प्रति लीटर 7 से 6 रुपये तक का लाभ मिल रहा था। इससे पहले 2024-25 में यह मार्जिन 12 से 14 रुपये प्रति लीटर तक था। यह साफ दिखाता है कि कंपनियों ने लागत और बिक्री मूल्य के बीच एक ऐसा संतुलन बनाया है, जिससे उनका मुनाफा लगातार बढ़ता रहा।

हालांकि, दूसरी ओर उपभोक्ताओं की स्थिति उतनी मजबूत नहीं रही। आम जनता को पेट्रोल और डीजल की कीमतों में अपेक्षित राहत नहीं मिल पाई। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतें घटने के बावजूद घरेलू स्तर पर कीमतों में सीमित कटौती ही देखने को मिली। इससे यह सवाल उठता है कि क्या तेल कंपनियों का मुनाफा उपभोक्ताओं की कीमत पर बढ़ रहा है।

2026 की शुरूआत में ईरान से जुड़े भू-राजनीतिक तनाव और युद्ध की स्थिति ने एक बार फिर तेल बाजार को प्रभावित किया। 26 फरवरी 2026 से शुरू हुए इस संघर्ष के कारण कच्चे तेल की कीमतों में तेजी आई और यह 125 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गई। हालांकि बाद में कीमतें घटकर 116 डॉलर तक आ गईं। इस दौरान तेल कंपनियों ने दावा किया कि उन्हें पेट्रोल पर प्रति लीटर 14 रुपये और डीजल पर 10 रुपये का नुकसान हो रहा है। लेकिन यह दावा उस समय सवालों के घेरे में आ गया जब उनके पिछले मुनाफे के आंकड़े सामने आए।

विशेषज्ञों का मानना है कि तेल कंपनियां अपने नुकसान और मुनाफे को संतुलित तरीके से प्रस्तुत करती हैं। जब कीमतें बढ़ती हैं तो नुकसान का हवाला दिया जाता है और जब कीमतें घटती हैं तो मुनाफे की बात कम ही सामने आती है। यह रणनीति बाजार और उपभोक्ताओं दोनों को प्रभावित करती है।

सरकार की भूमिका भी इस पूरे मामले में महत्वपूर्ण है। केंद्र सरकार ने 27 मार्च को पेट्रोल और डीजल पर एक्साइज ड्यूटी में 10 रुपये प्रति लीटर की कटौती की थी, जिससे आम जनता को कुछ राहत मिली। हालांकि इससे सरकार को हर महीने करीब 12,000 करोड़ रुपये के राजस्व का नुकसान होने का अनुमान है। इस घाटे की भरपाई के लिए सरकार ने डीजल के निर्यात पर टैक्स बढ़ा दिया, जिससे अतिरिक्त आय प्राप्त हो रही है।

भारत में हर महीने औसतन 191 करोड़ लीटर डीजल का निर्यात होता है। टैक्स बढ़ने के बाद सरकार को केवल डीजल निर्यात से ही करीब 10,500 करोड़ रुपये की अतिरिक्त आय हो रही है। इससे यह साफ है कि सरकार भी राजस्व संतुलन बनाए रखने के लिए अलग-अलग उपाय कर रही है। तेल कंपनियों द्वारा उठाए गए कुछ कदम भी चर्चा में रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, कुछ क्षेत्रों में एक बार में 200 लीटर से अधिक पेट्रोल या डीजल देने पर प्रतिबंध लगाया गया। यह कदम आपूर्ति को नियंत्रित करने और संभावित संकट से निपटने के लिए उठाया गया था। हालांकि इससे छोटे व्यवसायों और किसानों को परेशानी का सामना करना पड़ा।

कच्चे तेल की कीमतों का इतिहास देखें तो 2020-21 में यह लगभग 44.65 डॉलर प्रति बैरल थी, जो महामारी के दौरान सबसे कम स्तर था। इसके बाद 2021-22 में यह 79.30 डॉलर, 2022-23 में 90 डॉलर के आसपास, 2023-24 में 82.58 डॉलर और 2024-25 में 78.56 डॉलर रही। 2025-26 में यह औसतन 70.99 डॉलर के आसपास रही। इस ट्रेंड से स्पष्ट है कि कीमतों में गिरावट आई है, लेकिन इसका पूरा लाभ उपभोक्ताओं तक नहीं पहुंचा।

इस पूरे परिदृश्य में सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या तेल कंपनियों का मुनाफा उचित है या इसमें संतुलन की जरूरत है। एक तरफ कंपनियां यह तर्क देती हैं कि उन्हें वैश्विक बाजार की अनिश्चितताओं, रिफाइनिंग लागत और लॉजिस्टिक्स खर्च का सामना करना पड़ता है। दूसरी तरफ उपभोक्ता यह महसूस करते हैं कि उन्हें कीमतों में पारदर्शिता और राहत मिलनी चाहिए।

आर्थिक विशेषज्ञों का मानना है कि सरकार और कंपनियों दोनों को मिलकर एक संतुलित नीति बनानी चाहिए, जिससे कंपनियों की वित्तीय स्थिति मजबूत रहे और उपभोक्ताओं को भी उचित कीमत मिले। इसके लिए मूल्य निर्धारण में पारदर्शिता, टैक्स संरचना में सुधार और वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देना जरूरी है।

भविष्य की बात करें तो भारत तेजी से ऊर्जा परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इलेक्ट्रिक वाहनों, सौर ऊर्जा और अन्य वैकल्पिक स्रोतों पर जोर दिया जा रहा है। इससे आने वाले वर्षों में तेल की मांग पर असर पड़ सकता है। ऐसे में तेल कंपनियों को भी अपने बिजनेस मॉडल में बदलाव लाना होगा।

अंततः यह कहा जा सकता है कि तेल कंपनियों का बढ़ता मुनाफा केवल एक आर्थिक मुद्दा नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और राजनीतिक महत्व का विषय भी बन चुका है। जब तक उपभोक्ताओं को उचित राहत और पारदर्शिता नहीं मिलेगी, तब तक यह बहस जारी रहेगी। सरकार, कंपनियों और जनता के बीच संतुलन बनाना ही इस चुनौती का सबसे प्रभावी समाधान हो सकता है।

शामली ITI स्टूडेंट मर्डर: रात में सोने गया, सुबह बिस्तर से गायब... अब कुएं में मिली अधजली लाश

महानगर मेट्रो ब्यूरो

झिंझाना। शामली के झिंझाना थाना क्षेत्र स्थित लक्ष्मीपुरा गांव में मंगलवार सुबह एक 18 वर्षीय युवक गोविंद का जला हुआ शव जंगल के कुएं से बरामद हुआ. मृतक गोविंद सरकारी शिक्षक सुखबीर सिंह का बेटा था और आईटीआई की पढ़ाई कर रहा था. वह सोमवार रात करीब 11 बजे घर से पास ही स्थित घेर में पढ़ने और सोने गया था, जहां से वह संदिग्ध परिस्थितियों में गायब हो गया. मंगलवार सुबह 9:30 बजे एक राहगीर ने कुएं में जला हुआ शव देखकर पुलिस को सूचना दी. पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए टीमें गठित कर दी हैं.

सोने गया था छात्र, सुबह बिस्तर से मिला गायब

परिजनों के मुताबिक, गोविंद रोजाना की तरह सोमवार रात को घेर में सोने के लिए गया था. मंगलवार सुबह करीब 5 बजे जब परिवार के लोग वहां पहुंचे, तो गोविंद अपने बिस्तर से गायब था.
काफी तलाश करने के बाद भी उसका कोई सुराग नहीं लगा. कुछ घंटों बाद गांव के ही जंगल में एक कुएं के भीतर उसकी जली हुई लाश मिलने से कोहराम मच गया. छात्र की इस तरह नृशंस हत्या से ग्रामीणों में भारी रोष और दहशत का माहौल है.

जल्द होगा हत्याकांड का खुलासा: एसपी

शामली के एसपी नरेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि छात्र का जला हुआ शव बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है. पुलिस की टीमें मामले की बारीकी से जांच कर रही हैं. एसपी ने आश्वासन दिया है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर मौत के सही कारणों का पता लगाया जाएगा और जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार कर हत्याकांड का खुलासा किया जाएगा. फिलहाल पुलिस गांव और आसपास के लोगों से पूछताछ कर रही है ताकि हत्या की कड़ी जोड़ी जा सके.

'जनादेश का अपमान, अराजकता फैला रहीं' : ममता बनर्जी पर बरसे यूपी के सांसद जगदंबिका पाल

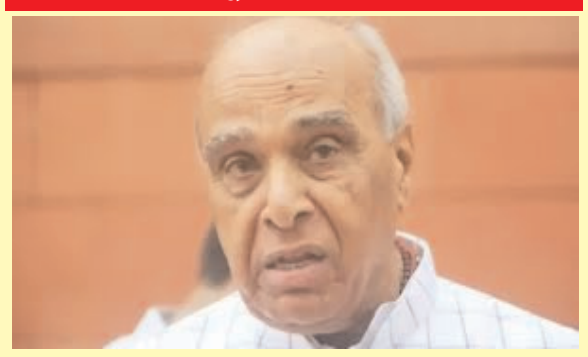

महानगर मेट्रो ब्यूरो

लखनऊ। बंगाल के चुनाव में बुरी तरह हारने के बावजूद ममता बनर्जी ने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने से इनकार किया है। इस पर बीजेपी के सांसद जगदंबिका पाल ने उन्हें लोकतांत्रिक व्यवस्था का स्मरण कराया है। उन्होंने कहा है कि ममता बनर्जी संवैधानिक व्यवस्था के खिलाफ अराजकता फैला रही हैं। पश्चिम बंगाल के विधानसभा चुनाव में ममता बनर्जी और उनकी पार्टी तृणमूल कांग्रेस को करारी मात मिली है। बीजेपी ने भारी बहुमत हासिल किया है और वह बंगाल में पहली बार अपनी सरकार बनाने जा रही है।

ममता बनर्जी को चुनाव में मिली करारी हार

बंगाल की 294 में से 293 विधानसभा सीटों के चुनाव के नतीजे आ गए हैं। यहां एक सीट पर पुनर्मतदान होना है। चुनाव में बीजेपी को 207, ममता बनर्जी की पार्टी टीएमसी को 80, कांग्रेस को दो, आम जनता उन्नयन पार्टी को दो, सीपीआई (एम) को एक और आल इंडिया सेक्युलर फ्रंट को एक सीट पर जीत मिली है। बंगाल में पिछले 15 साल से मुख्यमंत्री पद पर आसीन ममता बनर्जी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि 'मैं चुनाव नहीं हारी हूं, हमें हराया गया है।' उन्होंने इस कारण मुख्यमंत्री पद त्यागने से इनकार कर दिया है।

जनादेश का अपमान कर रहीं ममता

ममता बनर्जी के इस रवैये पर उत्तर प्रदेश की डुमरियागंज लोकसभा सीट से बीजेपी के सांसद जगदंबिका पाल ने आपत्ति दर्ज कराई है। उन्होंने कहा है कि, 'ममता बनर्जी अगर इस्तीफा नहीं देने की बात कह रही हैं तो यह बंगाल के जनादेश का अपमान है। जबकि इंडिया गठबंधन लोकतंत्र की रक्षा बात करता था। चुनाव आयोग ने निष्पक्ष, भयमुक्त और एक तरह से स्वतंत्र चुनाव कराया। चुनाव के दौरान कोई हिंसा नहीं हुई, कोई एक जान नहीं गई। इसके बाद इस्तीफा न देने की बात करना...?'

क्या ममता को संविधान के आर्टिकल 172 का ज्ञान नहीं?

जगदंबिका पाल ने कहा कि, 'वे संविधान की बात करती हैं तो उन्हें संविधान के आर्टिकल 172 का ज्ञान होना चाहिए। संविधान के अनुच्छेद 172 में है कि किसी राज्य विधानसभा की जिस दिन पहली बैठक होगी, तब से 5 साल ही वह विधानसभा रहेगी। पांच साल बाद उस विधानसभा का कार्यकाल समाप्त हो जाएगा। यह अनिवार्य है और संवैधानिक व्यवस्था है।' उत्तर प्रदेश के कार्यवाहक मुख्यमंत्री रह चुके पाल ने कहा कि, 'सात तारीख को बंगाल विधानसभा का कार्यकाल समाप्त हो रहा है। राज्यपाल को मुख्यमंत्री नियुक्त करने का अधिकार है। ममता बनर्जी इस तरह के बयान देकर सिर्फ अराजकता और भ्रम फैलाने की कोशिश कर रही हैं।

टैगोर की जयंती पर बंगाल की गद्दी संभालेगा BJP का मुख्यमंत्री, शुभेंदु अधिकारी का नाम सबसे आगे

सीएम पद के लिए शुभेंदु अधिकारी सबसे आगे बताए जा रहे हैं, हालांकि संघ पृष्ठभूमि वाले नेताओं के नाम भी चर्चा में हैं।

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल में बीजेपी की पहली सरकार का शपथ ग्रहण 9 मई को होगा। इसी दिन रवींद्र नाथ टैगोर की जयंती है। बीजेपी के पहले सीएम के लिए शुभेंदु अधिकारी का नाम सबसे आगे बताया जा रहा है। वजह यह कि उन्होंने पिछले विधानसभा चुनाव में ममता बनर्जी को नंदीग्राम से हराया और इस बार फिर भवानीपुर से मात दी। वह राज्य में बीजेपी का आक्रामक चेहरा हैं। चुनाव प्रचार में हिंदू वोटर्स को एकजुट करने की बात की और नेता प्रतिपक्ष रहे। टीएमसी से बीजेपी में शामिल हुए शुभेंदु ममता के काम करने के तरीके से लेकर पूरे सिस्टम को समझते हैं। हालांकि बीजेपी का पुराना कैडर ना होना उनकी उम्मीद को थोड़ा कम कर सकता है। ऐसा भी नहीं है कि बीजेपी ने दूसरे पार्टी से आए नेताओं पर भरोसा नहीं किया। असम इसका उदाहरण है, जहां बीजेपी ने कांग्रेस से आए हिमंता बिस्वा सरमा को सीएम बनाया। वैसे असम और बंगाल की स्थिति में फर्क है, क्योंकि बंगाल में बीजेपी के पास और भी चेहरे

हैं। संघ बैकग्राउंड वाले नेता बन सकते हैं बीजेपी का चेहरा बीजेपी ने पिछले कुछ महीनों में जब राज्यों में संगठन की नई टीम का चयन किया तो राष्ट्रीय आरएसएस बैकग्राउंड वाले नेताओं को तरजीह दी। इस बार चुनाव में भी टीएमसी से लोगों को नहीं लिया गया, जैसा पिछले चुनाव में हुआ था। इसलिए यह भी संभावना है कि बीजेपी अपना पहला सीएम किसी ऐसे नेता को बनाए जो शुरू से पार्टी की विचारधारा से जुड़ा हो और संघ बैकग्राउंड का हो। बीजेपी के एक नेता ने अनौपचारिक बातचीत में कहा कि संघ एंगल देखने पर मौजूदा प्रदेश अध्यक्ष साभिक भट्टाचार्य और दिलीप घोष का नाम सामने आता है। दिलीप घोष ने राज्य में बीजेपी का जनाधार बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई। साभिक को बूथ स्तर के प्रबंधन में माहिर माना जाता है। वे 1974 से ही संघ से जुड़े रहे। बंगाल बीजेपी में संघ बैकग्राउंड के और नेता भी हैं। ...ताकि वादे पूरे हों बीजेपी ने बंगाल में टीएमसी को ये कहकर घेरा कि न यहां रोजगार है न इंडस्ट्री, इसलिए युवा पलायन कर रहे हैं। ऐसे में पार्टी चाहेगी कि सरकार का चेहरा इंडस्ट्री फ्रेंडली हो, जिससे राज्य में बीजेपी अपने वादे पूरे कर सके।ये भी चर्चा है कि क्या बीजेपी बंगाल में मध्य प्रदेश या राजस्थान जैसा प्रयोग कर बड़े चेहरे की जगह किसी कम जाने पहचाने चेहरे को सामने कर सकती है? हालांकि बंगाल जैसे राज्य में इसकी संभावना कम लगती है। मध्य प्रदेश, राजस्थान में बीजेपी पहले से ही मजबूत रही है और सरकार में भी रही है। जब ओडिशा में बीजेपी की पहली बार सरकार बनी तो मोहन चरण माझी को सीएम बनाया। हालांकि माझी छात्र जीवन से ही संघ से जुड़े रहे।

ममता बनर्जी की हार पर यूपी में रार; भिड़े अखिलेश यादव और ओमप्रकाश राजभर, क्या 2027 चुनाव का है डर ?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में पीडीए यानी 'पिछड़ा', 'दलित' और 'अल्पसंख्यक' वोटों के जरिए समाजवादी पार्टी विधानसभा चुनाव की वैतरणी पार करना चाहती है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव की इस चुनावी रणनीति को लेकर सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के प्रमुख और यूपी के मंत्री ने कहा है कि 'पीडीए' आ रहा है, राजा के लक्षण दिख रहे हैं। अखिलेश ने इस पर उन्हें निशाना बनाया है। दूसरी तरफ बंगाल चुनाव के नतीजों को लेकर ओपी राजभर ने अखिलेश पर 'तीर' छोड़े हैं। एनडीए और सपा-कांग्रेस के वोट प्रतिशत में बहुत कम

अंतर यूपी के विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी पिछड़े, दलित और अल्पसंख्यक समुदाय के वोट बटोरने के लिए वही रणनीति अपना रहे हैं जो उन्होंने सन 2024 के लोकसभा चुनाव में अपनाई थी। लोकसभा चुनाव में सपा और कांग्रेस के गठबंधन ने 43 सीटें जीतकर 43.52 प्रतिशत वोट हासिल कर लिए थे। प्रतिद्वंद्वी एनडीए ने 36 सीटें जीतकर 43.69 फीसदी मत हासिल किए थे। जबकि 2019 के लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश की कुल 80 में से 64 सीटें एनडीए ने जीती थीं।

बीजेपी के खिलाफ पीडीए को एकजुट करने की रणनीति

समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव PDA के फॉर्मूले पर काम कर रहे हैं। वे बीजेपी से चुनावी जंग जीतने के लिए इस फॉर्मूले का इस्तेमाल करना चाहते हैं। इन वर्गों को वे बीजेपी के खिलाफ एकजुट करने की जुगत लगा रहे हैं। पिछले लोकसभा चुनाव में अच्छी जीत हासिल करके समाजवादी पार्टी देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बन गई। अखिलेश यादव को विश्वास है कि उनका पीडीए का फॉर्मूला आने वाले विधानसभा चुनाव में भी काम करेगा। यही कारण है कि वे लगातार पीडीए की बात कर रहे हैं। ओपी राजभर ने अखिलेश यादव को निशाना बनाते हुए कहा कि, 'सौ परसेंट राजा के लक्षण परिलक्षित हो रहे हैं, पीडीए आ रहा है।' अखिलेश यादव ने एक्स पर एक राजभर का वीडियो पोस्ट किया। इस वीडियो में राजभर जब बोल रहे हैं तब उनके बाजू में बैठे एक नेता उन्हें कोहनी मारकर शायद इस मुद्दे पर शांत कराने की कोशिश करते हुए दिख रहे हैं।

'डीएम अंकल, प्लीज सड़क बनवा दीजिए...' बच्ची की अपील पर बनने लगा रोड, मिलने घर पहुंचे अफसर

पानी भरी सड़क से परेशान बच्ची ने गुहार लगाई कि 'डीएम अंकल' प्लीज सड़क बनवा दीजिए. वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ

महानगर मेट्रो ब्यूरो

लखीमपुर. इसके बाद डीएम अंजनी कुमार सिंह बच्ची से मिलने पहुंच गए. डीएम ने कहा कि बच्ची की मांग पर सड़क सही कराई जा रही है. यूपी में लखीमपुर खीरी की एक छोटी-सी बच्ची की मासूम आवाज ने पूरे जिले का ध्यान अपनी ओर खींच लिया. यही आवाज बदलाव की वजह भी बन गई. कहानी है कक्षा एक में पढ़ने वाली नन्ही मानवी सिंह की, जिसने अपने घर के सामने की खराब सड़क से परेशान होकर एक वीडियो बनाया, जो वायरल हो गया. वीडियो में वह बेहद मासूमियत से कहती है- डीएम अंकल, आप बहुत अच्छे हैं... हमारी भी सड़क बनवा दीजिए. यह एक बच्ची की अपील थी, जिसमें उसकी रोजमर्रा की परेशानी दिख रही थी. घर के बाहर पानी से भरी, ऊबड़-खाबड़ सड़क, जहां से गुजरना उसके लिए मुश्किल भरा था. जैसे ही यह वीडियो सोशल मीडिया पर आया, देखते ही देखते वायरल हो गया. लोग इसे शेयर करने लगे, कमेंट्स में बच्ची की मासूमियत

की तारीफ होने लगी और प्रशासन तक भी यह आवाज पहुंच गई. ज्यादा वक्त नहीं लगा. वीडियो लखीमपुर खीरी के जिलाधिकारी अंजनी कुमार सिंह तक पहुंचा और उन्होंने तुरंत एक्शन लेने का फैसला किया. कुछ ही समय बाद डीएम अंजनी कुमार सिंह खुद अधिकारियो की टीम के साथ मानवी के घर पहुंच गए. अचानक प्रशासन को अपने दरवाजे पर देखकर मानवी और उसके परिवार के चेहरे पर आश्चर्य और खुशी दोनों साफ नजर आ रहे थे डीएम ने न सिर्फ बच्ची से मुलाकात की, बल्कि उसकी बात को गंभीरता से सुना. वे मानवी को अपने साथ उस सड़क तक भी ले गए, जहां वह रोज परेशान होती थी. वहां जाकर उन्होंने खुद हालात का जायजा लिया- पानी से भरी सड़क, दबा हुआ खड़ंजा और आसपास की अव्यवस्थित स्थिति साफ दिख रही थी. इस दौरान डीएम ने तुरंत अधिकारियों को निर्देश दिए कि सड़क को ठीक कराया जाए. उन्होंने भरोसा दिलाया कि जल्द ही यहां की समस्या दूर कर दी जाएगी, ताकि न सिर्फ मानवी, बल्कि पूरे इलाके के लोगों को राहत मिल सके. मानवी सिंह की छोटी-सी अपील ने न सिर्फ समस्या का समाधान कराया, बल्कि पूरे इलाके के लोगों के लिए भी राहत का रास्ता खोल दिया. इस दौरान डीएम ने मानवी से बातचीत की. उसकी मासूमियत और आत्मविश्वास से वे प्रभावित दिखे. उन्होंने बच्ची को बिस्किट और मिठाई दी और उसे पढ़ाई में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया. डीएम अंजनी कुमार सिंह ने कहा कि यह शहर के आउटस्कर्ट का मामला है.

मुझे सोशल मीडिया के माध्यम से वीडियो मिला. इसके बाद तुरंत मैं खुद मौके पर गया. उस बच्ची से मुलाकात हुई. बच्ची के घर भी गया. मैंने उस सड़क को भी देखा, जहां पर उसने असुविधा होने की बात कही थी. उस बस्ती में अभी सुविधाओं की कुछ कमी है. जिस सड़क की बात हो रही थी, वीडियो में वहां थोड़ा पानी जमा दिख रहा है. उसमें खड़ंजा था, धीरे-धीरे वह दब गया है.

PCS अधिकारी के पति आलोक मौर्य का नए अंदाज में अलग ही मूड

महानगर मेट्रो ब्यूरो

पत्नी ज्योति मौर्या से अलग होने की खबरों के बीच पंचायती राज विभाग में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के पद पर तैनात उनके पति आलोक मौर्य इन दिनों नए अंदाज में नजर आ रहे हैं. पहले पैंट-शर्ट में दिखने वाले आलोक अब कुर्ता-पायजामा पहनकर लोगों के बीच सक्रिय हैं. उनके मुताबिक, कई लोग उन्हें चुनाव लड़ने की सलाह दे रहे हैं और उन्हें इस तरह के प्रस्ताव भी मिल रहे हैं. पढ़ाई जारी रखते हुए अब वे राजनीति में भी संभावनाएं तलाश रहे हैं.

बदलते लुक के साथ बदला नजरिया

कुछ समय पहले तक पत्नी से विवाद को लेकर चर्चा में रहे आलोक मौर्य अब एक नए रूप में सामने आ रहे हैं. पहले जहां वे सामान्य तौर पर पैंट-शर्ट में नजर आते थे, वहीं अब उनका लुक पूरी तरह बदल चुका है. सफेद कुर्ता-पायजामा, कंधे पर गमछा और लोगों के बीच सहज मौजूदगी ये सब उनके नए सार्वजनिक व्यक्तित्व का हिस्सा बनते जा रहे हैं. हाल के दिनों

में आलोक मौर्य कई जगहों पर लोगों के बीच देखे गए हैं. जहां वे खुद अपना स्वागत करवाते हैं. तो कहीं लोग उन्हें माला पहनाते नजर आते हैं. उनका कहना है कि आसपास के लोग लगातार उन्हें आगे आने और चुनाव लड़ने के लिए प्रेरित कर रहे हैं. यही वजह है कि अब वे सिर्फ निजी जीवन तक सीमित नहीं रहना चाहते, बल्कि समाज और राजनीति में भी अपनी भूमिका तलाश रहे हैं. आलोक मौर्य खुलकर स्वीकार करते हैं कि वे चुनाव लड़ सकते हैं. हालांकि उन्होंने अभी किसी एक विकल्प पर अंतिम फैसला नहीं किया है, लेकिन साफ संकेत दिया है कि वे राजनीति में कदम रखने को तैयार हैं. उनके मुताबिक, अगर उन्हें किसी भी क्षेत्र से मौका मिलता है, तो वे चुनावी मैदान में उतरने से पीछे नहीं हटेंगे. प्रतापगढ़ सहित अन्य क्षेत्रों का भी उन्होंने जिक्र किया है, जहां से चुनाव लड़ने की संभावना जताई जा रही है. बीते समय में व्यक्तिगत तनाव और विवादों के चलते आलोक मौर्य की सेहत भी प्रभावित हुई थी. उन्होंने खुद बताया कि पारिवारिक परिस्थितियों के कारण उन्हें मानसिक और शारीरिक परेशानी का सामना करना पड़ा. कुछ समय पहले वे लखनऊ के एक अस्पताल में भर्ती भी रहे. वहां से छुट्टी मिलने के बाद उन्होंने प्रयागराज में पारंपरिक आयुर्वेदिक उपचार का सहारा लिया. अब वे धीरे-धीरे स्वस्थ हो रहे हैं और सामान्य दिनचर्या में लौट रहे हैं.

पढ़ाई और तैयारी जारी

इस पूरे बदलाव के बीच आलोक मौर्य ने अपनी पढ़ाई और तैयारी को नहीं छोड़ा है. वे अब भी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में लगे हुए हैं. उनका मानना है कि शिक्षा और आत्मनिर्भरता किसी भी व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. यही वजह है कि वे एक साथ कई रास्तों पर आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं चाहे वह पढ़ाई हो या सार्वजनिक जीवन.

पुराने विवाद से नई दिशा तक

आलोक मौर्य और उनकी पत्नी के बीच का विवाद कुछ समय पहले काफी चर्चा में रहा था. यह मामला निजी दायरे से निकलकर सार्वजनिक बहस का हिस्सा बन गया था. शुरुआत साल 2010 में हुई शादी से होती है. शुरुआती साल सामान्य रहे, लेकिन समय के साथ परिस्थितियां बदलती गईं. पेशेवर जीवन में आए बदलावों के बाद दोनों के रिश्तों में दूरी बढ़ने लगी. विवाद के दौरान दोनों पक्षों की ओर से कई आरोप लगाए गए. मामला प्रशासनिक स्तर तक पहुंचा और जांच के आदेश भी दिए गए.

बैंक ऑफ बड़ौदा में जमा फंड से गायब हो गए 70 करोड़, हाई कोर्ट से दिए 217 करोड़ जमा करने के आदेश

दिल्ली हाई कोर्ट ने रिज फंड के दुरुपयोग मामले में बैंक ऑफ बड़ौदा को 217.6 करोड़ रुपये जमा करने का निर्देश दिया है।

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। सार्वजनिक पैसों के गलत इस्तेमाल के मामले में एक बड़े न्यायिक दखल के तहत, दिल्ली हाई कोर्ट ने बैंक ऑफ बड़ौदा को 217.6 करोड़ से ज्यादा की रकम अपने पास जमा करने का निर्देश दिया है। यह निर्देश तब दिया गया, जब दिल्ली रिज पहाड़ी क्षेत्र के सुधार के लिए रखे गए करीब 70.25 करोड़ 'गायब' हो गए। ये पैसे रिज मैनेजमेंट बोर्ड के थे और इन्हें खास तौर पर शहर के अहम 'ग्रीन लंग्स' यानी हरियाली वाले इलाकों की पर्यावरण सुरक्षा के लिए रखा गया था। यह विवाद तब शुरू हुआ, जब वन और वन्यजीव विभाग ने 5.25 पर्सेंट की ब्याज दर का फायदा उठाने के लिए स्टेट बैंक ऑफ इंडिया से 223 करोड़ बैंक ऑफ बड़ौदा की देशबंधु रोड ब्रांच में ट्रांसफर कर दिए। यह जमा रकम 113 फिक्स्ड डिपॉजिट रसीदों में बंटी हुई थी। हालांकि, बाद में विभाग ने आरोप लगाया कि बैंक अधिकारियों ने 'बदनीयती' से काम किया, जिसके चलते 70.25 करोड़ अवैध रूप से निकाल लिए गए।

रिज संरक्षण में लापरवाही पर कोर्ट सख्त

CBI फिलहाल इस मामले की बड़े स्तर पर हुए गबन के तौर पर जांच कर रही है। पिछली सुनवाई के दौरान, जस्टिस जसमीत सिंह ने बैंक की उन कोशिशों को खारिज कर दिया, जिनमें वह दोष वन अधिकारियों पर डालने की कोशिश कर रहा था। उन्होंने इसकी आलोचना की कि शहर का पर्यावरण लगातार बिगड़ता रहा, जबकि यह भारी रकम या तो बेकार पड़ी रही या चोरी हो गई। कोर्ट ने जोर देकर कहा कि इस पैसे का इस्तेमाल रिज के तुरंत संरक्षण के लिए किया जाना चाहिए था।

12 मई को होनी है अहम सुनवाई

30 अप्रैल को बैंक ऑफ बड़ौदा के वकील कुश शर्मा ने कोर्ट को बताया कि बैंक अगली सुनवाई से पहले रजिस्ट्रार जनरल के पास पूरी रकम 2,17,60,98,379 जमा कर देगा। यह फैसला उस पिछले आदेश के बाद आया, जिसमें 152.75 करोड़ के विवाद रहित हिस्से को सुरक्षित करने का निर्देश दिया गया था, जबकि लापता 70.24 करोड़ का मामला अभी भी चल रही आपराधिक जांच से जुड़ा हुआ है। बैंक के लिए कानूनी संकट और गहरा गया है, क्योंकि दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड ने अपने पैसों के संबंध में अलग याचिका दायर की है। 'फैसलों में टकराव' से बचने के लिए, जस्टिस रजनीश कुमार गुप्ता ने के मामले को भी उसी बेंच के पास भेज दिया है, जो वन विभाग के मामले की सुनवाई कर रही है। अब दोनों मामलों की सुनवाई 12 मई को तय की गई है।

28 लाख का कॉन्ट्रेक्ट देकर थमा दी कागज की गड्डियां, पुलिस का सहयोग न मिलने पर खुद ही दबोचा

मुंडका में एक ग्लास कारोबारी से 25 लाख रुपये की ठगी का मामला सामने आया, जिसमें असली नोटों के बीच कागज भरकर नकली गड्डियां दी गईं।

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। मुंडका के एक ग्लास कारोबारी से 28 लाख रुपये के ऑर्डर के बदले 25 लाख रुपये के कागज के नोटों की गड्डियां थमाने का मामला सामने आया है। आरोप है कि पुलिस से सहयोग नहीं मिलने पर कारोबारी ने खुद ही जाल बिछाकर दो आरोपियों को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। सराय रोहिल्ला पुलिस ने संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है। आरोपियों की पहचान धनराज भांभू और सुनील कुमार लखेसर के रूप में हुई है।

कारोबारी हिमांशु गोयल ने बताया कि वह सिलीगुड़ी में रहते हैं। मुंडका में भी ग्लास, हार्डवेयर का गोदाम है। 24 अप्रैल को एक रेगुलर कस्टमर ने 28 लाख रुपये के ग्लास, फर्नीचर व हार्डवेयर सामान के ऑर्डर किए। इस पर उन्होंने एडवांस मांगा। कस्टमर ने 28 अप्रैल को एक शख्स का मोबाइल नंबर दिया और कहा कि वह 25 लाख कैश देगा। कस्टमर ने कहा कि चार से पांच मई को ऑनलाइन पेमेंट करके उनसे नकदी वापस ले लेगा। कॉल करने पर उस शख्स ने विकासपुरी स्थित पीवीआर के सामने बुलाया। जहां उनके स्टाफ विपिन शर्मा को 25 लाख रुपये नकद दिए। गोदाम आकर देखा तो 500-500 की 10 गड्डियों के ऊपर और नीचे 500 के असली नोट थे, जबकि बीच में कागज के टुकड़े निकले। आरोप है कि इस मामले को लेकर मुंडका थाने गए, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। जालसाजी मुंडका में सामने आया मामला, कारोबारी ने खुद ही दो ठगों को पकड़कर पुलिस के हवाले किया

पीड़ित ने पुलिस पर सहयोग नहीं करने का लगाया आरोप

जाल बिछाकर आरोपी दबोचे, 35 लाख की नकली गड्डियां बरामद पीड़ित हिमांशु ने बताया कि दो मई को आरोपी को दूसरे नंबर से एक कारोबारी बनकर फोन किया। कहा कि एक कस्टमर ने ऑर्डर दिया है। आपसे रुपये लेने के लिए कहा है। आरोपी आने को तैयार हुए। जानकारी पुलिस को देकर मदद मांगी, लेकिन कोई तैयार नहीं हुआ। कुछ दोस्तों के साथ शास्त्री नगर मेट्रो स्टेशन के नीचे गए। जहां से दोनों आरोपियों को पकड़कर पुलिस को सौंपा। आरोपियों के पास से पुलिस ने 35 लाख रुपये जितनी दिखने वाली कागज की गड्डियां बरामद की हैं। कारोबारी ने बताया कि उनका कस्टमर असली है। उन्होंने जिसे रुपये देने को कहा था, उन्होंने उनके साथ फ्रॉड किया है।

महानगर मेट्रो
www.mahanagarmetro.com

जिस जमीन पर बना है सरकारी अस्पताल, उसके मालिक रह रहे झोपड़ी में, कलेक्ट्रेट पहुंचे नेत्रहीन बेटे ने सुनाई खरी-खरी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

गुना। कलेक्ट्रेट में मंगलवार को आयोजित जनसुनवाई में उस समय अधिकारी भी सन्न रह गए, जब विजयपुर से आए एक नेत्रहीन दिव्यांग ने अपनी पीड़ा बयां की। दरअसल राघौगढ़ तहसील के विजयपुर निवासी पप्पू प्रजापति ने अपनी व्यथा सुनाते हुए बताया कि उसके पास करीब पौने तीन बीघा जमीन का पट्टा तो है, लेकिन हकीकत में उस जमीन पर आज सरकारी इमारतों का कब्जा है और वह खुद एक झोपड़ी में रहने को मजबूर है।

जमीन पर सरकारी अस्पताल और टंकी

पप्पू ने बताया कि उसके पिता स्व. कैलाश नारायण कुम्हार को वर्ष 1984 में सर्वे क्रमांक 685/1 पर पट्टा मिला था। पिता की मानसिक स्थिति ठीक न होने के कारण वे कभी कब्जा नहीं ले पाए। अब स्थिति यह है कि उस जमीन पर शासकीय स्कूल, अस्पताल और नगरपालिका की पानी की टंकी बन चुकी है। शासन ने जमीन का उपयोग तो कर लिया, लेकिन पीड़ित परिवार को न तो मुआवजा दिया और न ही कहीं और जमीन आवंटित की। नेत्रहीन पीड़ित का आरोप है कि जो जमीन खाली बची थी, उसे गांव के ही पुरुषोत्तम धाकड़ सहित अन्य लोगों ने षडयंत्रपूर्वक अपने नाम करा लिया और वहां बाड़ा बनाकर पशुपालन कर रहे हैं। पीड़ित ने भावुक होते हुए कहा, 'मैं अंधा हूं, मुझे कलेक्ट्रेट तक आने के लिए भी दूसरों का सहारा लेना पड़ता है। पिता के जाने के बाद मैं और मेरी मां झोपड़ी में रह रहे हैं और मांगकर अपना पेट पाल रहे हैं।' पप्पू ने कलेक्टर से मांग की है कि प्रशासन या तो उसे उतनी ही जमीन दूसरी जगह दिलाए या फिर उसकी जमीन पर हुए सरकारी निर्माण का उचित मुआवजा प्रदान करे। जनसुनवाई में मौजूद अधिकारियों ने मामले को गंभीरता से लेते हुए संबंधित विभाग को जांच कर उचित कार्यवाही के निर्देश दिए हैं।

थैलीसीमिया से पीड़ित बच्चों को चढ़ा दिया HIV+ खून, 5 महीने बाद जागी सरकार, ज्वॉइंट टास्क फोर्स का गठन

महानगर मेट्रो ब्यूरो

सतना। मध्य प्रदेश के सतना जिले से मानवता को शर्मसार करने वाली खबर सामने आई है। थैलेसीमिया से जूझ रहे छह मासूम बच्चों को ब्लड ट्रांसफ्यूजन के दौरान ॥ IV संक्रमित खून चढ़ा दिया गया। हैरानी की बात यह है कि इस घटना के पांच महीने बीत जाने के बाद भी प्रशासन उस गुनहगार डोनर को नहीं ढूंढ पाया है, जिसकी एक लापरवाही ने इन बच्चों की जिंदगी दांव पर लगा दी।

टास्क फोर्स के जिम्मे जांच

मामले की गंभीरता को देखते हुए प्रदेश सरकार ने अब एक जॉइंट टास्क फोर्स का गठन किया है। सीएमएचओ डॉ. मनोज शुक्ला की अगुवाई वाली इस टीम में जिला अस्पताल, ब्लड बैंक, स्टेट एड्स कंट्रोल सोसायटी और एफडीए के अफसरों को शामिल किया गया है। यह टीम न केवल डोनर की तलाश करेगी, बल्कि ब्लड बैंक के पूरे सिस्टम की खामियों को भी खंगालेगी।

फर्जी नंबर और दलालों का जाल

जांच में अब तक जो सामने आया है, वो डराने वाला है। अधिकारियों के मुताबिक ब्लड बैंक के रजिस्टर में दर्ज आधे से ज्यादा डोनर्स का कोई अता-पता नहीं है। जो नंबर दिए गए थे, उनमें से कई गलत या बंद निकले। पिछले साल दिसंबर में हुए एक खुलासे में पता चला था

82 साल के दादा बने 'शक्तिमान', जंगल में तेंदुए ने गर्दन पर किया हमला तो कान पकड़कर डंडे से पीट दिया

महानगर मेट्रो ब्यूरो

पन्ना। जिले में 82 साल के बुजुर्ग ने गजब की बहादुरी दिखाई है। उनकी चर्चा खूब हो रही है। वह जंगल में गए तो एक तेंदुए ने उनकी गर्दन पर हमला कर दिया लेकिन बाबा डरे नहीं। उन्होंने तेंदुए का कान पकड़कर मरोड़ दिया। साथ ही डंडे से पिटाई कर दी है। इस दौरान बुजुर्ग शख्स का हाथ जख्मी हो गया है।

भैंस ढूंढने गए थे जंगल

दरअसल, यह पूरा मामला पन्ना जिले के पवई वन परिक्षेत्र के नारदपुर गांव की है। 82 वर्षीय अर्जुन सिंह अपनी भैंस को ढूंढने जंगल गए थे। जंगल में भैंस ढूंढ रहे थे, तभी पहले से घात लगाए तेंदुए ने उन पर हमला कर दिया। तेंदुआ उनकी गर्दन पर झपटा मार रहा था लेकिन वह डरे नहीं। उन्होंने डटकर तेंदुए का मुकाबला किया।

कान पकड़कर पीट दिया

बुजुर्ग अर्जुन सिंह ने साहस दिखाते हुए तेंदुए से मुकाबला दिया। इस उम्र में उन्होंने शक्तिमान जैसी फुर्ति दिखाई। उन्होंने तुरंत तेंदुए का कान पकड़ लिया। साथ ही इसे मरोड़ दिया। इसके बाद दूसरे हाथ में मौजूद डंडे से पिटाई शुरू कर दी।

पांच मिनट में भाग खड़ा हुआ तेंदुआ

दोनों के बीच करीब पांच मिनट तक संघर्ष चला है। बुजुर्ग के हौसले को देखते हुए तेंदुए ने हार मान ली। इसके बाद वह वहां जंगल की ओर भाग खड़ा हुआ। हालांकि तेंदुए के साथ भिड़ंत में बुजुर्ग अर्जुन सिंह घायल हो गए हैं।

सावधानी बरतने की है जरूरत

जंगल में जाने के दौरान सावधान रहने की जरूरत है
जंगली जानवरों के हमले में लोगों की चली जाती हैं जानें
गांवों के करीब भी रहता है जानवरों का मूवमेंट

इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया

अर्जुन सिंह का हाथ बुरी तरह से जख्मी हो गया। उन्हें प्राथमिक उपचार के लिए अस्पताल ले जाया गया। यहां से उनकी स्थिति को देखते हुए पन्ना जिला अस्पताल रेफर किया गया, जहां इलाज चल रहा है।
उस इलाके में तेंदुए की मौजूदगी से वन विभाग की टीम उस इलाके में सक्रिय हो गई है।
गौरतलब है कि वन विभाग ने कहा है कि बुजुर्ग की हर संभव मदद की जाएगी। इलाके में लोगों को सतर्क रहने के लिए कहा गया है। जंगल होने की वजह से पवई क्षेत्र में जंगली जानवरों की उपस्थिति रहती है।

नागपुर पुलिस का छापाः मुख्य आरोपी पद्मिनी बसु गिरफ्तार, एक युवती रेस्क्यू

आलीशान बंगले में चल रहे सेक्स रैकेट का भंडाफोड़

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नागपुर। महाराष्ट्र राज्य एके नागपुर में पुलिस ने आलीशान बंगले में चल रहे सेक्स रैकेट का भंडाफोड़ किया है. मुख्य आरोपी महिला को गिरफ्तार किया गया है और एक युवती को रेस्क्यू किया गया है. यह कार्रवाई ऑपरेशन शक्ति के तहत की गई. पुलिस अब इस रैकेट से जुड़े अन्य लोगों की तलाश में जुटी है. नागपुर में पुलिस ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए आलीशान बंगले में चल रहे सेक्स रैकेट का भंडाफोड़ किया है.

यह कार्रवाई क्राइम ब्रांच की सामाजिक सुरक्षा विभाग की टीम ने मंगलवार को हुडकेश्वर थाना क्षेत्र में की. इस दौरान एक पीड़ित युवती को रेस्क्यू किया गया और मुख्य आरोपी महिला को गिरफ्तार कर लिया गया. पुलिस के अनुसार इस रैकेट को चलाने वाली महिला की पहचान पद्मिनी गुलशन बसु के रूप में हुई है. आरोपी महिला ने किसी को शक न हो, इसके लिए एक आलीशान बंगला किराए पर लिया हुआ था. इसी बंगले के भीतर देहव्यापार का पूरा नेटवर्क संचालित किया जा रहा था. जांच में सामने आया है कि आरोपी महिला गरीब और जरूरतमंद युवतियों को कम समय में ज्यादा पैसे कमाने का लालच देती थी. इसके बाद उन्हें देहव्यापार में धकेल दिया जाता था. पुलिस का कहना है कि यह काम काफी समय से चल रहा था और इसे बेहद गोपनीय तरीके से अंजाम दिया जा रहा था. इस पूरे मामले का खुलासा तब हुआ जब क्राइम ब्रांच की सामाजिक सुरक्षा विभाग की टीम को गुप्त सूचना मिली. सूचना के आधार पर टीम ने योजना बनाकर छापा मारा और मौके से एक युवती को सुरक्षित बाहर निकाला. साथ ही आरोपी महिला को गिरफ्तार कर लिया गया.

क्राइम ब्रांच की छापेमारी, महिला आरोपी गिरफ्तार

यह कार्रवाई नागपुर पुलिस द्वारा चलाए जा रहे ऑपरेशन शक्ति अभियान के तहत की गई है. इस अभियान का उद्देश्य मानव तस्करी और देहव्यापार जैसे अपराधों पर रोक लगाना है. पुलिस लगातार ऐसे अड्डों पर नजर रख रही है और कार्रवाई कर रही है. मामले में पुलिस ने आरोपी महिला के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया है. आगे की जांच जारी है और यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि इस रैकेट में और कौन-कौन लोग शामिल हैं.

ऑपरेशन शक्ति के तहत पुलिस की बड़ी कार्रवाई

इस संबंध में सामाजिक सुरक्षा विभाग के इंस्पेक्टर राहुल राहुल शिरे ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर यह कार्रवाई की गई है. उन्होंने कहा कि पीड़ित युवती को सुरक्षित रेस्क्यू कर लिया गया है और आरोपी महिला के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जा रही है. पुलिस का कहना है कि शहर में ऐसे अवैध गतिविधियों के खिलाफ अभियान आगे भी जारी रहेगा और दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा.

कृपया ध्यान दें! सात मई को छह घंटे के लिए बंद रहेगा मुंबई एयरपोर्ट, जान लीजिए वजह

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मुंबई। अगर आप कल यानी 7 मई को फ्लाइट से मुंबई जाने वाले हैं तो यह सूचना आपके लिए है।
7 मई को मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज इंटरनेशनल एयरपोर्ट से कोई फ्लाइट न तो उड़ान भरेगी और न ही बाहर से आने वाली फ्लाइट लैंड करेगी। गुरुवार को मुंबई एयरपोर्ट के रनवे पर सन्नाटा ही पसरा रहेगा क्योंकि मॉनसून से पहले होने वाले बड़े मेंटेनेंस के लिए मेन रनवे और सेकेंडरी रनवे को गुरुवार सुबह 11:00 बजे से शाम 5:00 बजे तक के लिए बंद किया गया है।

छह महीने पहले ही बना लिया था प्लान

मुंबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड के अनुसार, 7 मई को रनवे मेटिनेंस के लिए एयरपोर्ट बंद करने का प्लान 6 महीने पहले बना लिया गया था। सभी घरेलू और इंटरनेशनल एयरलाइंस को इस बारे में सूचना दे दी गई थी। अधिकतर एयरलाइंस ने अपने शेड्यूल पहले ही बदल लिए हैं। फिर भी मुंबई आने-जाने वाले सैकड़ों यात्रियों को फ्लाइट रद्द होने, देरी होने और रूट बदलने जैसी दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। एयरलाइंस फ्लाइट का रूट बदलकर उन्हें पुणे, अहमदाबाद और गोवा जैसे आस-पास के एयरपोर्ट पर भेज सकती हैं। अपनी फ्लाइट का स्टेटस जानने के लिए अभी अपनी एयरलाइन का ऐप या CSMIA की वेबसाइट देखें।

देश का सबसे व्यस्त हवाई अड्डा

मुंबई का छत्रपति शिवाजी महाराज अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से प्रतिदिन औसतन 950 से 1,000 से अधिक उड़ानें (टेक-ऑफ और लैंडिंग मिलाकर) संचालित होती हैं। नवंबर 2025 में इस हवाई अड्डे ने 24 घंटे में 1,036 उड़ानों के साथ एक नया रिकॉर्ड बनाया था,
जो इसे दुनिया का सबसे व्यस्त सिंगल-रनवे हवाई अड्डा बनाता है। मुंबई एयरपोर्ट के बोझ को कम करने के लिए ही नवी मुंबई में एक दूसरा एयरपोर्ट बनाया गया है। इसका प्रबंधन भी अडानी समूह के पास ही है।
सात मई को एयरपोर्ट छह घंटे बंद रहने के बाद प्री-मानसून वर्क को पूरा किया जाएगा ताकि बारिश के मौसम में एयरपोर्ट से उड़ानें के संचालन में दिक्कत नहीं आए।

HDFC Bank CEO Sashidhar Jagdishan के खिलाफ FIR खारिज, बॉम्बे हाई कोर्ट से लीलावती ट्रस्ट केस में बड़ी राहत

बॉम्बे हाई कोर्ट ने मंगलवार को HDFC बैंक के एमडी और सीईओ शशिधर जगदीशन के खिलाफ दर्ज रिश्वतखोरी का मामला रद्द कर दिया है। यह केस लीलावती कीर्तिलाल मेहता मेडिकल ट्रस्ट ने दर्ज कराया था

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मुंबई। बॉम्बे हाई कोर्ट ने मंगलवार को ॥ष्टपत्रिकाष्ट बैंक के मैनेजिंग डायरेक्टर और ष्टश्वह्र शशिधर जगदीशन के खिलाफ दर्ज FIR रद्द कर दी। यह FIR लीलावती कीर्तिलाल मेहता मेडिकल ट्रस्ट की शिकायत पर आधारित थी, जो मुंबई के बांद्रा इलाके में लीलावती अस्पताल चलाता है। जस्टिस स्रू कर्णिक और ह्म्बोरकर की डिवीज़न बेंच ने जगदीशन की FIR रद्द करने की अपील मंज़ूर कर ली और मजिस्ट्रेट कोर्ट के 29 मई, 2025 के उस आदेश को भी रद्द कर दिया, जिसमें पुलिस जांच का निर्देश दिया गया था। कोर्ट ने अपने 53 पन्नों के आदेश में कहा कि हमारी राय में, यह शिकायत वसूली की कार्रवाई के जवाब में की गई एक जवाबी कार्रवाई के अलावा और कुछ नहीं है। रिकॉर्ड पर मौजूद सबूत शिकायतकर्ता के दावों की जांच को बिल्कुल भी सही नहीं ठहराते।

कोर्ट ने बताया घोर दुरुपयोग

कोर्ट ने अपने आदेश में आगे कहा कि हमारा मानना है कि निचली अदालत का यह आदेश आपराधिक प्रक्रिया का घोर दुरुपयोग है। यह पूरी तरह से दीवानी मामलों और वसूली की कार्रवाई पर आधारित है, जिन्हें DRT (ऋण वसूली न्यायाधिकरण) और इस कोर्ट के आदेशों के ज़रिए पहले ही अंतिम रूप दिया जा चुका है।

शिकायत करनेवाले परिवार पर 65 करोड़ का कर्ज

कोर्ट के आदेश से पहले, सीनियर एडवोकेट अमित देसाई और Singhi & Co. के संदीप सिंघी ने जगदीशन की ओर से पेश होकर दलील दी कि यह FIR, HDFC बैंक द्वारा शिकायतकर्ता के परिवार के खिलाफ शुरू की गई लंबे समय से चल रही वसूली और कानूनी कार्रवाई का ही नतीजा है। शिकायतकर्ता परिवार पर 65 करोड़ रुपये से ज़्यादा की बड़ी रकम न चुकाने का आरोप है। हम जांच के बहुत शुरुआती दौर में ही दखल दे रहे हैं,

जिसके बारे में सुप्रीम कोर्ट ने चेतावनी दी है कि इस कोर्ट को ऐसा करने में बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। लेकिन रिकवरी की कार्रवाई में जिस तरह से साफ तौर पर निजी दुश्मनी झलक रही है, उसे हम दखल देने का एक ठोस कारण मानते हैं। इन तथ्यों और हालात को देखते हुए अगर जांच जारी रहती है, तो यह कोर्ट की प्रक्रिया का गलत इस्तेमाल करने के अलावा और कुछ नहीं होगा। बॉम्बे हाई कोर्ट

क्या है लीलावती ट्रस्ट आरोप

ट्रस्ट ने आरोप लगाया था कि उसके एक ट्रस्टी से जुड़ी एक कंपनी के लोन की वसूली की कार्रवाई के दौरान मिली एक डायरी में जगदीशन को कुल 2.05 करोड़ रुपये के भुगतान का ज़िक्र है। आरोप है कि यह भुगतान चेतन मेहता के कहने पर किया गया था।

संजय राउत बोले- ममता बनर्जी का इस्तीफा न देना सही, पूर्व CJI चंद्रचूड़ के महाराष्ट्र वाले फैसले का किया जिक्र

सांसद संजय राउत ने कहा कि पश्चिम बंगाल की निवर्तमान मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी की बात नहीं सुनकर और उनसे गठबंधन के संबंध में वार्ता ना करके 'बड़ी गलती' की, वर्ना विधानसभा चुनाव के नतीजे कुछ और होते।

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मुंबई। बंगाल में ममता बनर्जी के इस्तीफा न देने के ऐलान के बाद नई बहस छिड़ गई है। बीजेपी समेत समर्थित दल ममता बनर्जी पर निशाना साध रहे हैं। वहीं अब शिवसेना के सांसद संजय राउत ममता बनर्जी के समर्थन में उतर आए हैं। उन्होंने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के BJP पर लोकतांत्रिक प्रक्रिया को लूटने के हालिया बयान का समर्थन किया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि चुनावों में चुनाव आयोग की भूमिका सवालों के घेरे में थी। संजय राउत ने महाराष्ट्र, उद्धव ठाकरे और पूर्व चीफ जस्टिस चंद्रचूड़ के एक फैसले का जिक्र किया। संजय राउत ने कहा कि ममता बनर्जी का इस्तीफा न देने का फैसला पूरी तरह से सही है। CJI चंद्रचूड़ के 'उद्धव ठाकरे बनाम महाराष्ट्र सरकार' मामले में दिए गए फैसले के अनुसार, अदालत ने उद्धव ठाकरे को उनके पद पर बहाल नहीं किया, क्योंकि उन्होंने खुद ही इस्तीफ़ा दे दिया था।

संजय राउत ने पुराने केस का किया जिक्र

संजय राउत तब का जिक्र कर रहे थे, जब महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे की सरकार थी। एकनाथ शिंदे की बगावत के बाद उन्होंने इस्तीफा दे दिया था और मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा था। कोर्ट ने स्पष्ट किया था कि चूंकि उद्धव ठाकरे ने स्वेच्छा से सीएम पद से इस्तीफा दे दिया था इसलिए कोर्ट पुरानी स्थिति बहाल नहीं कर सकती।

पूर्व CJI चंद्रचूड़ ने क्या कहा था?

मामले में तत्काल सीजेआई ने कहा था कि अगर उद्धव ठाकरे ने फ्लोर टेस्ट से पहले इस्तीफा न दिया होता तो सुप्रीम कोर्ट उनकी सरकार को वापस बहाल करने के लिए कोई राहत दे सकता था। संजय राउत ने विधानसभा चुनावों में धांधली और मतदाताओं के नाम काटे जाने के बारे में बनर्जी के दावों को सही माना। उन्होंने कहा कि सत्ता में रहते हुए या विपक्ष में रहते हुए भी उनका लगातार विरोध करना, अन्याय के खिलाफ उनके मज़बूत रुख को दिखाता है।

संजय राउत बोले- सच बोल रहीं ममता बनर्जी

संजय राउत ने बनर्जी के इस्तीफा न देने के फैसले का भी समर्थन किया और इसे उनकी नैतिक जीत बताया। ममता बनर्जी ने कहा, मैंने उसे सुना और समझा है। ममता बनर्जी ने सबसे पहली बात यह कही कि चुनाव आयोग ही असली 'विलेन' (खलनायक) है, और उसी विलेन ने चुनाव जीता है... उनका कहना है कि 100 विधानसभा सीटों पर धांधली हुई है; यह सच है। यह भी सच है कि लाखों लोगों के नाम वोटर लिस्ट से काट दिए गए। ममता बनर्जी ने ये सारी बातें बिल्कुल सच कही हैं। ममता दीदी का कहना है कि वह इस्तीफ़ा नहीं देंगी, क्योंकि उन्हें एक नैतिक जीत मिली है। ममता दीदी हमेशा से ही एक 'आंदोलन' की तरह रही हैं, चाहे वह मुख्यमंत्री हों, सत्ता में हों, या विपक्ष में। मुख्यमंत्री रहते हुए भी, ममता दीदी ने कई बार केंद्र सरकार के खिलाफ सड़कों पर उतरकर विरोध प्रदर्शन किया है।

नागपुर में साइबर थाने के इंस्पेक्टर सहित 9 पुलिसकर्मी सस्पेंड, ऑनलाइन सट्टेबाजी से जुड़े मामले में एक्शन

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नागपुर। में साइबर पुलिस थाने से जुड़ा एक बड़ा मामला सामने आया है, जिसमें विभागीय स्तर पर सख्त कार्रवाई की गई है. यहां थाना इंचार्ज समेत कुल 9 पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया गया है. यह कार्रवाई ऑनलाइन सट्टा और धोखाधड़ी से जुड़े एक मामले में संदिग्ध भूमिका और आरोपी से आर्थिक लेनदेन के आरोपों के बाद हुई है. जानकारी के अनुसार, ऑनलाइन बेटिंग रैकेट से जुड़े मामले की जांच के दौरान सामने आया कि साइबर थाने के कुछ अधिकारी और कर्मचारी आरोपी के संपर्क में थे. आरोप है कि इन लोगों के बीच करोड़ों रुपये के लेनदेन हुए. मामला सामने आने के बाद सीनियर अधिकारियों की देखरेख में जांच शुरू की गई. जांच के दौरान संबंधित पुलिसकर्मियों के बयान दर्ज किए गए और साक्ष्यों के आधार पर एक रिपोर्ट तैयार कर पुलिस कमिश्नर को सौंपी गई. रिपोर्ट में आरोपों की गंभीरता को देखते हुए पुलिस कमिश्नर रविंद्र सिंगल ने एक्शन लिया. उन्होंने 2 इंस्पेक्टर, 1 एपीआई और 6 कॉन्स्टेबल को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया. निलंबित किए गए पुलिसकर्मियों में बलिराम सुतार, योगेश घारे, विजय राणे, प्रफुल्ल ठाकरे, सतीश वाघ, श्रीकांत गोनेकर, सुशील चंगोले, अजय पवार और सौरभ हीवरकर के नाम शामिल हैं. जब इस पूरे मामले की जांच की गई तो पाया गया कि ऑनलाइन सट्टा कारोबार से जुड़े मामले में कुछ अधिकारियों और कर्मचारियों की भूमिका संदिग्ध थी. आरोपी से करोड़ों रुपए के आर्थिक लेनदेन का मामला सामने आया था, जिसके बाद वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के नेतृत्व में जांच हुई थी. इस मामले में शहर के साइबर पुलिस थाने के अंदर पहले से ही आपसी विवाद और तनाव चल रहा था. कुछ दिनों पहले एक अधिकारी और कर्मचारी के बीच विवाद भी हो गया था.

उमरियाः कोयला खदान के कोयले में जेसीबी से मिला रहे मिट्टी, पीएम तक पहुंची मिलावट और घोटाले की शिकायत

महानगर मेट्रो ब्यूरो

उमरिया। जिले की साउथ ईस्टर्न कोल फील्ड्स लिमिटेड जोहिला क्षेत्र अंतर्गत आने वाली नौरोजाबाद कोल माइंस एक बार फिर गंभीर आरोपों के चलते सुर्खियों में है। सुर्खियों में आने का कोई साधारण मामला नहीं है बल्कि घोर अनियमितता का है। वह भी कोयले में मुरूम (मिट्टी) मिलाकर वजन बढ़ाने और करोड़ों रुपये के कथित घोटाले का है। इस पूरे मामले को लेकर पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष उमरिया दिलीप पांडे ने सीधे भारत सरकार के कोयला एवं खान मंत्री को शिकायत भेजते हुए उच्चस्तरीय जांच की मांग की है।

जेसीबी मशीनों से मिलाई जा रही मिट्टी

शिकायत में आरोप लगाया गया है कि कोल माइंस में खुलेआम जेसीबी मशीनों के जरिए कोयले में मिट्टी मिलाई जा रही है। इसके बाद इस मिलावटी कोयले को बिना किसी गुणवत्ता परीक्षण के रेल्वे के माध्यम से रैक में लोड कर देशभर में सप्लाई किया जा रहा है। यदि ये आरोप सही पाए जाते हैं, तो यह न केवल आर्थिक नुकसान का बड़ा मामला है, बल्कि पूरी सप्लाई चेन की विश्वसनीयता पर भी सवाल खड़े करता है।

बिलासपुर के अधिकारियों की भी मिलीभगत

दिलीप पांडे ने अपने पत्र में स्पष्ट रूप से कहा है कि यह कार्य किसी एक व्यक्ति का नहीं हो सकता, बल्कि इसमें कई अधिकारियों की मिलीभगत की आशंका है। विशेष रूप से साइड इंचार्ज और सेल्स मैनेजर की भूमिका को संदिग्ध बताया गया है। इसके साथ ही बिलासपुर जोन के अधिकारियों की संलिप्तता को लेकर भी गंभीर सवाल उठाए गए हैं।

सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो

इस संबंध में जो वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं, वह इस पूरे मामले को और भी गम्भीर बना रहा है, जिनमें कथित रूप से मिलावट की प्रक्रिया दिखाई दे रही है। इसके बावजूद अब तक किसी प्रकार की ठोस कार्रवाई नहीं होना कोल माइंस प्रबंधन की निष्क्रियता या संरक्षण की ओर इशारा करता है। इस कथित घोटाले का असर केवल सरकारी राजस्व तक सीमित नहीं है। शिकायत में यह भी उल्लेख किया गया है कि मिलावटी कोयला अन्य प्रदेशों में संचालित उद्योगों तक पहुंच रहा है, जिससे मशीनों को नुकसान, उत्पादन क्षमता में गिरावट और आर्थिक हानि जैसी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। यह स्थिति देश की औद्योगिक व्यवस्था पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। मेरे को इस बारे में कोई जानकारी नहीं है और न ही कोई शिकायत प्राप्त हुई है, मैं दिखवा लेता हूं। सुरेन्द्र सिंह चौहान, तरू साउथ ईस्टर्न कोल फील्ड्स लिमिटेड (जोहिला एरिया) शिकायत में ये हैं

घाटे से उबरने की कोशिशः भोपाल-इंदौर मेट्रो अब 'प्री वेडिंग शूट, बर्थडे सेलिब्रेशन से करेगी कमाई

महानगर मेट्रो ब्यूरो

भोपाल। मध्य प्रदेश के भोपाल और इंदौर मेट्रो में लगातार घटती सवारी और बढ़ते घाटे के बीच भोपाल और इंदौर मेट्रो ने कमाई का नया रास्ता तलाश लिया है. अब मेट्रो सिर्फ सफर का जरिया नहीं रहेगी, बल्कि जश्न का प्लेटफॉर्म भी बनेगी. मेट्रो रेल कॉरपोरेशन ने 'सेलिब्रेशन ऑन व्हील्स' पहल शुरू की है, जिसके तहत प्री-वेडिंग शूट, फिल्म शूटिंग और बर्थडे सेलिब्रेशन जैसे आयोजन मेट्रो परिसर में किए जा सकेंगे. मेट्रो मैनेजमेंट को उम्मीद है कि इससे अतिरिक्त राजस्व जुटाने में मदद मिलेगी. इसके लिए लोगों को एक घंटे के हिसाब से 5-7 हजार रुपए तक खर्च करने होंगे. बुकिंग करीब 15 दिन पहले करानी होगी. तय नियमों और टाइमिंग का सख्ती से पालन करना होगा.

सुरक्षा और अनुशासन को ध्यान में रखते हुए कुछ पाबंदियां भी तय की गई हैं. मेट्रो परिसर में शराब, बीड़ी-सिगरेट और पटाखों पर पूरी तरह मनाही रहेगी. आयोजन में शामिल होने से पहले सभी लोगों की स्टेशन पर जांच की जाएगी. भोपाल मेट्रो का उद्घाटन 20 दिसंबर 2025 को हुआ था और 21 दिसंबर से इसे आम यात्रियों के लिए खोला गया था. शुरुआती दिनों में यात्रियों की अच्छी खासी तादाद देखने को मिली, लेकिन वक्त के साथ फुटफॉल में गिरावट आई. ऐसे में अब मेट्रो एडमिनिस्ट्रेशन ने कमाई बढ़ाने के लिए यह नया प्रयोग शुरू किया है.

डभोई के साठोड़ में सनसनी: गांव की सीमा में एक अनजान अधेड़ उम्र के आदमी की सड़ी-गली लाश मिली, मर्डर या सुसाइड?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

फकीरा खत्री। डभोई तालुका का साठोड़ गांव आज एक भयानक घटना से दहल गया। गांव की सीमा में एक अनजान अधेड़ उम्र के आदमी की लाश बहुत सड़ी-गली और बदबूदार हालत में मिली, जिससे पूरे इलाके में हड़कंप मच गया। घटना की खबर मिलते ही डभोई पुलिस का एक काफिला मौके पर पहुंचा और रहस्यमयी मौत के राज से पर्दा उठाने के लिए जांच शुरू कर दी। प्रवीणभाई कनुभाई डोडिया का खेत साठोड़ से पिसाई गांव जाने वाली सड़क पर है। आज गांव की सीमा में अपने रोज़ाना के काम से लौट रहे मज़दूर खेत के शेड से आ रही बहुत ज़्यादा बदबू देखकर चौंक गए। जब मज़दूर जांच कर रहे थे, तो उन्हें वहां एक अनजान व्यक्ति की लाश पड़ी मिली। बॉडी इतनी सड़ चुकी थी कि उसकी पहचान करना मुश्किल था। पुलिस की कार्रवाई और जांच के पॉइंट घटना की सूचना मिलते ही डभोई पुलिस मौके पर पहुंची और बॉडी को अपने कब्जे में ले लिया।

डभोई के 60 गांवों में 'गुजरात मॉडल': टूटे-फूटे बस स्टेशनों के नीचे मौत का साया, यात्री दहशत में!

महानगर मेट्रो ब्यूरो

फकीरा खत्री। एक तरफ सरकार गुजरात को दुनिया के सामने 'मॉडर्न' और 'मॉडल स्टेट' के तौर पर पेश कर रही है, वहीं दूसरी तरफ स्ज्ञ सिस्टम की बड़ी लापरवाही का एक खुला उदाहरण डभोई तालुका के ग्रामीण इलाकों में देखने को मिल रहा है। तालुका के 118 गांवों में से 60 से ज़्यादा गांवों में बस स्टैंड की हालत ऐसी है कि वहां बैठना मतलब अपनी जान हथेली पर रखना है! टूटी-फूटी हालतः सीमेंट नहीं, बल्कि छत से 'मौत' की परतें गिर रही हैं! तालुका के आधे से ज़्यादा गांवों में बस स्टैंड सिर्फ़ नाम के लिए हैं। चिलचिलाती गर्मी में यात्रियों को छांव देने के बजाय ये बस स्टेशन खतरनाक साबित हो रहे हैं। छत से सीमेंट की परतें लगातार उखड़ रही हैं और डर है कि कभी भी कोई बड़ा हादसा हो सकता है।

2 करोड़ की नहर में 'आटा, पानी और लकड़ी', अर्जुन सिंह चौहान खुद मैदान में उतरे और खोली पोल!

महानगर मेट्रो ब्यूरो

खेड़ा। गुजरात में भ्रष्टाचार के कंस्ट्रक्शन पर नेताओं के खुद 'हथौड़ा' चलाने के सीन सामने आए हैं। खेड़ा जिले के मेहमदाबाद से MLA अर्जुन सिंह चौहान को जैसे ही माही सिंचाई विभाग की माइनर नहर के काम में भ्रष्टाचार की बू आई, उन्होंने आंखें मूंद लीं। 2 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाली इस नहर की मजबूती की पोल MLA के हथौड़े ने खोल दी है।

हर तरफ हथौड़ा और भ्रष्टाचार!

किसानों ने शिकायत की थी कि मेहमदाबाद पंथक में सिंचाई के लिए हो रहे नहर के काम में घटिया मटीरियल इस्तेमाल किया जा रहा है। MLA अर्जुन सिंह चौहान बिना किसी अधिकारी का इंतजार किए खुद मौके पर पहुंच गए और हथौड़े से नहर का लेवल चेक करने लगे। जैसे ही उन्होंने हथौड़ा मारा, नहर की परत उखड़ने लगी और सीमेंट के नाम पर सिर्फ रेत निकलने लगी!

2 करोड़ के बजट में सिर्फ़ लीपापोती? जिस नहर पर सरकार किसानों के फ़ायदे के लिए 2 करोड़ खर्च कर रही है, उसमें ठेकेदारों और मिलीभगत करने वाले अधिकारियों ने कोई कसर नहीं छोड़ी है। MLA की इस हरकत से यह साबित हो गया है कि:

- नहर के लेवल में काफ़ी सीमेंट का इस्तेमाल नहीं किया गया है।
- सिर्फ़ ऊपर से फ़िनिशिंग देकर अंदर भ्रष्टाचार का घोंसला भर दिया गया है।
- यह नहर ऐसी हालत में है कि मानसून में पानी छोड़े जाने से पहले ही टूट जाएगी।

MLA का सख्त रवैया: 'भ्रष्टाचारियों को बख्शा नहीं जाएगा घटनास्थल पर अधिकारियों को आड़े हाथों लिया था। उन्होंने साफ़ चेतावनी दी है कि किसानों के पैसे की बर्बादी और सरकारी काम में ऐसी लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इस मामले की हाई-लेवल जांच और ज़िम्मेदार ठेकेदार और सुपरवाइज़िंग इंजीनियर के ख़िलाफ़ सख्त कार्रवाई की मांग की गई है।

मध्य प्रदेश में गहराया भू-जल संकटः मालवा-बुंदेलखंड में हजार फीट पर भी धूल

नई दिल्ली (एजेंसी)। सेंट्रल ग्राउंड वाटर बोर्ड (सीजीडब्ल्यूबी) की ताजा रिपोर्ट ने मध्य प्रदेश के भू-जल स्तर की भयावह स्थिति पर गंभीर चिंता जाहिर की है। रिपोर्ट के अनुसार, प्रदेश के कई प्रमुख क्षेत्रों में भू-जल का दोहन खतरनाक स्तर तक पहुंच गया है, जिससे भविष्य में पानी का विकट संकट खड़ा होने की आशंका है।

मालवा क्षेत्र, अपनी उपजाऊ मिट्टी के लिए प्रसिद्ध, अब भू-जल खत्म होने की कगार पर पहुंच गया है। विशेष रूप से उज्जैन जिले की स्थिति बेहद गंभीर है, जहां कुछ ब्लॉकों में भू-जल रिचार्ज से कहीं अधिक 144 प्रतिशत तक निकाला जा रहा है। उज्जैन के सभी छह ब्लॉक रेड अलर्ट श्रेणी में हैं। राजधानी भोपाल में भी भू-जल का दोहन 80 प्रतिशत के पार निकल गया है, और इसके तीनों ब्लॉक सेमी-क्रिटिकल श्रेणी में हैं, जिसका सीधा अर्थ है कि भू-जल का उपयोग रिचार्ज की तुलना में कहीं अधिक हो रहा है।

बुंदेलखंड क्षेत्र भी गहरे जल संकट का सामना कर रहा है। टीकमगढ़ के सभी ब्लॉक तेजी से रेड ज़ोन की ओर बढ़ रहे हैं, जबकि टीकमगढ़ और छतरपुर के आधे हिस्सों में भू-जल का अंधाधुंध दोहन भविष्य के लिए बड़ा संकट खड़ा कर रहा है। भू-जल अधिकारियों का कहना है कि 70 प्रतिशत से अधिक भू-जल का इस्तेमाल नहीं होना चाहिए; इससे अधिक उपयोग ब्लॉक को असुरक्षित श्रेणी में डाल देता है।

रिपोर्ट चेतावनी देती है कि यदि पानी खींचने की यही गति बनी रही, तब आने वाले सालों में इन इलाकों में बोरवेल सिर्फ धूल निकलनी है। इसके प्रमाण अभी से मिलने लगे हैं। उज्जैन की खाचरोद तहसील के पथलासी गांव में 1100 फीट की गहराई पर भी पानी नहीं मिल रहा है, जहां 24 निजी बोरवेल में से केवल तीन ही सफल हुए और तीन सरकारी बोर भी सूखे पड़े हैं। वहीं, टीकमगढ़ के माडूमार गांव में 400 फीट पर भी पानी न होने के कारण किसान केवल खरीफ की फसल पर निर्भर हैं और रबी की बुवाई के लिए सिंचाई का पानी खरीदना पड़ता है। फिलहाल राहत की बात केवल सागर जिले से है, जहां सभी 11 ब्लॉक सुरक्षित श्रेणी में बने हुए हैं क्योंकि यहां 70 प्रतिशत से कम भू-जल का इस्तेमाल हो रहा है। हालांकि, पूरे प्रदेश में बिगड़ती भू-जल स्थिति एक बड़े सूखे और जल संकट की ओर इशारा कर रही है, जिस पर तत्काल और प्रभावी कदम उठाने की नितांत आवश्यकता है।

ममता की हार देख अखिलेश ने आईपैक से तोड़ा नाता, अब पार्टी खुद करेगी चुनाव प्रबंधन

लखनऊ(एजेंसी)। समाजवादी पार्टी ने बंगाल में ममता बनर्जी और तमिलनाडु में एमके स्टालिन की चुनावी हार के बाद चुनाव प्रबंधन कंपनी आई-पैक से अपना रिश्ता खत्म करने का फैसला लिया है। बताया जा रहा है कि अब पार्टी खुद चुनाव प्रबंधन करेगी। आधिकारिक तौर पर सपा की तरफ से आईपैक से ना तो रिश्ता जोड़ने का कोई बयान आया था ना ही अब जबकि 2027 चुनाव के लिए आईपैक से संबंध टूटे हैं तो इसका कोई आधिकारिक बयान पार्टी की तरफ से आया है, लेकिन पार्टी सूत्र बता रहे हैं कि चुनाव प्रबंधन करने वाली सबसे चर्चित कंपनी आईपैक से अब समाजवादी पार्टी का कोई संबंध नहीं है। सपा के इंसाइडर्स यह बता रहे हैं कि आईपैक पर पड़े लगातार छापे और अब दो राज्यों में चुनावी हार, जहां आईपैक इस चुनाव को मैनेज कर रही थी उसके बाद पार्टी के थिंक टैंक ने इस संस्था से दूरी बनाना ही बेहतर समझा है और आईपैक को ये बात भी दी है कि चुनाव में साथ नहीं चल सकते। बता दें जिस दिन कोलकाता में आईपैक ऑफिस में छापे पड़ रहे थे और ममता बनर्जी आईपैक के दफ्तर पहुंच गई, उसे दिन समाजवादी पार्टी ऑफिस आईपैक अपना प्रेजेंटेशन दे रही थी। आईपैक के साथ जाने का सब कुछ तय हो चुका था, लेकिन प्रेजेंटेशन के दिन ही पड़े छापे ने अखिलेश यादव का खबरदार कर दिया था और तभी यह पार्टी सोचने लगी थी क्या आईपैड को साथ लेना कहीं भारी तो नहीं पड़ जाएगा। अब ममता और स्टालिन की हार के बाद इस पर मोहर लग गई है।

पंजाब धमाकों पर बोले फारूक अब्दुल्ला- हिंदुस्तान में ब्लास्ट तो होते रहते....

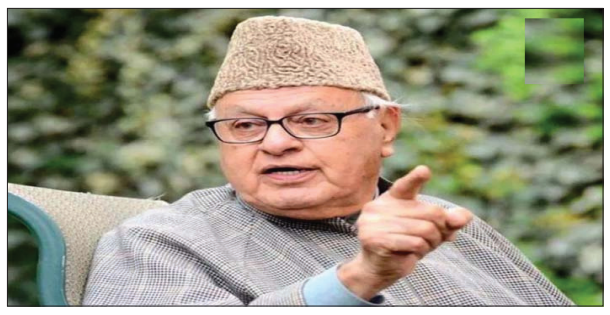

-सियासी हलके में हुई तीखी प्रतिक्रिया

जम्मू (एजेंसी)। पंजाब में हुए ताजा बम धमाकों के बीच फारूक अब्दुल्ला के एक बयान ने सियासी विवाद खड़ा कर दिया है। नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष और जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री अब्दुल्ला ने धमाकों पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि हिंदुस्तान में ब्लास्ट होते रहते हैं, इसमें कौन सी नई बात है। उनके इस बयान को लेकर राजनीतिक हलकों में तीखी प्रतिक्रिया देखी जा रही है और इसे असंवेदनशील बताया जा रहा है।

गौरतलब है कि मंगलवार रात पंजाब के जालंधर और अमृतसर में तीन घंटे के अंतराल में दो धमाके हुए, जिससे इलाके में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। जानकारी के अनुसार, जालंधर में रात करीब 8:15 बजे बीएसएफ मुख्यालय के बाहर एक स्कूटी में जोरदार विस्फोट हुआ। धमाके की तीव्रता इतनी अधिक थी कि आसपास की दीवारें हिल गईं और आवाज लगभग डेढ़ किलोमीटर तक सुनी गई। इस घटना में एक व्यक्ति के घायल होने की सूचना है, जबकि स्कूटी चालक को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है।

वहीं, दूसरी घटना अमृतसर के खासा क्षेत्र में भारत-पाकिस्तान सीमा के पास हुई, जहां रात लगभग 10:50 बजे बीएसएफ मुख्यालय के बाहर विस्फोट हुआ। प्रारंभिक जांच के अनुसार, बाइक सवार दो नकाबपोशों ने विस्फोटक सामग्री फेंकी, जो दीवार से टकराते ही फट गई। इस धमाके से परिसर की दीवार और टीन शेड को नुकसान पहुंचा है। घटनाओं के बाद सुरक्षा एजेंसियां तुरंत हरकत में आ गईं। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) की टीम मौके पर पहुंचकर जांच में जुट गई है। साथ ही पूरे इलाके में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है और सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है।

इस बीच, फारूक अब्दुल्ला के बयान ने राजनीतिक बहस को और तेज कर दिया है। विपक्ष और अन्य दलों के नेताओं ने उनके बयान की आलोचना करते हुए इसे गैर-जिम्मेदाराना बताया है। वहीं, सुरक्षा एजेंसियां इन घटनाओं के पीछे की साजिश का पता लगाने में जुटी हुई हैं।

विजय की टीवीके को कांग्रेस का समर्थन, 7 को ले सकते हैं शपथ

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के विधानसभा चुनाव में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी अभिनेता विजय की पार्टी तमिलगा वेत्री कषगम (टीवीके) को कांग्रेस ने समर्थन देने का फैसला किया है। सूत्रों के अनुसार, कांग्रेस ने एक वर्चुअल मीटिंग के दौरान टीवीके को समर्थन देने का प्रस्ताव पास किया है और जल्द ही इसका आधिकारिक पत्र जारी किया जा सकता है। यह घटनाक्रम इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि कांग्रेस ने 2021 और 2026 का चुनाव द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम (डीएमके) के साथ गठबंधन में लड़ा था, लेकिन अब वह विजय के साथ सरकार बनाने की ओर कदम बढ़ा रही है। चर्चा है कि कांग्रेस इसके बदले कैबिनेट में दो मंत्री पद और कुछ सरकारी बोर्डों के अध्यक्ष पद की मांग कर सकती है।

राज्य की 234 सदस्यीय विधानसभा में बहुमत के लिए 118 विधायकों की आवश्यकता है, जबकि टीवीके को 108 सीटें हासिल हुई हैं। कांग्रेस के पांच निर्वाचित विधायकों का समर्थन मिलने के बाद विजय के पास कुल 113 विधायकों का साथ हो जाएगा। हालांकि, बहुमत के जादुई आंकड़े तक पहुंचने के लिए उन्हें अभी भी 5 और विधायकों की जरूरत है। बताया जा रहा है कि टीवीके नेतृत्व वीसीके, लेफ्ट और अन्य छोटे दलों के संपर्क में है ताकि सरकार गठन में कोई बाधा न आए। विजय बुधवार को राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर से मिलकर सरकार बनाने का दावा पेश कर सकते हैं और संभवतः 7 मई को मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ले सकते हैं।

गणितीय आंकड़ों के खेल में एक पेच यह भी है कि विजय ने दो सीटों—चेन्नई की पेरम्बूर और तिरुचिरापल्ली पूर्व—से जीत हासिल की है। निर्वाचन नियमों के अनुसार उन्हें एक सीट छोड़नी होगी। यदि वे तिरुचिरापल्ली सीट छोड़ते हैं, तो उनकी पार्टी की संख्या 107 रह जाएगी। इसके अलावा, विधानसभा अध्यक्ष नियुक्त होने की स्थिति में प्रभावी मतदान क्षमता 106 तक गिर सकती है, जिससे गठबंधन को अतिरिक्त समर्थन जुटाने के लिए और अधिक मशक्कत करनी होगी। फिलहाल चेन्नई स्थित विजय के आवास पर विधायकों की बैठकों का दौर जारी है। कांग्रेस विधायकों के भी जल्द ही उनसे मुलाकात करने की संभावना है। यदि यह गठबंधन सफल होता है, तो तमिलनाडु में दशकों पुराने द्रविड़ राजनीति के पारंपरिक समीकरण पूरी तरह बदल जाएंगे।

चुनावी हार के बाद ममता और अभिषेक की सुरक्षा में कटौती

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों में तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की हार के दो दिन बाद, निवर्तमान मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और उनके भतीजे अभिषेक बनर्जी की सुरक्षा में कमी की गई है। बुधवार सुबह 6:30 बजे से उनके आवासों और कार्यालयों के बाहर पुलिस व्यवस्था कम की गई है। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, तीन परिसरों 88ए हरीश चटर्जी (ममता बनर्जी का आवास), 121 कालीघाट रोड (पार्टी का मुख्यालय) और 9 कैमक स्ट्रीट (अभिषेक बनर्जी का कार्यालय) से अतिरिक्त पुलिसकर्मियों को वापस बुलाया गया है। अब केवल जेड+ सुरक्षा व्यवस्था ही लागू रहेगी, जबकि इसके अतिरिक्त तैनात सुरक्षाकर्मियों को हटाया गया है। मंगलवार को ही हरीश चटर्जी रोड पर लगे कैंचीनुमा बैरिकेड जैसे कुछ अत्याधुनिक सुरक्षा इंतजामों को हटाया गया था और उनकी जगह मैनुअल रेलिंग लगा दी गई थीं। यह घटनाक्रम इस साल अप्रैल में हुए विधानसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की शानदार जीत के बाद सामने आया है। भाजपा ने 294 विधानसभा सीटों में से 207 सीटें हासिल की थीं, जबकि टीएमसी को 80 सीटें मिलीं। इस बीच, राज्य के एडवोकेट जनरल किशोर दत्ता ने भी पश्चिम बंगाल के राज्यपाल आरएन रवि को अपना इस्तीफा भेज दिया है। दत्ता दिसंबर 2023 से एडवोकेट जनरल थे और इससे पहले 2017 से 2021 तक भी इस पद पर रह चुके थे।

ममता बनर्जी ने राहुल गांधी की बात नहीं सुनकर बड़ी गलती की: राउत

-कांग्रेस नेता ने जो कुछ भी कहा था वह सच साबित हुआ, वह दूरदर्शी नेता

मुंबई (एजेंसी)। शिवसेना (यूबीटी) सांसद संजय राउत ने कहा है कि पश्चिम बंगाल की निवर्तमान सीएम ममता बनर्जी ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी की बात नहीं सुनकर और उनसे गठबंधन के संबंध में वार्ता ना करके बड़ी गलती की, वरना विधानसभा चुनाव के नतीजे कुछ और ही होते। ममता बनर्जी को भवानीपुर सीट पर बीजेपी के शुभेंदु अधिकारी के हाथों पराजय का सामना करना पड़ा। यहां पत्रकारों से बात करते हुए राउत ने दावा किया कि पश्चिम बंगाल में बीजेपी की जीत लोकतंत्र की जीत नहीं है, क्योंकि एसआईआर के जरिए लाखों मतदाताओं के नाम हटा दिए गए।

उन्होंने कहा कि विधानसभा चुनाव में ममता बनर्जी और तमिलनाडु के सीएम एम के स्टालिन जैसे प्रमुख विपक्षी नेताओं की हार के बावजूद, इंडिया गठबंधन का भविष्य उज्ज्वल है। उन्होंने कहा कि लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने जो कुछ भी कहा था वह सच साबित हुआ। वह एक दूरदर्शी नेता हैं। उन्होंने यह भी कहा कि इंदिरा गांधी ने भी एक समय अधिकांश राज्यों में जीत हासिल की थी, फिर भी उन्हें बाद में करारी हार का सामना करना पड़ा। राउत ने कहा कि बीजेपी भी इस समय शिखर पर है और भविष्य में उसे भी हार का सामना करना पड़ेगा।

राउत ने बुधवार को कहा कि ममता बनर्जी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी। मैंने उनकी बातों को ध्यान से सुना और समझा। उन्होंने पहली बात यह कही कि चुनाव आयोग विलेन है और इसी विलेन ने चुनाव जीता है। दूसरी बात उन्होंने कही कि पोलिंग बूथों और काउंटिंग सेंटरों पर डराया-धमकाया गया, जो कि बहुत शर्मनाक था। ममता बनर्जी ने यह भी दावा किया है कि 100 विधानसभा सीटों पर धांधली हुई और लाखों नाम हटा दिए गए, उनके मुताबिक ये बातें सच हैं। उन्होंने कहा है कि वह इस्तीफा नहीं देंगी क्योंकि उन्हें लगता है कि यह उनकी नैतिक जीत है और वह खुद को जीता हुआ मानती हैं। शिवसेना सांसद ने कहा कि ममता दीदी हमेशा से एक आंदोलनकारी रही हैं, चाहे वह सीएम हों, सत्ता में हों या विपक्ष में। सीएम रहते हुए भी वह ईडी और केंद्र सरकार जैसी एजेंसियों के खिलाफ सड़कों पर उतरी हैं।

अगर वह कह रही हैं कि वह इस्तीफा नहीं देंगी क्योंकि उन्हें लगता है कि वह हारी नहीं हैं, तो मैं इसे उनके विरोध के एक हिस्से के रूप में देखता हूं। यह एक आंदोलन है, सरकार के रवैये के खिलाफ एक तरह का प्रतिरोध है और मेरा मानना है कि ऐसा आंदोलन होना चाहिए।

बता दें पश्चिम बंगाल में बीजेपी ने 207 सीटें जीती हैं, जबकि टीएमसी महज 80 सीटों पर सिमट गई। कांग्रेस को 2 सीटों पर जीत मिली है। पहली बार चुनाव में उतरी हुमायूं कबीर की आम जनता उन्नयन पार्टी को भी 2 सीटें मिलीं, जबकि लेफ्ट और एआईएसएफ के खाते में 1-1 सीट आई।

आईआरसीटीसी घोटाला : लालू परिवार पर आरोप तय करने का फैसला टला

-राउज एवेन्यू कोर्ट ने सुनवाई 22 मई तक बढ़ाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईआरसीटीसी घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में लालू प्रसाद यादव और उनके परिवार को लेकर अहम कानूनी फैसला फिलहाल टल गया है। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने बुधवार को आरोप तय करने पर अपना फैसला स्थगित करते हुए अगली सुनवाई 22 मई तय की है। अब उसी दिन अदालत इस मामले में आगे की कार्रवाई पर निर्णय देगी।

इस मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने राष्ट्रीय जनता दल प्रमुख लालू प्रसाद यादव, उनके बेटे तेजस्वी यादव, पत्नी राबड़ी देवी, बेटी मीसा भारती, हेमा यादव और तेज प्रताप यादव समेत कई अन्य के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की है। इससे पहले 16 अप्रैल को भी इस मामले में सुनवाई टल गई थी और अदालत ने 6 मई की तारीख निर्धारित की थी।

पूरा मामला भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम (आईआरसीटीसी) के होटल टेंडर घोटाले से जुड़ा है, जो 2004 से 2014 के बीच का बताया जाता है। उस दौरान लालू प्रसाद यादव केंद्र सरकार में रेल मंत्री थे। जांच एजेंसियों के अनुसार, आईआरसीटीसी के दो होटलों के संचालन और रखरखाव के लिए टेंडर प्रक्रिया में नियमों का उल्लंघन करते हुए एक निजी कंपनी को अनुचित लाभ पहुंचाया गया। आरोप है कि इस टेंडर के बदले लालू परिवार से जुड़ी एक कंपनी को जमीन और अन्य आर्थिक फायदे दिए गए। केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) का कहना है कि इस पूरे प्रकरण में पद का दुरुपयोग किया गया और टेंडर प्रक्रिया में गंभीर अनियमितताएं बरती गईं। सीबीआई ने 7 जुलाई 2017 को इस मामले में एफआईआर दर्ज की थी, जिसमें लालू प्रसाद यादव और उनके परिवार के कई सदस्यों को नामजद किया गया। इसके बाद दिल्ली, पटना, रांची और गुरुग्राम समेत कई शहरों में छापेमारी कर महत्वपूर्ण दस्तावेज जुटाए गए। हालांकि, लालू प्रसाद यादव और उनके परिवार ने इन सभी आरोपों को खारिज किया है। उनका कहना है कि यह मामला राजनीतिक साजिश के तहत तैयार किया गया है और उन्हें जानबूझकर निशाना बनाया जा रहा है। अब इस मामले में 22 मई की सुनवाई पर सभी की नजरें टिकी हैं, जहां अदालत आरोप तय करने पर अंतिम फैसला सुना सकती है।

पश्चिम बंगाल में भाजपा का संकल्प पत्र खड़ी करेगा चुनौतियां

बंगाल में वित्तीय चुनौतियों के बीच संतुलन की बड़ी परीक्षा

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की राजनीति में एक ऐतिहासिक युग का अंत हुआ है। 15 वर्षों से सत्ता पर काबिज अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस को बेदखल कर भाजपा ने राज्य की कमान संभाल ली है। इस बड़े राजनीतिक उलटफेर के बाद अब प्रदेश की जनता और आर्थिक विशेषज्ञों की नजरें नई सरकार के उन वादों पर टिकी हैं, जो भाजपा ने अपने चुनावी घोषणापत्र संकल्प पत्र में किए थे। सबसे बड़ा सवाल यह है कि कर्ज और सीमित संसाधनों के दबाव में दबी राज्य की अर्थव्यवस्था इन महत्वाकांक्षी योजनाओं का बोझ कैसे उठाएगी।

भाजपा के संकल्प पत्र में किए गए वादों में सबसे प्रमुख महिलाओं और बेरोजगार युवाओं को हर महीने 3,000 रुपये की प्रत्यक्ष आर्थिक सहायता देना है। इस योजना का उद्देश्य कमजोर वर्गों को आर्थिक स्थिरता प्रदान करना है, लेकिन इसका सीधा असर राज्य के खजाने पर पड़ेगा। इसके साथ ही, लंबे समय से लंबित सातवें वेतन आयोग को लागू करने और महंगाई भत्ते में बढ़ोतरी का वादा सरकारी कर्मचारियों के लिए बड़ी राहत तो है, लेकिन इससे राज्य के राजस्व व्यय में भारी वृद्धि होना तय है। वर्तमान वित्तीय आंकड़ों पर नजर डालें तो बंगाल की नई सरकार के लिए राह आसान नहीं दिखती। वित्त वर्ष 2024-25 में राज्यों का राजकोषीय घाटा उनके सकल राज्य घरेलू उत्पाद का 3.6 प्रतिशत रहा है। हालांकि, आगामी वर्षों में इसके घटकर 2.9 प्रतिशत तक आने का अनुमान है, जो वित्तीय अनुशासन की ओर इशारा करता है, लेकिन यह सुधार नए और बड़े खर्चों के लिए पर्याप्त गुंजाइश नहीं छोड़ता।

राज्य की वित्तीय स्थिति में सबसे चिंताजनक पहलू कुल कर्ज का स्तर है, जो जीएसडीपी का लगभग 38 प्रतिशत बना हुआ है। यह उच्च स्तर दर्शाता है कि राज्य अपनी जरूरतों के लिए उधारी पर बहुत अधिक निर्भर है। इसके अलावा, राज्यों की अपनी कर आय उनकी कुल राजस्व प्राप्तियों का केवल 41 प्रतिशत ही है। यानी आधे से भी अधिक राजस्व के लिए केंद्र पर निर्भरता बनी हुई है। वर्तमान खर्च के ढांचे को देखें तो बजट का बड़ा हिस्सा राजस्व व्यय (वेतन, पेंशन और सब्सिडी) में चला जाता है, जबकि विकास कार्यों के लिए पूंजीगत व्यय केवल 4 प्रतिशत तक सीमित है। नई सरकार के सामने अब यह बड़ी चुनौती होगी कि वह अपने लोक-कल्याणकारी वादों को पूरा करने के साथ-साथ विकास परियोजनाओं के लिए धन कैसे जुटाती है। वेतन संशोधन और नकद सहायता योजनाओं के लागू होने से विकास कार्यों के लिए वित्तीय जगह और भी कम हो सकती है। आने वाले समय में यह देखना दिलचस्प होगा कि नई सरकार वित्तीय अनुशासन और जन-आकांक्षाओं के बीच कैसे तालमेल बिठाती है।

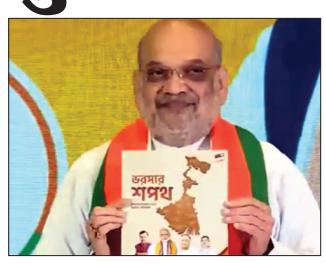

महानगर मेट्रो
www.mahanagarmetro.com
अहमदाबाद, (गुरुवार)
07 मई 2026

एनएसई ने की आईपीओ की तैयारी, दस्तावेज जमा कराने की समय सीमा 15 जून तय

नई दिल्ली।

नैशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) ने अपने बैंकरों से कंपनी का आंरभिक सार्वजनिक निर्गम लाने के लिए आईपीओ विवरणिका (डीआरएचपी) दाखिल करने की प्रक्रिया में तेजी लाने को कहा है। एनएसई ने नियामक के पास आईपीओ दस्तावेज जमा कराने की समय सीमा 15 जून तक है। घटनाक्रम से अवगत लोगों ने इसकी जानकारी दी। अगर कंपनी द्वारा तय समय सीमा का पालन किया जाता है तो 2026 के आखिर में एनएसई के बड़े आईपीओ लाने का रास्ता साफ हो सकता है। डीआरएचपी जमा करने के बाद एनएसई को बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) से अंतिम टिप्पणियों का इंतजार है, जिसमें आम तौर पर दो से तीन महीने का समय लगता है। रिपोर्ट में सूत्र के हवाले से बताया कि जून के अंत से पहले डीआरएचपी दाखिल करने से एक्सचेंज फाइलिंग में मदद मिलेगी क्योंकि यह जनवरी-मार्च 2026 तिमाही के वित्तीय आंकड़ों पर आधारित होगी। एक्सचेंज ने इन आंकड़ों की घोषणा मंगलवार को की। आईपीओ को लेकर ताजा घटनाक्रम के बारे में पूछे जाने पर एनएसई ने कहा कि सेबी द्वारा जारी अनापत्ति प्रमाण पत्र के आधार पर बोर्ड ने 6 फरवरी, 2026 को बिक्री पेशकश के जरिये कंपनी के आईपीओ को मंजूरी दे दी है और अभी इस बारे में और कुछ बताने के लिए नहीं है। आईपीओ मसौदा दायर करने से पहले एक्सचेंज ने 25 मई को बैठक बुलाई है ताकि अपने आर्टिकल्स ऑफ एसोसिएशन में संशोधनों के लिए शेयरधारकों की मंजूरी ली जा सके। आर्टिकल्स ऑफ एसोसिएशन कंपनी का मुख्य कानूनी दस्तावेज होता है जिसमें कंपनी के आंतरिक प्रबंधन, संचालन, नियमों और विनियमों का विवरण होता है। यह कंपनी के दैनिक कामकाज को सुचारू रूप से चलाने के लिए निदेशकों और शेयरधारकों के अधिकारों, जिम्मेदारियों और शक्तियों को परिभाषित करता है। एक्सचेंज नियमन संबंधित पुरानी समस्याओं को सुलझाने की दिशा में भी आगे बढ़ रहा है। इसमें सेबी द्वारा गठित एक उच्च-स्तरीय सलाहकार समिति की सिफारिश के मुताबिक कोलोकेशन और डार्क फाइबर से जुड़े मामलों में 1800 करोड़ से अधिक का निपटारा भी शामिल है। यह आईपीओ पूरी तरह से ओएफएस होगा और एनएसई कोई नया शेयर जारी नहीं करेगी। इसमें मौजूदा निवेशक मांग के आधार पर अपनी 5 फीसदी तक हिस्सेदारी बेचेंगे। टेमासेक, कनाडा पेंशन प्लान इन्वेस्टमेंट बोर्ड, भारतीय जीवन बीमा निगम और क्रिसकैपिटल जैसे शेयरधारक अपनी हिस्सेदारी कम कर सकते हैं।

बंगाल में बीजेपी सरकार बनने से निवेश और उद्योग को नई रफ्तार की उम्मीद

चैंबर ऑफ कॉमर्स के महानिदेशक बोले- यहां भूमि आज भी बड़ी संरचनात्मक चुनौती

नई दिल्ली। 2015 में पश्चिम बंगाल के बर्नपुर स्थित आधुनिक आईआईएससीओ संयंत्र के उद्घाटन समारोह में सीएम ममता बनर्जी ने पीएम मोदी की मौजूदगी में कहा था कि राजनीति और विकास को अलग-अलग रखा जाना चाहिए। हालांकि आने वाले सालों में केंद्र और राज्य सरकारों के बीच बढ़ते टकराव और टीएमसी की नीतियों के चलते कई बड़े निवेश प्रस्ताव पर असर हुआ। अब राज्य और केंद्र दोनों में बीजेपी की सरकार बनने के बाद उद्योग जगत की नजर इस बात पर टिकी है कि क्या यह राजनीतिक तालमेल पश्चिम बंगाल को फिर से निवेश और औद्योगिक विकास का बड़ा केंद्र बना पाएगा। बता दें बीजेपी ने अपने घोषणापत्र में कारोबार सुगमता बढ़ाने, सिंगल विंडो सिस्टम लागू करने और सिंडिकेट संस्कृति खत्म करने का वादा किया है। पार्टी ने बंदरगाह आधारित विकास, नीली अर्थव्यवस्था, मत्स्य पालन, समुद्री खाद्य प्रसंस्करण और तटीय आर्थिक क्षेत्रों के विस्तार की योजना भी पेश की है। साथ ही आधुनिक इस्पात संयंत्रों और नए औद्योगिक क्षेत्रों के विकास पर भी जोर दिया है। पश्चिम बंगाल के औद्योगिक इतिहास में सिंगूर का मुद्दा हमेशा अहम रहा है। जहां कभी टाटा की नैनो परियोजना प्रस्तावित थी, वहीं अब बीजेपी वहां औद्योगिक पार्क विकसित करने की बात कर रही है। उद्योग जगत की सबसे बड़ी उम्मीद भूमि अधिग्रहण नीति में बदलाव को लेकर है। सिंगूर और नंदीग्राम आंदोलनों के बाद राज्य में भूमि अधिग्रहण बेहद संवेदनशील विषय बन गया था। इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स के महानिदेशक राजीव सिंह का कहना है कि पश्चिम बंगाल में भूमि आज भी सबसे बड़ी संरचनात्मक चुनौती बनी हुई है। राज्य में जनसंख्या घनत्व ज्यादा है और जमीन छोटे-छोटे हिस्सों में बंटी हुई है। राज्य में करीब 71 लाख किसान परिवार हैं, जिनमें 96 फीसदी छोटे और सीमांत किसान हैं। औसतन प्रत्येक किसान के पास एक हेक्टेयर से भी कम जमीन है। इसके बावजूद उनका मानना है कि यदि सरकार और उद्योग जगत मिलकर काम करें तो 50 से 100 एकड़ तक जमीन उपलब्ध कराना मुश्किल नहीं होगा।

शेयर बाजार तेजी के साथ बंद

सेंसेक्स 940, निफ्टी 298 उछला

मुम्बई ।

घरेलू शेयर बाजार बुधवार को तेजी के साथ बंद हुआ। सप्ताह के तीसरे ही कारोबारी दिन बाजार में ये उछाल दुनिया भर के बाजारों से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही खरीददारी हावी होने से आया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ईरान के साथ संघर्ष समाप्त करने के संकेतों से भी बाजार में उत्साह का माहौल है। इस कारण कच्चे तेल की कीमतों में 6 फीसदी की गिरावट आई है जिससे भी बाजार में उत्साह का माहौल है। दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 940.73 अंक बढ़कर 77,958.52 पर पहुंच गया। वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 298.15 अंक उछलकर 24,330.95 पर पहुंच गया। बीएसई के शीर्ष 30 शेयरों में से 21 शेयर बढ़त पर बंद हुए। आज कारोबार के दौरान निफ्टी के सभी सेक टोरियल इंडेक स में तेजी रही। केवल एफएमसीजी सेक टर के शेयर ही नीचे आये। व्यापक बाजारों में भी तेजी राही। निफ्टी स्मॉलकैप और निफ्टी मिडकैप शेयरों मे 0.9 फीसदी और 1.1 फीसदी की बढ़त रही। शेयर बाजार में तेजी की वजह से आज निवेशकों को खासा लाभ हुआ। बाजार पूंजीकर 466 लाख करोड़ रुपये से 472 लाख करोड़ रुपये पहुंच गया जिससे निवेशकों को करीब 6 लाख करोड़ रुपये का लाभ हुआ। वहीं इससे पहले आज सुबह 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 253.42 अंक करीब 0.33 फीसदी की तेजी के साथ 77,248.86 के स्तर पर कारोबार कर रहा था। वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 95.80 अंक उछलकर 24,129.75 पर करोबार कर रहा था। आज महिन्द्रा एंड महिंद्रा , इंटर ग्लोब एवीएशन और टाटा मोटर्स वाहनों के शेयरों में तेजी रही। इन कंपनियों के शेयरों में खरीदारी से बाजार में तेजी आई। वहीं व्यापक बाजार की बात करें तो मिडकैप और स्मॉलकैप शेयरों में भी बढ़त रही। निफ्टी मिडकैप इंडेक्स लगभग 0.91 फीसदी और निफ्टी स्मॉलकैप इंडेक्स करीब 1.01 फीसदी उछला। दूसरी ओर एशियाई और अमेरिकी बाजारों में भी तेजी का माहौल रहा।

हीरो मोटोकॉर्प को मार्च 2026 तिमाही में मजबूत बिक्री से हुई मोटी कमाई

कंपनी ने प्रत्येक शेयर पर 75 रुपए के अंतिम डिविडेंड की सिफारिश की

नई दिल्ली। देश की सबसे बड़ी दोपहिया वाहन निर्माता कंपनी हीरो मोटोकॉर्प ने मार्च 2026 तिमाही में मजबूत बिक्री के दम पर कंपनी का कंसोलिडेटेड शुद्ध मुनाफा सालाना आधार पर 26 फीसदी बढ़कर 1,473.92 करोड़ रुपए हो गया। पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में कंपनी का मुनाफा 1,168.75 करोड़ था। कंपनी की आय भी बढ़ी है। मार्च तिमाही में ऑपरेशंस से कंसोलिडेटेड रेवेन्यू बढ़कर 12,978.28 करोड़ रुपए पर पहुंच गया, जो एक साल पहले इसी अवधि में 9,969.81 करोड़ था। तिमाही में कंपनी ने 17.14 लाख वाहनों की बिक्री की, जो पिछले साल के मुकाबले 24 फीसदी ज्यादा है। वहीं, कुल खर्च बढ़कर 11,295.53 करोड़ हो गया, जो पिछले साल 8,750.13 करोड़ था। पूरे वित्त वर्ष 2025-26 में कंपनी का कंसोलिडेटेड शुद्ध मुनाफा बढ़कर 5,775.7 करोड़ रहा, जबकि 2025 में यह 4,375.81 करोड़ रुपए था। वहीं, पूरे साल का रेवेन्यू 47,411.24 करोड़ रुपए रहा, जो पिछले वित्त वर्ष में 40,923.42 करोड़ रुपए था। कंपनी के सीईओ हर्षवर्धन चितले ने कहा कि 2026 कंपनी के लिए खास साल रहा। प्रीमियम और इलेक्ट्रिक वाहन पोर्टफोलियो के साथ घरेलू और वैश्विक बाजारों में मजबूत मांग से कंपनी को अच्छा फायदा हुआ। हीरो मोटोकॉर्प ने अपने शेयरधारकों के लिए 2 रुपए फेस वैल्यू वाले प्रत्येक शेयर पर 75 रुपए के अंतिम डिविडेंड की सिफारिश की है। कंपनी ने डिविडेंड पाने के पात्र शेयरधारकों की पहचान के लिए 24 जुलाई 2026 को रिकॉर्ड डेट तय किया है। इसके अलावा, कंपनी के बोर्ड ने पवन मुंजाल को 1 अक्टूबर 2026 से अगले पांच साल के लिए फिर से एग्जीक्यूटिव चेयरमैन नियुक्त करने को मंजूरी दे दी है। हालांकि, इसके लिए शेयरधारकों की मंजूरी जरूरी होगी।

अप्रैल में रिकॉर्ड 26.1 लाख वाहन बिके, ग्रामीण क्षेत्र बना ग्रोथ इंजन

मुंबई ।

अप्रैल माह में वाहनों की खुदरा बिक्री ने एक नया इतिहास बना दिया है। इस साल अप्रैल में कुल 26.1 लाख वाहन बिके, जो बीते अप्रैल की तुलना में 12.94 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि दिखाता है। इस शानदार प्रदर्शन का श्रेय मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों को जाता है, जिन्होंने शहरी बाजारों से भी बेहतर प्रदर्शन कर देश की आर्थिक गति को बनाए रखा। फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (फाडा) और उद्योग के आंकड़ों के अनुसार, छह में से पांच वाहन श्रेणियों ने अप्रैल 2024 की बिक्री में रिकॉर्ड दर्ज किया। इसमें दोपहिया वाहनों ने 13 प्रतिशत, तिपहिया ने 7 प्रतिशत, यात्री वाहनों ने 12 प्रतिशत, वाणिज्यिक वाहनों ने 15 प्रतिशत और ट्रैक्टरों ने 23.22 प्रतिशत की जोरदार वृद्धि दिखाई। हालांकि, निर्माण उपकरण श्रेणी में 2 प्रतिशत की मामूली गिरावट दर्ज की गई। फाडा के उपाध्यक्ष साई गिरिधर ने इस गति पर संतोष जताकर कहा कि हम वित्त वर्ष 27 में दो अंकों की वृद्धि की उम्मीद कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि इस रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन के पीछे कई कारक जिम्मेदार रहे, जिसमें जीएसटी 2.0 के बाद उपभोक्ताओं की खर्च करने की बेहतर क्षमता, भारतीय रिजर्व बैंक का ब्याज दरों के प्रति सहायक रुख जिसने ईएमआई की सुविधा बढ़ाई और देशभर में शादियों का जोरदार सीजन शामिल हैं। यह दर्शाता है कि वित्त वर्ष 26 की दूसरी छमाही में शुरू हुई संरचनात्मक मांग की गति नए वित्त वर्ष में भी बरकरार है। खासकर यात्री वाहनों की खुदरा बिक्री 4,07,355 यूनिट्स रही, जो पिछले वर्ष की तुलना में 12.21 प्रतिशत की जबरदस्त वृद्धि है और यह अब तक का सबसे अच्छा अप्रैल रहा। इस श्रेणी की सबसे उल्लेखनीय बात यह रही कि ग्रामीण क्षेत्रों ने शहरों को पीछे छोड़ दिया, जहां वाहन बिक्री में 20.40 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह वृद्धि 7.11 प्रतिशत रही, जो ग्रामीण बढ़त का लगभग तीन गुना है। यह छोटे शहरों और ग्रामीण इलाकों तक व्यक्तिगत गतिशीलता के संरचनात्मक विस्तार की पुष्टि करता है, इस छोटी कारों की वापसी, एसयूवी की लगातार मांग और सीएनजी (22.62 प्रतिशत) व ईवी (5.77 प्रतिशत) जैसे वैकल्पिक-इंजन वाले मॉडलों के समृद्ध मिश्रण का समर्थन मिला। यात्री वाहनों के बिना बिके स्टॉक का स्तर भी 28 से 30 दिनों की आपूर्ति सीमा में है, इस सकारात्मक माना जा रहा है। अप्रैल 2024 में दोपहिया वाहनों की खुदरा बिक्री ने भी अपनी जोरदार रफ्तार बनाए रखी और 19 लाख यूनिट्स तक पहुंच गई, जो इस श्रेणी के लिए अब तक का सबसे अच्छा अप्रैल है। यहां मांग व्यापक रही, जिसमें शहरी बाजारों में 14.07 प्रतिशत और ग्रामीण बाजारों में 12.30 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। वाणिज्यिक वाहनों की खुदरा बिक्री भी 99,339 यूनिट्स रही, जो पिछले वर्ष की तुलना में 15.02 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है।

गोदरेज एरोस्पेस ने मुंबई में लगाई नया प्लांट, 2032 तक 20फीसदी विकास का रखा लक्ष्य

कंपनी का ध्यान अगले 4-5 सालों में अपने डिजाइन प्लेटफॉर्म बनाने पर

नई दिल्ली। गोदरेज एंटरप्राइजेज ग्रुप की वाणिज्यिक एरोस्पेस विनिर्माण इकाई को वित्त वर्ष 2032 तक सालाना कम से कम 15 से 20 फीसदी बढ़ोतरी की उम्मीद है। इसका कारण यह है कि पश्चिम एशिया में जारी तनाव के बीच मांग मजबूत बनी हुई है और उत्पादन स्थिर बना हुआ है। इकाई के कार्यकारी उपाध्यक्ष और कारोबार प्रमुख मानेक बेहरामकामदीन ने यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि समूह के वाणिज्यिक एरोस्पेस कारोबार ने वित्त वर्ष 2026 में 435 करोड़ रुपए का कुल राजस्व हासिल किया और यह इकाई कोविड-19 के बाद से राजस्व में हर साल 30 फीसदी की बढ़ोतरी कर रही है। कंपनी अब अपना खुद का डिजाइन प्लेटफॉर्म बना रही है, विशेष रूप से सर्वो एक्चुएटर और इलेक्ट्रोमैकेनिकल एक्चुएटर जैसे पुर्जों के लिए। वह बिल्ड-टु-प्रिंट विनिर्माता से डिजाइन-आधारित कंपनी बनने के लिए मूल्य श्रृंखला में बढ़ने पर विचार कर रही है। बेहरामकामदीन ने कहा कि अगले कुछ सालों में बौद्धिक संपदा विकसित करना और 'एक्चुएशन प्रणाली के लिए डिजाइन हाउस बनने का लक्ष्य है। ये प्रणालियां विमान के अहम पुर्जे होते हैं जो पंखों और लैंडिंग गियर जैसे हिस्सों की गति को नियंत्रित करती हैं। इससे वे एरोस्पेस विनिर्माण में ज्यादा मूल्य वाली श्रेणी बन जाते हैं। उन्होंने कहा कि हमारा ध्यान अगले चार से पांच सालों में अपने डिजाइन प्लेटफॉर्म पर काम करने पर होगा। वर्तमान में कंपनी के पास छोटी, लेकिन बढ़ने वाली डिजाइन टीम है और वह मॉडलिंग और विश्लेषण जैसे क्षेत्रों में क्षमताओं के निर्माण के लिए बाहरी विशेषज्ञों के साथ साझेदारी भी कर रही है, जो उड़ान के अहम पुर्जों के विकास के लिए जरुरी होते हैं। इनपुट लागत के बारे में पूछे जाने पर बेहरामकामदीन ने कमोडिटी के वैश्विक बाजारों में अस्थिरता की ओर इशारा किया, विशेष रूप से हाल ही में 28 फरवरी को पश्चिम एशिया में संघर्ष शुरू होने के बाद से एरोस्पेस विनिर्माण में उपयोग की जाने वाली धातुओं के संबंध में। विस्तार के बारे में उन्होंने कहा कि समूह ने नई एरोस्पेस विनिर्माण इकाई के लिए करीब 500 करोड़ रुपए की प्रतिबद्धता जताई है।

एयर कंडीशन, एलपीजी, पॉलिमर और प्लास्टिक की कीमतों में 15 से 20 फीसदी की वृद्धि

नई दिल्ली।

कच्चे माल की महंगाई और सप्लाई चेन पर बढ़ते दबाव के चलते एयर कंडीशनर (एसी), एलपीजी, पॉलिमर और प्लास्टिक उत्पादों की कीमतों में 15 से 20 फीसदी तक बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है। उद्योग से जुड़े जानकारों के मुताबिक धातुओं, कंप्रेसर और केमिकल्स की लागत बढ़ने का सीधा असर उपभोक्ता वस्तुओं पर पड़ा है। एसी बनाने वाली कंपनियों का कहना है कि उत्पादन लागत में करीब 16 फीसदी तक इजाफा हुआ है, जिससे कीमतें बढ़ाना मजबूरी बन गया है। वहीं एलपीजी और पॉलिमर के दाम बढ़ने से प्लास्टिक उत्पाद भी महंगे हो गए हैं। आने वाले दिनों में मिड-रेंज एसी मॉडल्स की कीमत में करीब 1500 से 1750 रुपये तक की बढ़ोतरी देखने को मिल सकती है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि कच्चे माल की कीमतों में जल्द राहत नहीं मिली, तो महंगाई का असर और बढ़ सकता है।

दिवालिया संकट टला एम्बेसी डेवलपमेंट्स के शेयर 20 प्रतिशत उछले

मुंबई।

रियल एस्टेट दिग्गज एम्बेसी डेवलपमेंट्स ने एक बड़ी कानूनी जीत हासिल की है, जिससे कंपनी पर मंडरा रहा दिवालिया होने का संकट खत्म हो गया है। नेशनल कंपनी लॉ अपीलेट ट्रिब्यूनल (एनसीएलएटी) द्वारा दिवालिया प्रक्रिया शुरू करने के पुराने आदेश को रद्द करते ही, निवेशकों का भरोसा बहाल हुआ और कंपनी के शेयर बुधवार को 20 प्रतिशत के अपर सर्किट के करीब पहुंच गए।

यह मामला तब शुरू हुआ था जब 9 दिसंबर 2025 को नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल (एनसीएलटी) की दिल्ली पीठ ने एम्बेसी डेवलपमेंट्स के खिलाफ दिवालिया प्रक्रिया (सीआईआरपी) शुरू करने का आदेश दिया था। कंपनी ने फैसले के खिलाफ एनसीएलएटी का दरवाजा खटखटाया था, जिसने अब अपने अंतिम निर्णय में एनसीएलटी के आदेश को खारिज कर मामले को पूरी तरह बंद किया है। इस फैसले से कंपनी के प्रोजेक्ट्स में पैसा लगाने वाले ग्राहकों व निवेशकों ने बड़ी राहत की सांस ली है। कंपनी के चेयरमैन जीतू विरवानी ने इस फैसले को सच्चाई की जीत बताया। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह एक पुराना मामला था, जिसमें इंडियाबुल्स रियल एस्टेट के एक

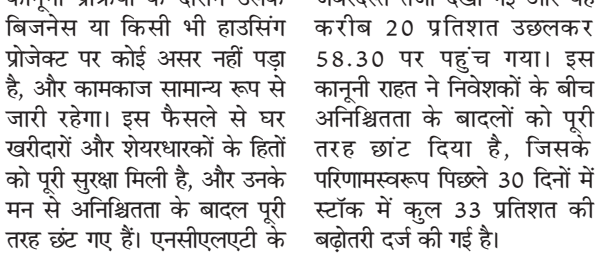

पत्र को गलत तरीके से कॉरपोरेट गारंटी मान लिया गया था। कंपनी ने आश्वस्त किया है कि इस कानूनी प्रक्रिया के दौरान उसके बिजनेस या किसी भी हाउसिंग प्रोजेक्ट पर कोई असर नहीं पड़ा है, और कामकाज सामान्य रूप से जारी रहेगा। इस फैसले से घर खरीदारों और शेयरधारकों के हितों को पूरी सुरक्षा मिली है, और उनके मन से अनिश्चितता के बादल पूरी तरह छंट गए हैं। एनसीएलएटी के इस बड़े फैसले के तत्काल बाद, 6 मई 2026 को एम्बेसी डेवलपमेंट्स के शेयरों में जबरदस्त तेजी देखी गई और यह करीब 20 प्रतिशत उछलकर 58.30 पर पहुंच गया। इस कानूनी राहत ने निवेशकों के बीच अनिश्चितता के बादलों को पूरी तरह छांट दिया है, जिसके परिणामस्वरूप पिछले 30 दिनों में स्टॉक में कुल 33 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

बायोकॉन में नेतृत्व परिवर्तन किरण मजूमदार-शॉ ने भतीजी को बनाया उत्तराधिकारी

बेंगलुरु।

बायोटेक क्षेत्र की अग्रणी कंपनी बायोकॉन अब अपने नेतृत्व में एक महत्वपूर्ण बदलाव करने की तैयारी में है। कंपनी की दूरदर्शी संस्थापक और चेयरपर्सन, किरण मजूमदार-शॉ ने अपनी भतीजी क्लेयर मजूमदार को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया है।

यह घोषणा कंपनी के विकास के अगले चरण को देखकरकी गई है, जिसका उद्देश्य शीर्ष नेतृत्व में निरंतरता और सुचारु परिवर्तन करना है। हाल ही में साक्षात्कार में, मजूमदार-शॉ ने दो टूक कहा कि यह बदलाव चरणबद्ध तरीके से होगा। इसके तहत क्लेयर धीरे-धीरे कंपनी के नेतृत्व की भूमिकाओं में गहराई से शामिल होंगी और अंततः चेयरपर्सन का पदभार संभालेंगी।

यह पूरी प्रक्रिया अगले पांच वर्षों में पूरी होगी है। उन्होंने कहा कि वह तुरंत अपने पद से हट नहीं रही हैं, बल्कि यह सुनिश्चित करना चाहती हैं कि बायोकॉन को सही हाथों में रहे। मजूमदार-शॉ ने अपनी भतीजी पर विश्वास जताकर कहा, मैंने अपनी भतीजी क्लेयर को अपनी उत्तराधिकारी के तौर पर देखा है, क्योंकि मुझे लगता है कि भतीजी ने यह साबित किया है कि वह एक कंपनी चला सकती है।इस महत्वपूर्ण घोषणा का बाजार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। बीएसई पर बायोकॉन का शेयर करीब 2.36 प्रतिशत की तेजी के साथ बंद हुआ। यह निवेशकों के उस भरोसे को दिखाता है कि कंपनी ने एक स्पष्ट उत्तराधिकार योजना प्रस्तुत की है और प्रवर्तक का नियंत्रण प्रभावी ढंग से बना रहेगा। 37 वर्षीय क्लेयर मजूमदार, वैज्ञानिक प्रशिक्षण और उद्यमिता के प्रभावशाली अनुभव का संगम हैं। वह बिकारा थेरेप्यूटिक्स की संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं। बिकारा एक क्लिनिकल-स्टेज ऑन्कोलॉजी कंपनी है जो ट्यूमर के लिए बाइफंक्शनल एंटीबॉडीज के विकास पर केंद्रित है।

वर्ष 2024 में बिकारा का मूल्यांकन 80 करोड़ डॉलर से अधिक था जब यह नैस्डैक में सूचीबद्ध हुई, और अब इसका बाजार पूंजीकरण 1.6 अरब डॉलर से भी अधिक है, जबकि इसकी मुख्य कैंसर थेरेपी अभी भी क्लिनिकल ट्रायल में है। क्लेयर की अकादमिक पृष्ठभूमि भी बेहद मजबूत है; उन्होंने एमआईटी से बायोलॉजिकल इंजीनियरिंग में बैचलर ऑफ साइंस, स्टैनफोर्ड ग्रेजुएट स्कूल ऑफ बिजनेस से एमबीए और स्टैनफोर्ड स्कूल ऑफ मेडिसिन से कैंसर बायोलॉजी में पीएचडी की डिग्री हासिल की है। यह अनुभव और योग्यता उन्हें बायोकॉन जैसे बड़े संस्थान की कमान संभालने के लिए एक आदर्श उम्मीदवार बनाती है।

सरकारी क्रेडिट गारंटी योजना से इंडिगो और स्पाइसजेट के शेयरों में जबरदस्त उछाल

मुंबई ।

केंद्र सरकार द्वारा 1.81 लाख करोड़ की क्रेडिट गारंटी योजना को मंजूरी मिलने के बाद बुधवार को इंडिगो की मूल कंपनी इंटरग्लोब एविएशन लिमिटेड और स्पाइसजेट के शेयरों में तूफानी तेजी दिखाई दी। इस सरकारी फैसले का मुख्य उद्देश्य कंपनियों और एयरलाइंस को अतिरिक्त वित्तीय सहायता मिलना है, जिससे उनके वित्तीय बोझ को कम कर सके और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिले। बाजार खुलने के बाद से ही निवेशकों में उत्साह देखा गया। दोपहर साढ़े दस बजे के करीब इंडिगो के शेयर 3.50 प्रतिशत की शानदार उछाल के साथ 4385 रुपये के आसपास कारोबार कर रहे थे। सुबह 4320 रुपये पर खुलने के बाद ये शेयर तेजी से बढ़कर 4393 रुपये के अपने इंट्रा-डे हाई पर पहुंच गए, जो निवेशकों के बढ़ते भरोसे को दर्शाता है। वहीं, स्पाइसजेट के शेयरों में भी करीब 5 प्रतिशत की शानदार तेजी दर्ज की गई, जिसने शेयर को अपर सर्किट तक पहुंचा दिया। स्पाइसजेट के शेयर 12.50 रुपये पर खुले और तुरंत 12.70 रुपये के अपर सर्किट मूल्य पर स्थिर हो गए, जिससे इस एयरलाइन के निवेशकों को बड़ा लाभ हुआ।

केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने योजना का विवरण देकर बताया कि इसका लक्ष्य सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) और विशेष रूप से विमानन क्षेत्र को कुल 2.55 लाख करोड़ रुपये का अतिरिक्त कर्ज उपलब्ध कराना है। इस महत्वपूर्ण पहल पर केंद्र सरकार गारंटी के तौर पर 18,100 करोड़ रुपये खर्च करेगी। योजना के तहत विमानन क्षेत्र के लिए 5,000 करोड़ रुपये का विशेष आवंटन किया गया है, जो इस सेक्टर की मौजूदा चुनौतियों को देखते हुए एक बड़ी राहत है। यह पूरी योजना नेशनल क्रेडिट गारंटी ट्रस्टी कंपनी लिमिटेड (एनसीजीटीसी) के माध्यम से संचालित होगी, जो सदस्य ऋण संस्थानों को गारंटी कवर प्रदान करके यह सुनिश्चित करेगी कि वैध और योग्य उधारकर्ताओं को आसानी से अतिरिक्त ऋण मिल सके, जिससे उनके संचालन में सुगमता आए। सरकार के इस महत्वपूर्ण आर्थिक प्रोत्साहन पैकेज से शेयर बाजार में सकारात्मक माहौल बना।

मोदी कैबिनेट ने दी आपातकालीन ऋण गारंटी योजना के पांचवें संस्करण को मंजूरी

एमएसएमई और एविएशन सेक्टर को दिया 18,100 करोड़ का राहत पैकेज

नई दिल्ली।

पीएम नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने आपातकालीन ऋण गारंटी योजना के पांचवें संस्करण को मंजूरी दे दी।

इस योजना के तहत सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई), विमान कंपनियों और अन्य कंपनियों को पश्चिम एशिया संकट के कारण बढ़ती लागतों के बीच कार्यशील पूंजी की जरूरतों को पूरा करने में मदद करने के लिए 18,100 करोड़ रुपए का प्रावधान किया है। कोविड महामारी के दौरान मई 2020 में पहली बार शुरू की गई इस योजना से विमानन क्षेत्र के लिए 5,000 करोड़ के विशेष आवंटन सहित 2.55 लाख करोड़ रुपए के अतिरिक्त ऋण प्रवाह की उम्मीद है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबि पीएम मोदी ने कहा कि मंत्रिमंडल द्वारा स्वीकृत ईसीएलजीएस 5.0 वैश्विक चुनौतियों के समय में भारत के व्यवसायों, विशेष कर एमएसएमई क्षेत्र का समर्थन करने की सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

उन्होंने एक्स पर पोस्ट में कहा कि मजबूत गारंटी कवरेज के साथ अतिरिक्त ऋण प्रवाह को संभव बनाकर यह पहल कई क्षेत्रों की मदद करेगी।

हमारा ध्यान उद्यमों को सशक्त बनाने, वृद्धि की गति को बनाए रखने और आजीविका की सुरक्षा पर केंद्रित है। यह योजना बैंकों को सरकार समर्थित गारंटी प्रदान करके पश्चिम एशिया संकट से प्रभावित व्यवसायों को ज्यादा ऋण देने की अनुमति देती है। यदि उधारकर्ता भुगतान में चूक करते हैं तो नैशनल क्रेडिट गारंटी ट्रस्टी कंपनी के जरिए सरकार एमएसएमई के लिए 100 फीसदी और बड़ी फर्मों व विमानन कंपनियों के मामले में 90 फीसदी नुकसान को कवर करेगी। इससे ऋणदाताओं का जोखिम कम होगा और व्यवसायों की नकदी प्रवाह की समस्या दूर होगी। कंपनियां वित्त वर्ष 2026 की मार्च तिमाही में उपयोग की गई अपनी उच्चतम कार्यशील पूंजी का 20 फीसदी तक, 100 करोड़ रुपए की अधिकतम सीमा के साथ अतिरिक्त ऋण प्राप्त कर सकते हैं। विमानन कंपनियां जरुरत का 100 फीसदी तक, प्रति उधारकर्ता 1,500 करोड़ रुपए की सीमा के साथ अतिरिक्त कर्ज ले सकती हैं।

एनएसई ने की आईपीओ की तैयारी, दस्तावेज जमा कराने की समय सीमा 15 जून तय

नई दिल्ली।

नैशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) ने अपने बैंकरों से कंपनी का आंरभिक सार्वजनिक निर्गम लाने के लिए आईपीओ विवरणिका (डीआरएचपी) दाखिल करने की प्रक्रिया में तेजी लाने को कहा है। एनएसई ने नियामक के पास आईपीओ दस्तावेज जमा कराने की समय सीमा 15 जून तक है। घटनाक्रम से अवगत लोगों ने इसकी जानकारी दी। अगर कंपनी द्वारा तय समय सीमा का पालन किया जाता है तो 2026 के आखिर में एनएसई के बड़े आईपीओ लाने का रास्ता साफ हो सकता है। डीआरएचपी जमा करने के बाद एनएसई को बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) से अंतिम टिप्पणियों का इंतजार है, जिसमें आम तौर पर दो से तीन महीने का समय लगता है।

कोणार्क, ओडिशा राज्य का एक प्रमुख शहर है, जो अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। यह शहर खासकर अपने प्रसिद्ध कोणार्क सूर्य मंदिर के लिए जाना जाता है, जो यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है। कोणार्क न केवल अपने मंदिरों और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता और समृद्ध संस्कृति भी पर्यटकों को आकर्षित करती है।

यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय

कोणार्क यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च तक है, जब मौसम ठंडा और सुखद रहता है। गर्मियों में यहाँ का तापमान बढ़ सकता है, जिससे यात्रा में असुविधा हो सकती है।

कोणार्क एक अद्भुत ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थल है, जो अपनी प्राचीन वास्तुकला, सूर्य मंदिर और समुद्र तट के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की शांति, प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक धरोहर पर्यटकों को आकर्षित करती है। अगर आप भारतीय इतिहास, संस्कृति और वास्तुकला के प्रति रुचि रखते हैं, तो कोणार्क एक अवश्य देखे जाने योग्य स्थान है। यह जगह हर साल लाखों पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है।

कोणार्क की प्राकृतिक सुंदरता और समृद्ध संस्कृति पर्यटकों को करती है आकर्षित

कोणार्क सूर्य मंदिर : स्थापत्य कला का अद्भुत उदाहरण

कोणार्क का प्रमुख आकर्षण है कोणार्क सूर्य मंदिर। यह मंदिर भगवान सूर्य को समर्पित है और 13वीं शताब्दी में राजा नरसिंहदेव द्वारा बनवाया गया था। यह मंदिर अपनी विशाल और अद्भुत वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। मंदिर की संरचना एक विशाल रथ (रथ का रूप) की तरह बनाई गई है, जो सूर्य देवता की यात्रा को दर्शाता है। इसके चार पहिये और घोड़े की मूर्तियाँ अत्यधिक बारीकी से बनायी गई हैं।

कोणार्क सूर्य मंदिर के दीवारों पर उकेरी गई चित्रकला और शिल्पकला भारतीय स्थापत्य का एक अद्वितीय उदाहरण है। यहाँ की मूर्तियाँ और नक्काशी दर्शाती हैं कि उस समय के शिल्पकारों ने कितना उच्च स्तर का कला कौशल हासिल किया था। यह मंदिर न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह भारतीय शिल्पकला और वास्तुकला का अद्वितीय उदाहरण भी प्रस्तुत करता है।

कोणार्क बीच

कोणार्क का एक और प्रमुख आकर्षण है यहाँ का सुंदर समुद्र तट, जिसे कोणार्क बीच कहा जाता है। यह समुद्र तट अपनी शांत और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। पर्यटक यहाँ सूर्योदय और सूर्यास्त का अद्भुत दृश्य देख सकते हैं। यह समुद्र तट उन लोगों के लिए आदर्श है जो समुद्र के नजदीक शांति और सुकून की तलाश करते हैं। साथ ही, यहाँ विभिन्न जल क्रीड़ाओं का भी आनंद लिया जा सकता है, जैसे कि स्विमिंग, बोटिंग और वाटर स्पोर्ट्स।

कोणार्क की ऐतिहासिक धरोहर

कोणार्क में केवल सूर्य मंदिर ही नहीं, बल्कि अन्य ऐतिहासिक स्थल भी हैं जो इस क्षेत्र के सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व को दर्शाते हैं। कोणार्क म्यूजियम में पर्यटक इस क्षेत्र के इतिहास और संस्कृति के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ की पुरानी मूर्तियाँ, शिल्पकला और अन्य पुरातात्विक वस्तुएं इस क्षेत्र की समृद्ध धरोहर को उजागर करती हैं।

कोणार्क महोत्सव

कोणार्क नृत्य महोत्सव हर साल दिसंबर महीने में आयोजित किया जाता है। इस महोत्सव में ओडिशा के पारंपरिक नृत्य रूपों, जैसे कि ओडिसी नृत्य, के शानदार प्रदर्शन होते हैं। यह महोत्सव कोणार्क सूर्य मंदिर के पास खुले आकाश के नीचे आयोजित होता है, जहाँ पर्यटक और कलाकार एक साथ ओडिशा की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का उत्सव मनाते हैं। यह महोत्सव कला और संस्कृति प्रेमियों के लिए एक अद्भुत अनुभव होता है।

नजदीकी पर्यटक स्थल

कोणार्क के आसपास कई अन्य दर्शनीय स्थल भी हैं जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। चिलिका झील जो एशिया की सबसे बड़ी ताजे पानी की झील है, केवल 30 किलोमीटर दूर स्थित है। यह झील अपने प्राकृतिक सौंदर्य और पक्षी अभयारण्य के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ आप बोटिंग का आनंद ले सकते हैं और पक्षियों को देख सकते हैं। इसके अलावा, पुरी और भुवनेश्वर जैसे अन्य पर्यटन स्थल भी कोणार्क के पास स्थित हैं, जो धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

गोवा घूमने का बना रहे प्लान तो जरूर एक्सप्लोर करें पांडवों की गुफा, ऐसे पहुंचे यहां

गोवा में घूमने के लिए वैसे तो कई अच्छी जगहें हैं। कई लोगों को लगता है कि गोवा सिर्फ अपने खूबसूरत समुद्र तटों के लिए जाना जाता है। लेकिन ऐसा नहीं है। गोवा अपने सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और प्राकृतिक आकर्षणों के लिए भी फेमस है। गोवा को बीच के नाम से इसलिए भी जाना जाता है, क्योंकि यहां के समुद्र तट काफी फेमस है। साथ ही यहां की नाइटलाइफ भी काफी ज्यादा फेमस है। अक्सर गोवा को बीच डेस्टिनेशन के रूप में प्रमोट किया जाता है। वहीं सोशल मीडिया, फिल्मों और ट्रैवल एजेंसियों के प्रचार में अधिकतर पार्टीज, बीच और वाटर स्पोर्ट्स को दिखाया जाता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको गोवा की अरवलम गुफाओं के बारे में बताने जा रहे हैं।

अरवलम गुफा

बताया जाता है कि अवरलम गुफा महाभारत में पांडवों के वनवास के दौरान रुकने का स्थान था। यही वजह है कि इस गुफा को पांडव गुफा भी कहा जाता है। इन गुफाओं की वास्तुकला हिंदू और बौद्ध प्रभाव से जुड़ी हुई लगेंगी। यह गुफा अवरलम झरने की तरफ जाने वाले रास्ते में पड़ती है। यह गोवा में घूमने के लिए अच्छी जगहों में से एक है।

लोकेशन

गोवा के नॉर्थ गोवा में संकेलिम के पास स्थित है।

पणजी से यह गुफा करीब 29 किमी की दूरी पर है। यहां पर पहुंचने में करीब 40 मिनट का समय लग सकता है।

अरवलम गुफा से कुछ दूरी पर अवरलम झरना और रुद्रेश्वर मंदिर भी है। आप यहां के नजारे भी देख सकते हैं।

ऐसे पहुंचे अरवलम गुफा

अगर आप थिविम रेलवे स्टेशन से आ रहे हैं, तो यह करीब 20 किमी की दूरी पर है। यहां पर पहुंचने में आपको करीब 30 मिनट का समय लग सकता है।

अरवलम गुफा से गोवा का नजदीकी डाबोलिम एयरपोर्ट से लगभग 45 किमी है।

आप गोवा में कहीं भी जाने के लिए कैब बुक कर सकते हैं। आपको मापसा या पणजी से कैब और बस मिल जाएगी।

आप चाहें तो बाइक रेंट पर लेकर घूम सकते हैं।

प्रकृति, रोमांच और सांस्कृतिक विविधता का संगम है पतरातू घाटी

झारखंड की राजधानी रांची से लगभग 35-40 किलोमीटर दूर स्थित पतरातू घाटी एक प्राकृतिक स्वर्ग है, जो अपने घुमावदार रास्तों, हरे-भरे जंगलों, शांत झीलों और सांस्कृतिक विविधता के लिए प्रसिद्ध है। यह घाटी रांची, रामगढ़ और हजारीबाग की पहाड़ियों के बीच स्थित है, जो इसे एक आदर्श सप्ताहांत गंतव्य बनाती है।

प्रमुख आकर्षण

1. पतरातू डैम और झील

पतरातू डैम, नलकारी नदी पर स्थित है, जिसे मूल रूप से पतरातू थर्मल पावर स्टेशन की जल आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बनाया गया था। आज यह झील नौका विहार, पिकनिक और फोटोग्राफी के लिए एक प्रमुख आकर्षण बन गई है। झील के किनारे स्थित पतरातू लेक रिसॉर्ट पर्यटकों को आरामदायक आवास और जल क्रीड़ा की सुविधाएँ प्रदान करता है।

2. घुमावदार घाटी मार्ग

पतरातू घाटी का सड़क मार्ग अपने हेयरपिन मोड़ों और हरे-भरे दृश्यों के लिए प्रसिद्ध है। यह मार्ग ड्राइविंग और बाइकिंग के शौकीनों के लिए एक रोमांचक अनुभव प्रदान करता है।

3. प्राकृतिक सौंदर्य और वन्यजीवन

घाटी में घने जंगल, पहाड़ियाँ और जलप्रपात हैं, जो ट्रेकिंग, हाइकिंग और बर्ड वॉचिंग के लिए उपयुक्त हैं। यहाँ भारतीय जंगली भैंस, बार्किंग डियर और स्लॉथ बियर जैसे वन्यजीव पाए जाते हैं।

4. सांस्कृतिक विविधता

पतरातू क्षेत्र में संथाल और उरांव जैसे जनजातीय समुदाय निवास करते हैं, जिनकी सांस्कृतिक परंपराएँ और त्योहार पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

कैसे पहुँचें

सड़क मार्ग : रांची से पतरातू घाटी तक एनएच-33 के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। यह मार्ग लगभग 35 किलोमीटर लंबा है और यात्रा के दौरान सुंदर दृश्य देखने को मिलते हैं।

रेल मार्ग : निकटतम रेलवे स्टेशन पतरातू है, जो घाटी से लगभग 4 किलोमीटर दूर स्थित है।

वायु मार्ग : निकटतम हवाई अड्डा बिरसा मुंडा एयरपोर्ट, रांची है, जो घाटी से लगभग 70 किलोमीटर दूर है।

यात्रा का सर्वोत्तम समय

अक्टूबर से मार्च : इस अवधि में मौसम सुखद होता है, जो यात्रा और बाहरी गतिविधियों के लिए उपयुक्त है।

जुलाई से सितंबर : मानसून के दौरान घाटी हरे-भरे परिदृश्य से भर जाती है, लेकिन भारी वर्षा के कारण फिसलन और सुरक्षा संबंधी चिंताएँ हो सकती हैं।

यात्रा सुझाव

घाटी के घुमावदार रास्तों पर सावधानीपूर्वक ड्राइव करें, विशेषकर बारिश के मौसम में।

रात के समय यात्रा से बचें, क्योंकि कुछ क्षेत्रों में सुरक्षा संबंधी चिंताएँ हो सकती हैं।

स्थानीय संस्कृति और पर्यावरण का सम्मान करें; कचरा न फैलाएँ और वन्यजीवों को परेशान न करें। पतरातू घाटी झारखंड का एक छिपा हुआ रत्न है, जो प्राकृतिक सौंदर्य, रोमांच और सांस्कृतिक विविधता का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है। यदि आप शहरी जीवन की भागदौड़ से दूर एक शांत और सुंदर स्थान की तलाश में हैं, तो पतरातू घाटी आपकी यात्रा सूची में अवश्य होनी चाहिए।

महानगर मेट्रो
www.mahanagarmetro.com

आईपीएल में आज होगा आरसीबी और लखनऊ सुपर जायंट्स का मुकाबला

लखनऊ (एजेंसी)। आईपीएल में गुरुवार को यहां रॉयल चैलेंजर्स (आरसीबी) का मुकाबला लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) से होगा। इस मैच में जीत के साथ ही आरसीबी का लक्ष्य प्लेऑफ में जगह बनाना रहेगा। आरसीबी अंक तालिका में दूसरे नंबर पर है और उसके बल्लेबाज व गेंदबाज भी लय में हैं ऐसे में वह इस मैच में जीत की प्रबल दावेदार है। उसके पास विराट कोहली जैसा अनुभवी बल्लेबाज हैं। वहीं भुवनेश्वर कुमार और जोस हेजलवुड जैसे घातक गेंदबाज हैं। टीम की बल्लेबाजी और गेंदबाजी इस सत्र में काफी अच्छी रही है। टीम ने इस सत्र में 6 मैच जीते हैं जिससे उसके 12 अंक हैं। उसका रेट रन रेट भी बेहतर है। कप्तान रजत पाटीदार की आरसीबी की ओर से विराट के अलावा अन्य बल्लेबाजों ने भी अच्छा योगदान दिया है। विराट ने अब तक सबसे अधिक 379 रन बनाए हैं। इस मैच में भी टीम को सलामी बल्लेबाज फिल साल्ट की कमी खलेगी। साल्ट उंगली में चोट के कारण बाहर हैं। ऐसे में उनकी जगह पर शामिल जैकब बेथेल को इस मैच में भी अवसर मिलना तय है।

वहीं दूसरी ओर लखनऊ की टीम का प्रदर्शन इस सत्र में बेहद खराब रहा है ओर वह केवल दो मैच ही जीती है। 4 अंक लेकर वह अंक तालिका में अंतिम स्थान पर है, ऐसें में वह प्लेऑफ की दौड़ से तकरीन बाहर हो गयी है। उसे अपनी संभावनाएं बनाये रखने इस मैच के अलावा बचे हुए सभी मैच जीतने होंगे। उसकी बल्लेबाजी और गेंदबाजी दोनो ही अच्छी नहीं रही है। ऐसे में उसके लिए इस मैच में जीत दर्ज करना बेहद कठिन है। उसके कप्तान ऋषभ पंत भी फार्म में नहीं हैं। टीम के एक अन्य अनुभवी बल्लेबाज निकोलस पूरन के प्रदर्शन में भी निरंतरता की कमी रही है। उसके प्रमुख बल्लेबाज मिचेल मार्श, एडन मार्क्रम भी विफल रहे हैं। अपने प्रदर्शन में निरंतरता नहीं रख पाए हैं। ऐसे में उसके लिए आरसीबी के गेंदबाजी आक्रमक का सामना करना कठिन होगा। आरसीबी के पास भुवनेश्वर और हेजलवुड जैसे गेंदबाज हैं। इसके अलावा ऋणाल पंड्या

ने भी अच्छा प्रदर्शन किया है।

अब तक हुए मैचों की बात करें तो दोनो के बीच कुल 7 मैच हुए हैं जिसमें से आरसीबी ने पांच ने पांच जबकि लखनऊ ने दो मैच जीते हैं।

टीम इस प्रकार है

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु- रजत पाटीदार (कप्तान), टिम डेविड, विराट कोहली, देवदत्त पडिक्कल, जितेश शर्मा, जैकब बेथेल, ऋणाल पंड्या, रोमारियो शेफर्ड, अभिनंदन सिंह, जोश हेजलवुड, रसिख सलाम डार, भुवनेश्वर कुमार, सुयश शर्मा, स्वप्निल सिंह, नुवान तुषारा, वेंकटेश अय्यर, जैकब डफी, मंगेश यादव, जॉर्डन कॉक्स, विक्की ओस्टवाल, विहान मल्होत्रा, कनिष्क चौहान, सात्विक देसवाल।

लखनऊ सुपर जायट्स- ऋषभ पंत (कप्तान और विकेटकीपर), अब्दुल समद, अक्षत रघुवंशी, आयुष बडोनी, मुकुल चौधरी, हिम्मत सिंह, जोश इंग्लिस (विकेटकीपर), एडेन मार्क्रम, निकोलस पूरन (विकेटकीपर), अर्शिन कुलकर्णी, जॉर्ज लिंडे, मिचेल मार्श, शाहबाज अहमद, आकाश सिंह, अवेश खान, मोहम्मद शमी, मोहसिन खान, एनरिक नोर्किया, प्रिंस यादव, दिग्वेश राठी, मणिमारन सिद्धार्थ, अर्जुन तेंदुलकर, नमन तिवारी, मयंक यादव।

संजू सैमसन मैच जिताऊ पारी खेलकर औरेंज कैप तालिका के शीर्ष पांच में पहुंचे, साई सुदर्शन को लगा झटका

नई दिल्ली (एजेंसी)। चेन्नई सुपर किंग्स (CSK) के सलामी बल्लेबाज संजू सैमसन ने धीमी और टर्न ले रही दिल्ली की पिच पर 52 गेंदों में नाबाद 87 रन की मैच जिताऊ पारी खेलकर औरेंज कैप तालिक के शीर्ष पांच में जगह बना ली।

सैमसन ने मंगलवार को दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ यह कमाल किया। उन्होंने गुजरात टाइटंस के बी साई सुदर्शन को पांचवें स्थान से हटाया। इसके साथ ही वह केएल राहुल, अभिषेक शर्मा, हाइनरिक क्लासन और वैभव सूर्यवंशी के साथ IPL 2026 में 400 या उससे अधिक रन बनाने वाले बल्लेबाजों की सूची में शामिल हो गए। सैमसन के इस सीजन 10 पारियों में 402 रन हो गए हैं। उनका औसत 57.42 और स्ट्राइक रेट 167.50 का है। बुधवार रात सनराइजर्स हैदाबाद का मुकाबला पंजाब किंग्स से होना है। ऐसे में अभिषेक शर्मा और क्लासन दोनों के पास टॉप स्थान तक पहुंचने का मौका रहेगा।

वहीं पर्पल कैप तालिका की बात की तो मंगलवार के मुकाबले के बाद पर्पल कैप टेबल के टॉप पांच में कोई बदलाव नहीं हुआ। भुवनेश्वर कुमार अब भी 17 विकेट के साथ टॉप पर बने हुए हैं। उनके बाद अंशुल कम्बोज (चेन्नई सुपर किंग्स, 17 विकेट), कगिसो रबाडा (गुजरात टाइटंस, 16 विकेट), जोफ्रा आर्चर (राजस्थान रॉयल्स, 15 विकेट) और इशान मलिंगा (सनराइजर्स हैदराबाद, 15 विकेट) शामिल हैं। कम्बोज ने दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ अलग-अलग फेज में गेंदबाजी की, लेकिन अपने चार ओवर में उन्हें कोई विकेट नहीं मिला।

हार से निराश अक्षर बोले, 10 से 15 रन और बनाते तो परिणाम कुछ और होता

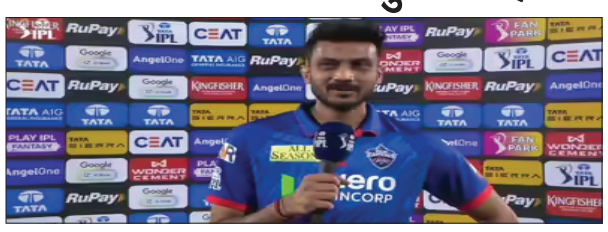

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान अक्षर पटेल ने यहां चेन्नई सुपरकिंग्स (सीएसके) के खिलाफ हुए आईपीएल मुकाबले में मिली हार पर निराशा जताई है। अक्षर ने कहा कि अगर हम 10 से 15 रन और बनाते तो इस मैच का परिणाम कुछ और होता। इस मैच में हार से दिल्ली कैपिटल्स के प्लेऑफ में पहुंचने की संभावनाएं कम हुई हैं। अक्षर ने कहा कि155 रन का स्कोर बचाव के लिए अच्छा था हालांकि टीम 10-15 रन और बनाती तो अच्छा रहता। उन्होंने कहा नए बल्लेबाजों के लिए बल्लेबाजी करना बिल्कुल भी आसान नहीं था, क्योंकि गेंद रुककर आ रही थी और कभी नीची तो कभी असामान्य उछाल ले रही थी। हालांकि, उन्होंने सीएसके के बल्लेबाज संजू सैमसन का उदाहरण देते हुए कहा कि जब बल्लेबाज क्रीज पर सेट हो जाता है, तो विकेट बल्लेबाजी के लिए काफी बेहतर महसूस होने लगता है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा, मुझे लगता है कि हम 10-15 रन से पीछे रह गए।

सैमसन ने धीमी और गेंदबाजों की सहायक पिच पर संजू सैमसन की 52 गेंदों में 87 रन की नाबाद पारी खेलकर अपनी टीम को आठ विकेट से जीत दिला दी। दिल्ली कैपिटल्स द्वारा बनाए गए सात विकेट पर 155 रन के लक्ष्य को सुपरकिंग्स ने 17.3 ओवर में दो विकेट पर 159 रन बनाकर आसानी से हासिल कर लिया। इस जीत के साथ चेन्नई ने प्लेऑफ में पहुंचने की अपनी उम्मीदों को बनाए रखा है और वह 10 मैचों में पांचवीं जीत के साथ अंक तालिका में छठे स्थान पर है। वहीं, दिल्ली कैपिटल्स को इतने ही मैचों में छठी हार का सामना करना पड़ा है और आठ अंकों के साथ वे सातवें स्थान पर खिसक गए हैं, जिससे प्लेऑफ में पहुंचने की उनकी उम्मीदों को बड़ा झटका लगा है। अक्षर ने कहा कि उनकी टीम को गेंदबाजी के दौरान कुलदीप यादव की कमी महसूस हुई।

लखनऊ सुपर जायंट्स के लिए अभी पूरी तरह बंद नहीं हुआ प्लेऑफ का रास्ता

-बचे हुए सभी पांच मैच जीतने होंगे

मुम्बई (एजेंसी)। कप्तान ऋषभ पंत की लखनऊ सुपर जायंट्स के लिए इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) सत्र अच्छा नहीं रहा है और वह अब तक इस टूर्नामेंट में मिली सातवीं हार के साथ ही तकरीबन प्लेऑफ की दौड़ से बाहर हो गयी है हालांकि आधिकारिक तौर पर देखें तो तब भी सुपर जायंट्स की संभावनाएं बनी हुई हैं पर उसे बचे हुए सभी पांच मैच बड़े अंतर से जीतने होंगे। कप्तान ऋषभ ने भी स्वीकार किया कि उनकी टीम को अब टॉप-4 में पहुंचने के लिए काफी किस्मत की जरूरत होगी। वह गलत नहीं हैं, क्योंकि 9 मैचों में 2 जीत और 7 हार के साथ ही सुपरजायंट्स को अब प्लेऑफ की दौड़ में बने रहने के लिए अन्य टीमों के परिणामों के उसके अनुसार आने पर निर्भर रहना होगा।

प्लेऑफ की अपनी उम्मीदों को बनाये रखने के लिए, लखनऊ को अब अपने बचे हुए सभी मैच बड़े अंतर से जीतने होंगे। उन्हें 7 मई को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी), 10 और 15 मई को दो बार चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके), 19 मई को राजस्थान रॉयल्स (आर) और 23 मई को पंजाब किंग्स (पंजाब किंग्स) का सामना करना है। इन सभी पांच मैचों में जीत से उन्हें 10 और अंक मिलेंगे, जिससे वे सत्र के अंत में 14 अंक हासिल कर सकते हैं

हालांकि, केवल अपनी जीत पर्याप्त नहीं होगी। लखनऊ की टीम को अपनी जीत के साथ यह भी उम्मीद करनी होगी कि पंजाब किंग्स , सनराइजर्स हैदराबाद और राजस्थान रॉयल्स जैसी मजबूत टीमें अपने ज्यादातर मैच जीतें। इससे ये टीमें 16 या उससे अधिक अंक हासिल कर शीर्ष-3 प्लेऑफ स्थानों को पक्का कर सकेंगी, जिससे चौथे स्थान के लिए मुकाबला खुला रहे। इसके अलावा उसे ये भी उम्मीद करनी होगी कि रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु, गुजरात टाइटंस अपने बचे हुए मैचों में हारें, ताकि वे 14 से अधिक अंक न बना सकें। उसके लिए बेंगलुरु को हराना भी अत्यंत जरुरी होगा।। कुल मिलाकर, प्लेऑफ में जगह बनाने के लिए लखनऊ को अपने प्रदर्शन में सुधार करना होगा, बल्कि अन्य टीमों के परिणामों के भी पूरी तरह से अनुकूल होने की प्रार्थना करनी होगी। इस प्रकार देखा जाये तो उसे चमत्कार की ही अधिक जरुरत है।

रोहित पहले ही खेलना चाहते थे पर मैंने रोका था : कोच जयवर्धने

मुम्बई । मुम्बई इंडियंस क्रिकेट टीम के मुख्य कोच महेला जयवर्धने ने कहा है कि अनुभवी बल्लेबाज रोहित शर्मा एक सप्ताह पहले ही फिट हो गये थे और खेलने के लिए तैयार थे पर उन्होंने ही रोहित को कुछ और दिनों आराम दिया था। इसका कारण ये था कि रोहित हैमस्ट्रिंग चोट से उबरे थे। रोहित ने इसके बाद वापसी करते हुए ए लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ 84 रनों की शानदार पारी खेलकर टीम को जीत दिलायी थी। जयवर्धने ने कहा कि रोहित अपनी हैमस्ट्रिंग चोट के बाद मैदान पर लौटने के लिए उत्सुक थे पर इस बार हमने उनके साथ थोड़ा और धैर्य रखा। आमतौर पर वह एक हफ्ते में ही लौट आते हैं, लेकिन हमने उन्हें एक अतिरिक्त सप्ताह दिया ताकि वह पूरी तरह तैयार हो सकें और अपनी इच्छानुसार खेल सकें। ये फैसला इसलिए लिया गया ताकि वह दौरान चोटिल न हो। टीम चाहती थी कि वह पूरी तरह से फिट होकर वापसी करें। रोहित आरसीबी के खिलाफ लक्ष्य का पीछा करने के दौरान ही चोटिल हो गये थे। उनकी उनकी अनुपस्थिति में मुंबई इंडियंस ने कई प्रयोग किये क्योंकि टीम उस दौरान टीम खराब दौर से गुजर रही थी। तीन सप्ताह के बाद रोहित ने अच्छी वापसी की। इस सत्र की पांच पारियों में उनके नाम 221 रन हैं, जिसमें उनका औसत 55.25 और प्रभावशाली स्ट्राइक रेट 174.01 रहा है। इस सत्र में उनके नाम दो अर्धशतक भी हैं, जो उनकी फॉर्म और टीम में उनके महत्व को दर्शाते हैं।वापसी के बाद, लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ रोहित ने रयान रिकेल्टन के साथ मिलकर 65 गेंदों में 143 रन की साझेदारी की।अब रोहित 10 मई को रायपुर में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु से खेलते दिखेंगे।

अंडर-18 एशिया कप एशिया कप से पहले ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज खेलेगी भारतीय पुरुष और महिला हॉकी टीमें

नई दिल्ली ।भारतीय महिला और पुरुष हॉकी टीमें अंडर-18 एशिया कप एशिया कप से पहले अपनी तैयारियों को आंकने के लिए ऑस्ट्रेलिया के साथ चार मैचों की सीरीज खेलेगी।यह सीरीज 15 से 20 मई तक खेली जाएगी। इससे भारतीय टीमों को जापान केकाकामिगाहारा में होने वाले महाद्वीपीय टूर्नामेंट से पहले अभ्यासाका अच्छा अवसर मिलेगा। भारतीय पुरुष टीम के कोच सरदार सिंह ने कहा कि इससे पहले साई भोपाल में हमारा कैंप बहुत सफल रहा है। खिलाड़ियों को इसमें काफी सीखने को मिला। इस शिविर में हमारा मुख्य ध्यान सभी पोजीशन्स पर बुनियादी तकनीकों को मजबूत करने पर था, जिससे खिलाड़ी आधुनिक हॉकी की मांगों के लिए बेहतर तरीके से तैयार हो सकें और सीनियर स्तर की ओर लगातार आगे बढ़ें। कोच ने आगे कहा कि ऑस्ट्रेलिया की अंडर-18 टीमों के खिलाफ ये अनुभव मैच की उनकी तैयारी में एक अहम कदम हैं। यह सीरीज टीम के लिए उच्च-स्तर का अंतरराष्ट्रीय अनुभव लेने का अवसर है। इस सीरीज में हम अपनी टीम के बेहतर संयोजन की तलाश करेंगे जिससे अंडर-18 एशिया कप में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए सबसे अच्छी टीम चुनने में हमारी मदद करेगा। वहीं महिला टीम की कोच और पूर्व भारतीय कप्तान रानी रामपाल ने भी कहा कि कहा की साई भोपाल में हमारा कैंप अच्छा रहा। खिलाड़ियों के साथ काम करने का एक शानदार अवसर था और हम खुश हैं कि उन्होंने इसका भरपूर फायदा उठाया। ऑस्ट्रेलिया की अंडर-18 टीम के खिलाफ ये मैच खिलाड़ियों को उच्च स्तर पर खेलने का और आगामी अंडर-18 एशिया कप के लिए तैयार होने का बेहतरीन अवसर । यह प्रत्येक खिलाड़ी के लिए अपनी क्षमताओं को मैदान पर साबित करने का एक अवसर है। सीरीज का कार्यक्रम दोनों टीमों के लिए एक ही है। महिला और पुरुष टीमें अपने मुकाबले 15 मई को शुरू करेंगी। इसके बाद दूसरा मैच 17 मई को, तीसरा मैच 18 मई को और चौथा व अंतिम मैच 20 मई को खेला जाएगा।

बीसीसीआई ने जारी किया आईपीएल प्लेऑफ का कार्यक्रम , अहमदाबाद में खेला जाएगा फाइनल

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने बुधवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 19वें सत्र के प्लेऑफ और फाइनल के लिए मैच स्थलों की घोषणा कर दी। बोर्ड ने एक बदलाव करते हुए फाइनल मैच बेंगलुरु की जगह पर अहमदाबाद में रख दिया है। पहले खिताबी मुकाबला बेंगलुरु में रख गया था पर वहां आ रही दिक्कतों को देखते हुए इसे अहमदाबाद में रखने का फैसला लेना पड़ा। पारंपरा के अनुसार आईपीएल के फाइनल की मेजबानी मौजूदा चैंपियन टीम के पास होती है पर राजनीतिक कारणों की वजह से ये बेंगलुरु के हाथ से निकल गयी क्योंकि वहां कुछ विधायक मुफ्त में पांच टिकट मांग रहे थे। इसके अलावा वहां कुछ और परेशानी भी आ रही थी।

बीसीसीआई ने कार्यक्रम की घोषणा करते हुए कहा कि धर्मशाला में पहला क्वालीफायर खेला जाएगा, जबकि एलिमिनेटर और दूसरा क्वालीफायर मैच न्यू चंडीगढ़ में खेला जाएगा। वहीं फाइनल अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में होगा। मंगलवार 26 मई को धर्मशाला के एचपीसीए क्रिकेट स्टेडियम में पहला क्वालीफायर खेला जाएगा। इसको जीतने वाली टीम सीधे फाइनल में पहुंचेगी और हारने वाली टीम क्वालीफायर 2 खेलेगी। वहीं अगले दिन यानी बुधवार 27 मई को न्यू चंडीगढ़ के न्यू इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में एलिमिनेटर मुकाबला खेला जाएगा। इस मैच को जीतने वाली टीम क्वालीफायर 2 में क्वालीफायर 1 को हारने वाली टीम से खेलेगी, जबकि एलिमिनेटर हारने वाली टीम टूर्नामेंट से बाहर हो जाएगी।

आईपीएल 2026 का दूसरा क्वालीफायर शुक्रवार 29 मई को न्यू चंडीगढ़ में ही खेला जाएगा। वहीं फाइनल मुकाबला अहमदाबाद में रविवार 31 मई को खेला जाएगा। क्वालीफायर 1 की विजेता और क्वालीफायर 2 की विजेता टीम की टक्कर फाइनल में होगी। क्वालीफायर 1 उन टीमों के बीच खेला जाता है, जो लीग फेज के बाद अंक तालिका में नंबर एक और नंबर दो पर रहती हैं, जबकि एलिमिनेटर में नंबर 3 और नंबर 4 की टीम खेलती हैं। इस तरह अंक तालिका में शीर्ष 2 में रहने पर आपको दो अवसर प्लेऑफ में जाने के मिलते हैं। इस बार प्लेऑफ मुकाबले तीन शहरों में रखे गये हैं। अभी तक क्वालीफायर 1 और एलिमिनेटर मैच एक मैदान पर, जबकि क्वालीफायर 2 और फाइनल दूसरे मैदान पर खेला जाता था, लेकिन इस बार क्वालीफायर 1 अलग, एलिमिनेटर और क्वालीफायर 2 अलग और फाइनल अलग मैदान पर खेला जाएगा।

प्लेऑफ कार्यक्रम

क्वालीफायर 1 - मंगलवार 26 मई - एचपीसीए स्टेडियम, धर्मशाला

एलिमिनेटर - बुधवार 27 मई - न्यू इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम, न्यू चंडीगढ़

क्वालीफायर 2 - शुक्रवार 29 मई - न्यू इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम, न्यू चंडीगढ़

फाइनल - रविवार 31 मई - नरेंद्र मोदी स्टेडियम, अहमदाबाद

बुमराह से ब्रेक की जरुरत को लेकर बात करें प्रबंधन : बांगड़

मुम्बई । आईपीएल के इस 19 सत्र में तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह के खराब फार्म से सभी हैरान है। मुंबई इंडियंस की ओर से खेल रहे बुमराह की गेंदों पर जमकर रन बन रहे हैं पर वह विकट नहीं ले पा रहे। इससे उनकी टीम मुम्बई इंडियंस को भी काफी नुकसान हुआ है और वह केवल 6 अंक लेकर नौवे स्थान पर है। ऐसे में कहा है कि उन्हें अब आराम दिया जाना चाहिये। वहीं इस मामले को गंभीर मानते हुए पूर्व क्रिकेटर संजय बांगड़ ने टीम प्रबंधन से कहा है कि वह बुमराह से सीधे बात करे और उनसे आराम लेने को लेकर पूछे। उनसे पूछें, क्या वह पूरी तरह से फिट है या फिर उनहें आराम की जरुरत है। अगर वह आराम चाहते हैं तो लें और तरोताजा होकर वापसी करें। उन्होंने जोर दिया कि यह एक ईमानदार बातचीत होनी चाहिए, ताकि यह साफ हो सके कि उन्हें ब्रेक चाहिए या वह खेलने के लिए तैयार हैं।बांगड़ का मानना है कि मुंबई को बुमराह के बिना खेलने के लिए भी तैयार रहना चाहिए, भले ही इसका मतलब सत्र खराब जाना हो। उन्होंने कहा, यह इस पर भी निर्भर करता है कि कोच और टीम प्रबंधन क्या सोच रहे हैं। अगर मुंबई बुमराह के बिना खेलने के लिए तैयार है, अगर मुंबई नीचे के स्थान पर सीजन खत्म करने के लिए तैयार है, तो शायद बुमराह बाकी मैच न खेलने का फैसला ले सकते हैं। बांगड़ के अनुसार, बुमराह की विफलता प्रयास की कमी नहीं है। उन्होंने कहा, वह बहुत मेहनत कर रहे हैं। बुमराह के लिए यह असामान्य है कि वह पहले दो ओवरों में 31 रन दें। वह पूरी कोशिश कर रहे हैं, लेकिन उनकी बॉडी लैंग्वेज से दिखता है कि वह परेशान हैं। बांगड़ ने यह भी कहा कि उनका सही इस्तेमाल नहीं हो रहा। उन्हें दूसरे ओवर में गेंद दी गई और फिर चौथे ओवर में। मेरा मानना है कि अपने सबसे अच्छे गेंदबाज को शुरुआत में ही दो अच्छे ओवर पहला और तीसरा देने चाहिए।

हमारा वर्ल्ड कप होस्ट 'फीफा है, ट्रंप या अमेरिका नहीं', ईरान का बड़ा बयान

दुबई (एजेंसी)। तेहरान-ईरान के फुटबॉल प्रमुख का कहना है कि उनके वर्ल्ड कप का होस्ट 'फीफा है, न कि मिस्टर ट्रंप या अमेरिका' और उन्होंने इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स के प्रति सम्मान की मांग की है, अगर राष्ट्रीय टीम को इस गर्मी में होने वाले टूर्नामेंट के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा करनी है। अमेरिका और इजराइल के साथ युद्ध के कारण वर्ल्ड कप में ईरान की भागीदारी को लेकर अभी भी अनिश्चितता बनी हुई है।

ईरानी एफए के प्रमुख मेहदी ताज उस प्रतिनिधिमंडल में शामिल थे, जो पिछले सप्ताह वैंकूवर में फीफा कांग्रेस से पहले कनाडाई सीमा से वापस लौट आया था, क्योंकि उन्हें लगा कि आव्रजन अधिकारियों द्वारा उनके साथ अपमानजनक व्यवहार किया गया। ताज ने कहा कि घर लौटने का फैसला उनका अपना था, लेकिन कनाडा के आव्रजन मंत्री ने संसद में पुष्टि की कि ईरानी एफए अध्यक्ष का वीजा उस समय रद्द कर दिया गया था जब वे हवाई जहाज़ में थे, क्योंकि आईआरजीसी के साथ उनके संबंध थे।

IRGC की स्थापना ईरान की इस्लामी व्यवस्था की रक्षा के लिए की गई थी और यह देश में एक प्रमुख सैन्य, राजनीतिक और आर्थिक शक्ति बन गया है। हालांकि, कनाडा और अमेरिका में इस समूह को एक आतंकवादी संगठन के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। फीफा के महासचिव मैटियस ग्राफस्ट्रॉम ने 'असुविधा और निराशा' के लिए खेद व्यक्त करते हुए एक पत्र लिखा और ईरान को 20 मई को ज्यूरिख में उनके वर्ल्ड कप की तैयारियों के बारे में बैठक के लिए आमंत्रित किया है।

ताज, जो IRGC के एक उच्च पदस्थ अधिकारी रह चुके हैं, ने मंगलवार को सरकारी प्रसारक इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ़ ईरान ब्रॉडकास्टिंग को बताया कि वे वर्ल्ड कप में ईरानी अधिकारियों के साथ होने वाले व्यवहार के बारे में शासी निकाय से आश्वासन मांगेंगे। ताज ने कहा, 'हमें अपनी यात्रा के लिए वहाँ एक गारंटी चाहिए कि उन्हें हमारी व्यवस्था के प्रतीकों - विशेष रूप से आईआरजीसी - का अपमान करने का कोई अधिकार नहीं है। यह कुछ ऐसा है जिस पर उन्हें गंभीरता से ध्यान देना चाहिए। यदि ऐसी कोई गारंटी मिलती है और जिम्मेदारी स्पष्ट रूप से ली जाती है, तो कनाडा में हुई जैसी घटना फिर कभी नहीं होगी।'

अमेरिका, कनाडा और मेक्सिको 11 जून से 19 जुलाई के बीच मिलकर वर्ल्ड कप की मेजबानी करेंगे। ईरान के दो मैच लॉस एंजेलिस में होने हैं - 15 जून को न्यूज़ीलैंड के खिलाफ और 21 जून को बेल्जियम के खिलाफ; इसके बाद 26 जून को सिएटल में उसका मुकाबला मिस्र से होगा। अमेरिकी विदेश मंत्री माकर रूबियो ने पिछले हफ़्ते कहा था कि IRGC से जुड़े किसी भी व्यक्ति को देश में आने की इजाज़त नहीं दी जाएगी।

ताज ने कहा, 'हम वर्ल्ड कप में जा रहे हैं, जिसके लिए हमने क्वालिफ़ाई किया है; और हमारे मेजबान फीफा है - न कि मिस्टर ट्रंप या अमेरिका। अगर वे हमारी मेजबानी स्वीकार करते हैं, तो उन्हें यह भी स्वीकार करना होगा कि वे किसी भी तरह से हमारे सैन्य संस्थानों का अपमान नहीं करेंगे। क्योंकि अगर वे

ऐसा करते हैं, तो जाहिर है, वैसी ही स्थिति पैदा हो सकती है जैसी कनाडा में हुई थी - जहां ऐसी संभावना बन गई थी कि हमें वापस लौटना पड़ सकता है। इसलिए, इस तरह की गारंटी ज़रूर होनी चाहिए ताकि हम पूरी तरह से निश्चिंत होकर वहाँ जा सकें।'

अमेरिका और इजरायल ने फरवरी में ईरान पर हवाई हमले किए थे। 211 सदस्य देशों में से ईरान एकमात्र ऐसा फीफा संघ था जिसका वैंकूवर में हुई फीफा कांग्रेस में कोई प्रतिनिधि मौजूद नहीं था। फीफा अध्यक्ष जियानी इन्फेंटिनो ने कहा कि ईरान अमेरिका जाएगा और तय कार्यक्रम के अनुसार ही अपने मैच खेलेगा - भले ही मार्च में ईरान ने अपने मैचों को मेक्सिको में स्थानांतरित करने का अनुरोध किया था।

विश्व कप फुटबॉल से पहले ईरान और पेरु के साथ अभ्यास मैच खेलेगा स्पेन

मैड्रिड । स्पेन की फुटबॉल टीम विश्व कप 2026 की अपनी तैयारियों को बेहतर बनाने के लिए ईरान के साथ 4 जून को एक अभ्यास मैच खेलेगी। स्पेनिश टीम प्रबंधन को उम्मीद है कि यह मुकाबला टीम के लिए टूर्नामेंट से पहले अपनी रणनीति और खिलाड़ियों की फिटनेस को परखने का एक अहम अवसर होगा, विशेष रूप से जब टीम को कई प्रमुख खिलाड़ियों की चोटों से जूझना पड़ रहा है। गौरतल है कि यूरोपीय चैंपियन होने के कारण स्पेन विश्व कप 2026 के प्रबल दावेदारों में से एक है। । ईरान के खिलाफ ये मैच टीम के लिए मेक्सिको दौरे से पहले अंतिम घरेलू परीक्षा होगा, जिसके बाद वे पुएब्ला में पेरू के खिलाफ एक और अभ्यास मैच खेलेंगे। इन मुकाबलों का लक्ष्य टीम संयोजन को समझना, नई रणनीतियों का परीक्षण करना और युवा प्रतिभाओं को बड़े मंच के लिए तैयार करना है, जिससे वे विश्व कप में वे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकें। स्पेन टीम के मुख्य कोच लुइस डी ला फोंट के सामने अभी खिलाड़ियों का फि नहीं होनो एक बड़ी चुनौती है। कोच ने साफ किया है कि वे टीम चयन से पहले खिलाड़ियों की फिटनेस पर विशेष ध्यान दे रहे हैं, क्योंकि कई अहम खिलाड़ी चोटों से जूझ रहे हैं। ला लीगा सीजन के समाप्त होने के बाद 24 मई को टीम की अंतिम घोषणा की जाएगी। खिलाड़ियों की शारीरिक और मानसिक तैयारी विश्व कप जैसे बड़े टूर्नामेंट में सफलता के लिए अहम होती है। टीम के लिए सबसे अधिक चिन्ता का कारण स्टार खिलाड़ी लमानन यामिल का फिट नहीं होना है, जो हैमस्ट्रिंग की चोट के कारण मौजूदा सीजन से बाहर हो चुके हैं और वार्म-अप मैचों में उनकी भागीदारी की संभावना भी कम है।

महानगर मेट्रो
www.mahanagarmetro.com

'ग्लोरी' के लिए हर दिन करता था 5-6 घंटे ट्रेनिंग

एक्टर पुलकित सम्राट अपनी अपकमिंग सीरीज 'ग्लोरी' को लेकर चर्चा में हैं। इस सीरीज के साथ वह अगल क्षेत्र में कदम रख रहे हैं। इसमें वे अपनी जानी-पहचानी रोमांटिक इमेज को छोड़कर बॉक्सिंग की दुनिया पर आधारित भूमिका निभाई है। इसमें काफी शारीरिक मेहनत की जरूरत पड़ी। हाल ही में उन्होंने इस रोल के लिए की गई तैयारी के बारे में बताया है।

उम्मीद से ज्यादा थी मेहनत

सम्राट ने बातचीत में कहा 'जब मैंने ट्रेनिंग शुरू की, तो मुझे लगा कि ठीक है, मैं पहले से ही फिट हूं, इसलिए मुझे बॉक्सर जैसा दिखने के लिए या बॉक्सिंग के लिए इतनी ज्यादा मेहनत करने की जरूरत नहीं है। लेकिन, जैसे ही मैंने ट्रेनिंग शुरू की, मुझे एहसास हुआ कि मैं बहुत पीछे हूं।'

हर दिन कितनी करते थे ट्रेनिंग?

अपने हर दिन के रूटीन के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा 'एक एथलीट जैसा दिखे बिना एथलीट जैसी ट्रेनिंग करना मुमकिन नहीं है। इसलिए, मुझे सचमुच एक बॉक्सर की तरह ही ट्रेनिंग करनी पड़ी। मुझे बॉक्सिंग की हर बारीकी सीखनी पड़ी। मैं दिन में कम से कम 5-6 घंटे ट्रेनिंग करता था, जिसमें 2 घंटे बॉक्सिंग, 1-1.5 घंटे स्ट्रेंथ ट्रेनिंग और फिजियोथेरेपी शामिल होती थी। यह सब इसलिए किया जाता था ताकि मैं अगले दिन फिर से ट्रेनिंग के लिए जा सकूं और मेरे शरीर पर बहुत ज्यादा जोर न पड़े।' उन्होंने इस किरदार में जान डालने में मदद करने के लिए अपनी टीम को भी श्रेय दिया। उन्होंने कहा, 'मैं खुशकिस्मत हूं कि मुझे एक बहुत अच्छी टीम मिली।

वेब सीरीज 'ग्लोरी', भारतीय बॉक्सिंग की दुनिया को दिखाती है। इसमें पारिवारिक ड्रामा, बदला और एक मर्डर मिस्ट्री का मेल है। इसमें दिव्येंदु, सुविंदर विक्की, जन्नत जुबैर, आशुतोष राणा, सिकंदर खेर, सयानी गुप्ता, यशपाल शर्मा, कश्मीरा परदेशी और कुणाल ठाकुर हैं।

प्रेग्नेंसी के बावजूद 'राका' की शूटिंग जारी रखेंगी दीपिका

एटली के निर्देशन में बन रही फिल्म 'राका' दीपिका पादुकोण और अल्लू अर्जुन की वजह से पहले से ही चर्चाओं में है। हाल ही में इसका पोस्टर भी शेयर किया गया था, जिसके बाद फैंस की एक्साइटमेंट और बढ़ गई है। इस बीच दीपिका की दूसरी प्रेग्नेंसी की घोषणा के बाद उनके किरदार को लेकर कई सवाल सामने आ रहे थे, जिनके कुछ जवाब सामने आए हैं।

ऐसे शूट होंगे एक्शन सीन

दीपिका पादुकोण की फिल्म 'राका' को लेकर नई जानकारी सामने आई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, दीपिका अपनी दूसरी प्रेग्नेंसी की घोषणा के बाद भी फिल्म में अपने अहम किरदार को निभा रही हैं और उनके रोल में कोई बदलाव नहीं किया गया है। फिल्म की टीम ने पहले ही बताया था कि दीपिका प्रेग्नेंसी के दौरान भी शूटिंग जारी रखेंगी, और कुछ एक्शन सीन बॉडी डबल की मदद से पूरे किए जाएंगे। अब ताजा अपडेट के अनुसार, फिल्म में उनका किरदार पहले जैसा ही रहेगा और कहानी में उनका इमोशनल ट्रैक भी वैसा ही रखा गया है।

रोल में नहीं होगा कोई बदलाव

प्रोडक्शन से जुड़े सूत्रों के मुताबिक, दीपिका फिल्म में कहानी का बहुत अहम हिस्सा हैं और उनके सीन में कोई कटौती नहीं की गई है। बताया गया है कि एक्शन वाले कुछ हिस्से अब बॉडी डबल से शूट होंगे, जबकि वह खुद इमोशनल और ड्रामेटिक सीन शूट करती रहेंगी। सूत्र ने कहा, 'दीपिका की फिल्म में शानदार एंट्री है और अल्लू अर्जुन के साथ उनका एक बड़ा एक्शन मोमेंट भी है। ये सभी सीन अब बॉडी डबल से किए जाएंगे, लेकिन उनके ड्रामेटिक सीन वैसे ही रहेंगे। उनका रोल बिल्कुल वैसा ही है, कोई बदलाव नहीं किया गया है। वह फिल्म की एक मुख्य किरदार हैं और प्रेग्नेंसी के कारण कुछ भी हटाया नहीं गया है।' पहले भी एक सूत्र ने बताया था कि प्रेग्नेंसी के दौरान भी दीपिका फिल्म के इंटेंस एक्शन सीन शूट कर रही थीं और वह पूरे प्रोजेक्ट के दौरान शूटिंग जारी रखेंगी।

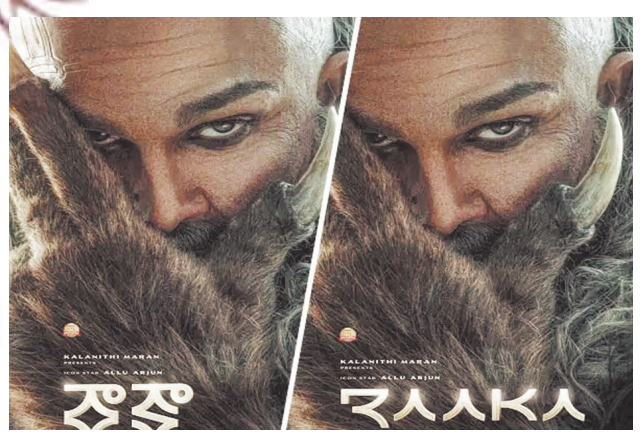

ट्रोलर्स पर भड़कीं पवित्रा पुनिया

एक्टर-एक्ट्रेस को अक्सर सर्जरी को लेकर ट्रोल किया जाता है। बीते दिनों अभिनेत्री मौनी रॉय को भी सर्जरी और फिलर्स को लेकर ट्रोल किया गया था। अब अभिनेत्री पवित्रा पुनिया ने ट्रोलर्स को सर्जरी को लेकर एक्टर्स को ट्रोल करने पर फटकार लगाई है।

उन्होंने लोगों से किसी की व्यक्तिगत पसंद का सम्मान करने की बात कही है। साथ ही एक्टर्स के जीवन में दखल देना बंद करने को भी कहा है।

बकवास करने से हमें कुछ नहीं होता

पवित्रा पुनिया ने अपने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट साझा किया है। पवित्रा ने एक वीडियो साझा किया है। इसमें पवित्रा ने 'द डेविल वियर्स प्राडा 2' की स्क्रीनिंग से मौनी की एक तस्वीर वाला वीडियो साझा किया। वीडियो के ऊपर लिखा था, 'सभी ट्रोलर्स से, ट्रोल करना और अभिनेताओं को परेशान करना बंद करें। यह आपकी रसोई नहीं है और न ही आपका खाना। बकवास करने से हमें कुछ नहीं होता, लेकिन आप लोग ऐसे व्यवहार करते हैं जैसे आपको इसके लिए अतिरिक्त पैसे मिलते हों।'

ट्रोल मत करो चुप रहो

इस वीडियो में पवित्रा ने सीधे मुद्दे पर बात करते हुए कहा, 'ठीक है, मुझे नहीं पता आप लोगों को क्या दिक्कत है, लेकिन मुझे लगता है कि आप सबको ट्रोल करना बहुत पसंद है। कहीं न कहीं मुझे लगता है कि मीडिया भी इन तस्वीरों को पोस्ट करके और फिर कैप्शन को बहुत ही व्यंग्यात्मक और हास्यास्पद तरीके से लिखकर दर्शकों को अनुमान लगाने का मौका देकर इन चीजों का आनंद ले रहा है। सबसे पहले उन लोगों के लिए जो ट्रोल करना पसंद करते हैं, यह कहकर कि 'उन्होंने सर्जरी करवाई है, 500 सर्जरी करवाई हैं, 1 लाख सर्जरी करवाई हैं।' वो 1 लाख आपसे नहीं लिए गए हैं और हम आपसे सुझाव लेने नहीं आते। कम से कम इंडस्ट्री में कुछ लोग तो अब भी कहते हैं कि हां, हम वो कर रहे हैं। अगर आप वो करना चाहते हैं, अगर आपका परिवार वो करना चाहता है, तो कृपया आगे बढ़ें, पैसे खर्च करें और करें। ट्रोल मत करो। बस चुप रहो।'

अनिल रविपुडी की फिल्म में नजर आएंगी कीर्ति सुरेश और कृति शेट्टी

निर्देशक अनिल रविपुडी की आगामी मल्टी-स्टारर फिल्म घोषणा के बाद से ही लगातार चर्चाओं में बनी हुई है। इसमें वेंकटेश दग्गुबाती और नंदामुरी कल्याणराम मुख्य भूमिका में हैं। अब फिल्म की कास्टिंग को लेकर एक और बड़ी खबर सामने आ रही है। फिल्म में दो बड़ी हीरोइनों के भी शामिल होने की खबरें सामने आ रही हैं। फिल्म की कास्टिंग को लेकर सामने आ रही नई जानकारी के मुताबिक, कीर्ति सुरेश और कृति शेट्टी फिल्म में लीडिंग एक्ट्रेस के तौर पर नजर आएंगी। निर्देशक अनिल रविपुडी ने एक कार्यक्रम में संकेत दिया कि कृति शेट्टी नंदामुरी कल्याणराम के साथ स्क्रीन शेयर करेंगी, जो एक नई जोड़ी होगी। वहीं हाल की खबरों के अनुसार, कीर्ति सुरेश को वेंकटेश के साथ कास्ट किए जाने की संभावना है। हालांकि, उनकी कास्टिंग को लेकर अभी कोई आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है। लेकिन इंडस्ट्री में चर्चा है कि उन्हें इस भूमिका के लिए फाइनल कर लिया गया है।

एक दशक बाद साथ आ रहे नंदामुरी कल्याणराम और अनिल रविपुडी

इस फिल्म के जरिए नंदामुरी कल्याणराम और अनिल रविपुडी लगभग एक दशक के बाद साथ में वापसी कर रहे हैं। इससे पहले निर्देशक ने 'पटास' से अपने करियर की शुरुआत की थी। साथ ही यह वेंकटेश और रविपुडी की साथ में पांचवीं फिल्म होगी, जो लगातार बॉक्स ऑफिस पर सफलता देने के लिए जाने जाते हैं। फिल्म की शूटिंग जून में शुरू होने की उम्मीद है, जिसके पहले शेड्यूल में वेंकटेश और कीर्ति सुरेश के नजर आने की संभावना है। यह शेड्यूल वेंकटेश द्वारा त्रिविक्रम श्रीनिवास द्वारा निर्देशित उनकी मौजूदा फिल्म 'आदर्श कुटुंबम' का काम पूरा करने के बाद शुरू होने की उम्मीद है।

स्टार किड्स पर सबसे ज्यादा प्रेशर होता है

बचपन में 'तारे जमीन पर' से घर-घर में पहचान बनाने वाले दर्शील सफारी का सफर सिर्फ एक फिल्म की सफलता तक सीमित नहीं रहा। शुरुआती स्टारडम के बाद उन्हें लंबे समय तक खुद को फिर से साबित करने की चुनौती का सामना करना पड़ा। हाल ही में अमर उजाला से खास बातचीत के दौरान दर्शील ने इंडस्ट्री में नेपोटिज्म, अपने स्ट्रगल, बदलती सोच और बाबिल खान को लेकर उठे विवाद पर खुलकर अपनी राय रखी।

नेपोटिज्म की बहस में छिपी है असली सच्चाई

वह कहते हैं, 'लोग बाहर से इंडस्ट्री को एक ही नजर से देखते हैं। लेकिन अंदर आकर समझ आता है कि चीजें इतनी सिंपल नहीं हैं। नेपोटिज्म की बात होती है, लेकिन अगर मैं किसी को जानता हूं, उसके साथ पहले काम कर चुका हूं, तो मैं उसी के साथ काम करना चाहूंगा। किसी अनजान के साथ रिस्क लेना हर कोई नहीं चाहता। ये नेपोटिज्म का एक हिस्सा हो सकता है, लेकिन ये इंसानी नेचर भी है।'

दरवाजे बंद नहीं होते, हम कोशिश करना बंद कर देते हैं

दर्शील आगे कहते हैं, 'इसका मतलब ये नहीं है कि बाहर वालों के लिए दरवाजे बंद हैं। सच ये है कि दरवाजे बंद नहीं होते, हम कोशिश करना बंद कर देते हैं। अगर आप खुद जाकर अपना काम नहीं दिखाओगे, तो कोई आपको ढूंढने नहीं आएगा। आपको खुद सामने आना पड़ेगा। खुद बताना पड़ेगा कि आप क्या कर सकते हो।'

नेगेटिव सोच आपको लिमिट कर देती है

अपने करियर के उतार चढ़ाव पर वह साफ कहते हैं, 'बहुत बार ऐसा होता है कि हम बैठकर सोचते रहते हैं कि मेरे साथ ये गलत हुआ, मुझे ये मौका नहीं मिला। और उसी में हम खुद को लिमिट कर लेते हैं। मैं हमेशा यही सोचता हूं कि मेरे पास क्या है और मैं उससे क्या बेहतर कर सकता हूं। नेगेटिव सोच आपको कहीं नहीं ले जाती।'

मई 2025 में दिवंगत इरफान खान के बेटे बाबिल खान का एक इमोशनल वीडियो चर्चा में आया था। इसमें उन्होंने बॉलीवुड को 'फेक' बताया था और अपनी इमोशंस जाहिर की थीं। इस पर जब दर्शील से सवाल किया गया, तो उन्होंने इस मुद्दे को संतुलित नजरिए से देखने की बात कही। ये भी इंडस्ट्री का ही हिस्सा है। आप इसे कैसे देखते हो, ये बहुत मायने रखता है। आप चाहो तो हर चीज को नेगेटिव तरीके से देख सकते हो। और चाहो तो उसे समझने की कोशिश भी कर सकते हो। अगर किसी को आप स्क्रिप्ट दोगे, तो वो अपना काम करके देगा। लेकिन असली बात आपकी अप्रोच की है।' वह आगे जोड़ते हैं, 'अगर आप बैठकर यही सोचते रहोगे कि मेरे साथ ये गलत हो गया, मुझे साइड कर दिया गया, तो आप खुद को लिमिट कर लोगे। मेरे हिसाब से हमें इस पर ध्यान देना चाहिए कि हमारे पास क्या मौके आ रहे हैं। कौन से दरवाजे खुले हैं। क्योंकि दरवाजे बंद नहीं होते, हम उनका देखना बंद कर देते हैं।

जहां तक स्टार किड्स की बात है, जैसे बाबिल... मुझे हमेशा लगता है कि उन पर सबसे ज्यादा प्रेशर होता है। अगर आप किसी बड़े स्टार के बेटे या बेटी हो, तो एक्सपेक्टेशन भी उतनी ही बड़ी होती है। लोग आपको जज करते हैं, लेकिन वो प्रेशर नहीं देखते।'

मेंटैलिटी बदलो, रास्ते खुद बनेंगे

दर्शील मानते हैं कि पूरा खेल सोच का है। वह कहते हैं, 'मैं पर्सनली चीजों को इस तरह देखता हूं कि ये सब मेंटैलिटी की बात है। अगर आप सिर्फ ये सोचते रहोगे कि ये नहीं हुआ, वो नहीं हुआ, तो आप वहीं फंस जाओगे। लेकिन अगर आप फोकस करोगे कि आगे क्या करना है, तो रास्ते खुद बनने लगते हैं।'

फिल्में मेरे लिए एक सेफ स्पेस हैं

बात खत्म करते हुए वह कहते हैं, 'मेरे लिए फिल्मों में काम करना एक सेफ स्पेस जैसा है। मैं चलना पसंद करता हूं। सोचता हूं। चीजों को समझने की कोशिश करता हूं। कई बार जब आप किसी चीज को अलग नजरिए से देखते हो, तो आपको उसके जवाब भी मिल जाते हैं।'

महानगर मेट्रो
www.mahanagarmetro.com

अहमदाबाद, (गुरुवार)
07 मई 2026

संक्षिप्त समाचार

साउथ में बड़ा झटका: कांग्रेस ने विजय की नाव को सपोर्ट किया! सरकार बनाने के लिए सपोर्ट का ऐलान,

महानगर मेट्रो ब्यूरो

चेन्नई। साउथ इंडिया की पॉलिटिक्स में एक नया इतिहास लिखा जा रहा है। सुपरस्टार विजय की पार्टी TVK (तमिल वेत्री कझगम) को अब दिल्ली दरबार से हरी झंडी मिल गई है। कांग्रेस ने एक ऑफिशियल लेटर लिखकर विजय को सरकार बनाने के लिए सपोर्ट का ऐलान किया है। लेकिन, यह सपोर्ट मुफ्त में नहीं मिला! कांग्रेस ने इस सपोर्ट के साथ एक ऐसी शर्त जोड़ी है जो सीधे 'कम्युनल ताकतों' पर हमला करती है।

कांग्रेस की 'मास्टर स्ट्रोक' शर्त: कम्युनलिज्म की एंट्री नहीं! कांग्रेस ने सपोर्ट लेटर में साफ लिखा है कि ञङ्कच् और यह अलायंस उन सभी ताकतों को अपने से दूर रखेगा जो:

1. भारत के संविधान में विश्वास नहीं करतीं।

2. समाज में कम्युनलिज्म का जहर फैलाने का काम करती हैं।

सीधी सी बात यह है कि कांग्रेस ने यह शर्त रखकर BJP और उसकी आइडियोलॉजी से जुड़ी पार्टियों के लिए अलायंस के दरवाजे हमेशा के लिए बंद कर दिए हैं। विजय के लिए बड़ी जीत, लेकिन चुनौतियां बाकी एक्टर से नेता बने विजय के लिए यह एक बड़ी कामयाबी है। कांग्रेस जैसी नेशनल पार्टी के सपोर्ट से ञङ्कच् अब तमिलनाडु में सत्ता की गद्दी की तरफ एक मज़बूत कदम बढ़ा रही है। विजय ने हमेशा 'सेक्युलर सोशल जस्टिस' की बात की है, और कांग्रेस की यह शर्त विजय की अपनी आइडियोलॉजी के हिसाब से लगती है।

सास अपनी बहू की असमय मौत का सदमा बर्दाश्त नहीं कर सकी,

महानगर मेट्रो ब्यूरो

हिमतनगर। साबरकांठा जिले के जसवंतगढ़ पाटिया के पास एक भयानक हादसे ने न सिर्फ दो जानें ली हैं, बल्कि एक हंसते-खेलते परिवार का घोंसला भी उजड़ गया है। आमतौर पर सास-बहू के बीच झगड़े के मामले सुनने को मिलते हैं, लेकिन यह मामला साबित करता है कि अगर रिश्तों में खुलापन हो तो मां-बेटी के प्यार से भी टकराव हो सकता है। सास ने भी बहू के वियोग में 6 दिनों में अपनी जान दे दी, और पूरे इलाके में मातम पसर गया है। कुछ दिन पहले हिम्मतनगर के पास जसवंतगढ़ पाटिया के पास एक प्राइवेट बस और कार के बीच भयानक हादसा हुआ था। इस हादसे में परिवार की बहू की भयानक मौत हो गई। जैसे ही बहू की बेवक्त मौत की खबर घर पहुंची, मानो बिजली गिर गई हो।

रिश्ते का आखिरी पल: बहू चली गई और सास का दम घुट गया घर की बहू को अपनी बेटी मानने वाली सास यह सदमा बर्दाश्त नहीं कर सकी। बहू के जाने के बाद सास लगातार दुख में डूबी रही और मन से यह मान नहीं पा रही थी कि उसकी बहू अब इस दुनिया में नहीं रही। आखिर में, बहू की मौत के सिर्फ 6 दिन के अंदर सास भी चल बसी।

परिवार पर दुखों का पहाड़: एक हफ्ते में दो पार्थिव शरीर चल बसे इस दुखद घटना के बाद परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। आस-पास के गांव वाले भी इस अटूट प्यार और रिश्ते का ऐसा अंत देखकर सदमे में हैं। लोग कह रहे हैं, 'आज के समय में ऐसे सास-बहू के रिश्ते बहुत कम मिलते हैं।' पाको गुजरात की तरफ से दिल से श्रद्धांजलि

जब समाज में रिश्तों की वैल्यू कम हो रही है, तो इस सास-बहू का अटूट प्यार एक जीता-जागता उदाहरण है। हालांकि, इस प्यार का अंत बहुत दुखद रहा है। भगवान दोनों की आत्माओं को शांति दे और परिवार को इस दुख की घड़ी में हिम्मत दे।

होर्मुज में भीषण टकराव: ईरान का दावा- अमेरिकी युद्धपोत पर दागीं दो मिसाइलें; अमेरिका ने हमले से किया इनकार

तेहरान, एजेंसी। खाड़ी क्षेत्र में जारी सैन्य गतिरोध अब एक खतरनाक मोड़ पर पहुच गया है। सोमवार को ईरान की इस्लामिक रिवोल्यूशन गार्ड्स कॉर्प्स की नौसेना ने दावा किया कि उसने स्ट्रेट ऑफ होर्मुज से गुजरने की कोशिश कर रहे अमेरिकी नौसेना के एक युद्धपोत पर दो मिसाइलों से हमला किया है। ईरानी समाचार एजेंसी 'फार्स' के अनुसार, यह कार्रवाई तब की गई जब अमेरिकी जहाज ने ईरानी नौसेना की चेतावनियों को नजरअंदाज कर दिया था।

चेतावनी के बाद दो मिसाइल दागी : ईरानी मीडिया का दावा है कि एक अमेरिकी युद्धपोत दक्षिणी बंदरगाह शहर जास्क के पास नियमों को तोड़ते हुए नौकायन कर रहा था। ईरान की नौसेना द्वारा चेतावनी दिए जाने के बाद, उस पर दो मिसाइलें दागी गईं। जिससे अमेरिकी जहाज को वहां से पीछे हटने और भागने पर मजबूर होना पड़ा। हालांकि, अमेरिकी सेना ने इन दावों को पूरी तरह खारिज करते हुए कहा है कि उनके किसी भी जहाज को मिसाइल नहीं लगी है। वहीं, ईरान ने साफ कर दिया है कि उसकी अनुमति के बिना होर्मुज से किसी भी विदेशी जहाज का गुजरना संभव नहीं होगा और उल्लंघन करने वालों को कड़ा जवाब दिया जाएगा।

ईरान ने खबरों को किया खारिज : एक वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारी ने ईरानी मीडिया की उन

खबरों को गलत बताया है जिनमें कहा गया था कि अमेरिकी जहाज पर मिसाइल हमला हुआ है। अमेरिका का कहना है कि उनके किसी भी जहाज को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है। यह विवाद ऐसे समय में खड़ा हुआ है जब राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रविवार को 'प्रोजेक्ट फ्रीडम' का ऐलान किया था। इस मिशन के तहत सोमवार से अमेरिकी सेना होर्मुज में फंसे दूसरे देशों के जहाजों को सुरक्षित बाहर निकालने का काम शुरू कर रही है।

ईरान की सेना की कड़ी चेतावनी : ईरान के मुख्य सैन्य कमान खतम अल-अनबिया सेंट्रल हेडक्वार्टर ने सोमवार को चेतावनी जारी की है कि अगर अमेरिका या किसी भी देश की सेना होर्मुज में घुसने की कोशिश करेगी तो उस पर हमला किया जाएगा।

ईरान ने साफ कर दिया है कि इस समुद्री रास्ते की सुरक्षा उसके हाथों में है और यहां से गुजरने वाले हर जहाज को पहले ईरान की सेना से अनुमति लेनी होगी। दरअसल, 28 फरवरी को ईरान पर हुए हमलों के जवाब में उसने इजरायल-अमेरिका से जुड़े जहाजों के लिए यह रास्ता बंद कर दिया था।

बातचीत फेल और बढ़ा खतरा : गौरतलब है कि 11 और 12 अप्रैल को ईरान और अमेरिका के बीच सुलह की कोशिशें नाकाम रहीं जिससे तनाव और ज्यादा बढ़ गया। बातचीत के विफल होते ही अमेरिका ने होर्मुज पर ईरान के खिलाफ नाकेबंदी लगा दीं। अब डर यह है कि दोनों देशों के बीच की यह आपसी खींचतान एक बड़े युद्ध का रूप ले सकती है।

बलूचिस्तान में हिंसा से टूटी अमेरिकी उम्मीदें: ट्रंप की निवेश योजनाएं अटकी, कई कंपनियां भी कदम खींच रहीं पीछे

इस्लामाबाद , एजेंसी। बलूचिस्तान में बढ़ती हिंसा ने अमेरिका की बड़ी आर्थिक योजनाओं को झटका दे दिया है। पिछले साल राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और पाकिस्तान के सेना प्रमुख आसिम मुनीर की मुलाकात के बाद जो नई शुरुआत दिखी थी, वह अब जमीन पर कमजोर पड़ती नजर आ रही है। खनिज संपदा से भरपूर इस क्षेत्र में निवेश की उम्मीदें थीं, लेकिन लगातार हमलों ने हालात बिगाड़ दिए हैं। ट्रंप प्रशासन ने चीन को टक्कर देने के लिए पाकिस्तान के खनन क्षेत्र में निवेश का जोखिम उठाया था। सितंबर 2025 में दोनों देशों के बीच रिश्ते मजबूत करने की कोशिश हुई और 1.3 अरब डॉलर के निवेश का रास्ता खुला। लेकिन बलूच लिबरेशन आर्मी के बढ़ते हमलों ने इन योजनाओं को रोक दिया। जनवरी से लगातार हमलों के कारण अमेरिका अब यहां निवेश करने से पीछे हटता दिख रहा है। बलूचिस्तान में हालात तेजी से बिगड़े हैं। 31 जनवरी को हुए बड़े हमले में करीब 500 लड़ाकों ने 58 लोगों की जान ले ली। इसके बाद से कई हमले हुए, जिनमें सैन्य ठिकानों और नागरिक ढांचे को नुकसान पहुंचा। इन घटनाओं के कारण विदेशी निवेशकों का भरोसा कमजोर हुआ है और कई कंपनियां अपने कदम पीछे खींच रही हैं। बलूचिस्तान सोने और तांबे के बड़े भंडार के लिए जाना जाता है।

सैन्य कार्रवाई राजनीतिक संकट का समाधान नहीं है: अराघची ने अमेरिका और यूएई को दी चेतावनी

तेहरान , एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बीते दिन होर्मुज स्ट्रेट में फंसे जहाजों के ट्रांजिट के लिए प्रोजेक्ट फ्रीडम की शुरुआत की। अमेरिका के इस मिशन को लेकर ईरान के विदेश मंत्री सैयद अब्बास अराघची ने अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करते हुए कहा कि प्रोजेक्ट फ्रीडम ही प्रोजेक्ट डेडलॉक है। इसके अलावा ईरानी विदेश मंत्री ने अमेरिका और संयुक्त अरब अमीरात को चेतावनी देते हुए कहा कि सैन्य कार्रवाई किसी भी राजनीतिक संकट का हल नहीं है। अमेरिका और यूएई को चेतावनी देते हुए अराघची ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, 'होर्मुज की घटनाओं से यह साफ हो गया है कि राजनीतिक संकट का कोई सैन्य समाधान नहीं है। पाकिस्तान की अच्छी कोशिश से बातचीत आगे बढ़ रही है। इसलिए अमेरिका को इस बात से सावधान रहना चाहिए कि उसके दुश्मन उसे फिर से दलदल में न घसीट लें। संयुक्त अरब अमीरात को भी ऐसा ही करना चाहिए। प्रोजेक्ट फ्रीडम ही प्रोजेक्ट डेडलॉक है।' इसके अलावा अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने यह बताने से मना कर दिया कि यूएस और ईरान के बीच हुआ सीजफायर जारी रहेगा या नहीं। अमेरिकी मीडिया सीएनएन ने बताया कि कंजर्वेटिव रेडियो होस्ट ह्यूग हेविट ने जब पूछा कि क्या ईरान के साथ सीजफायर खत्म हो गया है और क्या सोमवार रात से हमले फिर से शुरू हो सकते हैं, तो ट्रंप ने कहा, 'मैं आपको यह नहीं बता सकता। फॉक्स न्यूज के साथ एक इंटरव्यू में ट्रंप ने ईरानी सेना को चेतावनी दी कि अगर उन्होंने स्ट्रेट या फारस की खाड़ी में अमेरिकी जहाजों को निशाना बनाने की कोशिश की तो वे धरती से मिट जाएंगे। बाद में इंटरव्यू में उन्होंने जोर देकर कहा कि ईरान के साथ युद्ध, मिलिट्री तौर पर, असल में खत्म हो चुका है। वहीं डेनमार्क की शिपिंग और लॉजिस्टिक्स कंपनी मेर्सक ने सोमवार को कंफर्म किया कि उसका एक जहाज अमेरिकी मिलिट्री प्रोटेक्शन के साथ होर्मुज स्ट्रेट से गुजरा और उसके सभी क्रू मेंबर सुरक्षित हैं। लॉजिस्टिक्स कंपनी मेर्सक के एक बयान के मुताबिक, फरवरी में जब युद्ध शुरू हुआ, तब अलायंस फेयरफैक्स नाम का यह जहाज फारस की खाड़ी में था और जाने में असमर्थ था। मेर्सक ने कहा कि अमेरिकी सेना ने हाल ही में उनसे संपर्क किया था। इसकी वजह से जहाज को अमेरिकी सेना की सुरक्षा में खाड़ी से बाहर निकलने का मौका मिला। मेर्सक के बयान के आखिर में कहा गया, 'मेर्सक इस ऑपरेशन को मुमकिन बनाने में अमेरिकी सेना के प्रोफेशनलिज्म और असरदार सहयोग के लिए उनका शुक्रिया अदा करता है।

ट्रंप ने टैरिफ को अमेरिकी व्यापार नीति का मुख्य टूल बताया, चीन पर साधा निशाना

वाशिंगटन , एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि टैरिफ अमेरिकी व्यापार नीति का एक मुख्य टूल बना रहेगा। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि टैरिफ से चीन और दूसरे देशों के खिलाफ कड़े कदम उठाने का संकेत मिला, जिन्होंने यूएस के बिजनेस को नुकसान पहुंचाया। व्हाइट हाउस में ट्रंप ने कहा कि सस्ते इंपोर्ट से घरेलू कंपनियों को नुकसान हुआ है। अमेरिकी राष्ट्रपति इस महीने के आखिर में चीन के दौरे पर जाएंगे, जहां वह राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात करेंगे। चीन की यात्रा से पहले उन्होंने कहा, 'चीन और दूसरे देशों के ऐसे प्रोडक्ट बनाने से आपको नुकसान हो रहा है जो उतने अच्छे नहीं हैं, लेकिन उनमें कम पैसे लगते हैं।' उन्होंने तर्क दिया कि टैरिफ इस ट्रेंड को बदलने और रेवेन्यू बढ़ाने में मदद कर रहे हैं। ट्रंप ने कहा, 'टैरिफ के इस्तेमाल की वजह से, हमारे पास यह सारा पैसा है।' राष्ट्रपति ने संकेत दिया कि मौजूदा टैरिफ लेवल शायद काफी नहीं हैं। उन्होंने उन सेक्टर्स की ओर इशारा करते हुए कहा, 'मेरे विचार में टैरिफ सच में काफी ज्यादा नहीं हैं, जिन पर विदेशी कॉम्पिटिशन का लगातार दबाव है। ट्रंप ने कहा कि कंपनियां प्रोडक्शन को अमेरिका में शिफ्ट करके टैरिफ से बच सकती हैं। उन्होंने कहा, 'अगर वे यहां आकर बिजनेस बनाते हैं तो कोई टैरिफ नहीं है। उन्होंने टैरिफ को अमेरिकी मैन्युफैक्चरिंग में बड़े स्तर पर सुधार से जोड़ा और कहा, 'हमने अपनी कार इंडस्ट्री खो दी और वे सब वापस आ रहे हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति ने अमेरिका-चीन संबंध को कॉम्पिटिटिव बताया, लेकिन दुश्मनी वाला नहीं और कहा, 'हम एआई में चीन से आगे हैं। हमारे बीच फ्रेंडली कॉम्पिटिशन है।' साथ ही, उन्होंने पिछली ट्रेड नीति की आलोचना की और कहा, 'इस देश में हमें दशकों से ठगा गया है। पहले की सरकारें घरेलू उद्योगों को बचाने में नाकाम रही हैं। टैरिफ ने हमारे देश को अमीर बनाया है।' ट्रंप ने फर्नीचर और मैन्युफैक्चरिंग समेत कुछ खास सेक्टर्स पर जोर दिया, जहां उन्होंने कहा कि टैरिफ से प्रोडक्शन को अमेरिका में वापस लाने में मदद मिलेगी।

चीन के बड़े पटाखा प्लांट में भीषण धमाका, 21 लोगों की मौत और 61 घायल

चांग्शा , एजेंसी। सेंट्रल चीन के हुनान प्रांत में एक पटाखा प्लांट में बड़े धमाके की जानकारी सामने आई है। चीनी अधिकारियों की ओर से साझा जानकारी के अनुसार, इस धमाके में 21 लोगों की मौत हो गई और 61 अन्य घायल हो गए। धमाके के बाद रेस्क्यू ऑपरेशन तेजी से शुरू कर दिया गया है। चीनी मीडिया के अनुसार, धमाका सोमवार शाम करीब 4:43 बजे हुशेंग पटाखे बनाने और डिस्प्ले वाली कंपनी के प्लांट में हुआ। यह हुनान की राजधानी चांग्शा के प्रांतीय स्तर के शहर लियुयांग में है। बचाव के लिए पांच टीमों में 480 से ज्यादा बचाव दल भेजे गए हैं और तीन बचाव रोबोट भी तैनात किए गए हैं। जिस जगह पर धमाका हुआ है, उसके आसपास दो ब्लैक पाउडर गोदाम भी हैं। इसलिए बचाव दल ने आस-पास के लोगों को इलाके से निकाला और दूसरा हादसा रोकने के लिए एक बफर जोन बना दिया है। मंगलवार सुबह 8 बजे तक, बचाव दल ने पहले राउंड की खोज के बाद हताहतों

की पुष्टि कर दी थी। घायलों को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया है और दूसरे राउंड की खोज जारी है। इमरजेंसी मैनेजमेंट मंत्रालय ने इमरजेंसी बचाव प्रयासों में मदद के लिए एक्सपर्ट्स को मौके पर भेजा है। न्यूज एजेंसी सिन्हुआ ने बताया कि कंपनी के इंचार्ज को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है और दुर्घटना के कारण की जांच की जा रही है। बचाव दल को पटाखे के प्लांट के 3 किलोमीटर (1.9 मील) के दायरे में सभी को निकालना पड़ा। उन्होंने लोगों को रेस्क्यू करने के दौरान दूसरे हादसों को रोकने के लिए इलाके में नमी बनाए रखने जैसे उपाय भी किए। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने उन लोगों को ढूंढने के लिए पूरी कोशिश करने को कहा है जो अभी भी लापता हैं और घायलों को बचाने की कोशिश कर रहे हैं। सरकारी मीडिया ने बताया कि शी ने हादसे की जांच की भी मांग की ताकि जिम्मेदार लोगों को जिम्मेदार ठहराया जा सके। लियुयांग शहर पटाखे बनाने के लिए जाना जाता है, रिपोर्ट्स में इसे दुनिया का सबसे बड़ा पटाखे बनाने वाला शहर बताया गया है। चीन में पटाखों की फैक्ट्रियों और दुकानों में धमाकों की घटनाएं पहले भी हुई है और ये अक्सर जानलेवा होते हैं। इससे पहले फरवरी में, हुबेई प्रांत में एक पटाखों की दुकान में हुए धमाके में 12 लोग मारे गए थे।

प्रशासन ने क्या कड़े कदम उठाए : इस भयंकर विस्फोट के बाद भी खतरा पूरी तरह से टला नहीं है। प्लांट के अंदर काले बारूद (ब्लैक पाउडर) के दो बड़े गोदाम मौजूद हैं, जिनसे एक और बड़ा धमाका होने का भारी जोखिम बना हुआ है। इस खतरे को देखते हुए बचाव कमान ने घटनास्थल के 1 किलोमीटर के दायरे को 'कोर रेस्क्यू जोन' (मुख्य बचाव क्षेत्र) और 3 किलोमीटर के दायरे को 'कंट्रोल जोन' (नियंत्रण क्षेत्र) घोषित कर दिया है। एहतियात के तौर पर इस खतरनाक इलाके में रहने वाले सभी स्थानीय निवासियों को वहां से निकालकर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा दिया गया है। किसी अन्य हादसे को रोकने के लिए बचाव दलों ने पूरी फैक्ट्री के चारों ओर आइसोलेशन बेल्ट और फायरब्रेक बना दिए हैं। इसके साथ ही बचे हुए बारूद के खतरे को खत्म करने के लिए लगातार पानी का छिड़काव किया जा रहा है।

अगले संयुक्त राष्ट्र प्रमुख के लिए महिला उम्मीदवार का चीन ने किया समर्थन, चयन प्रक्रिया शुरू

बीजिंग, एजेंसी। चीन ने संयुक्त राष्ट्र के अगले महासचिव के रूप में एक महिला के चुनाव का समर्थन किया है। इसके साथ कहा कि वैश्विक संस्था के नेतृत्व में एक महिला नेता को देखकर बहुत खुशी होगी। दरअसल, संयुक्त राष्ट्र के 80 वर्षों के इतिहास में कभी भी किसी महिला नेता ने नेतृत्व नहीं किया है। संयुक्त राष्ट्र में अगले प्रमुख के चयन की प्रक्रिया शुरू हो गई है।

दो महिला उम्मीदवार कौन हैं? : संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त मिशेल बैचलेट और संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन (यूएनसीटीएडी) की महासचिव रेबेका ग्रिनस्पैन सहित दो महिलाएं विश्व के शीर्ष राजनयिक के पद के लिए

दौड़ में शामिल चार उम्मीदवारों में से हैं।

80 साल में एक भी महिला महासचिव नहीं : संयुक्त राष्ट्र में चीन के स्थायी प्रतिनिधि राजदूत फू कोंग ने सोमवार को यहां कहा, 'हमें एक महिला महासचिव को देखकर खुशी होगी। 80 साल हो गए हैं, इसलिए अगर हमें एक महिला महासचिव मिल जाए तो चीन को बहुत खुशी होगी। अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) के प्रमुख राफेल ग्रॉसी और सेनेगल के पूर्व राष्ट्रपति मैकी साल भी संयुक्त राष्ट्र प्रमुख के पद के लिए दावेदारी पेश कर रहे हैं। पिछले महीने चारों उम्मीदवारों को संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों और नागरिक समाज के व्यापक संवादात्मक संवादों के दौरान अगले महासचिव के पद के लिए उनके दृष्टिकोण और संयुक्त राष्ट्र में शीर्ष पद के लिए वे सबसे अच्छे विकल्प क्यों हैं? इस बारे में सवालों का सामना करना पड़ा।

मजबूत महासचिव की जरूरत- चीन : जब उनसे पूछा गया कि क्या संयुक्त राष्ट्र प्रमुख के पद के लिए चार नामांकित व्यक्तियों में से चीन का कोई पसंदीदा उम्मीदवार है, तो मई महीने के लिए सुरक्षा परिषद के अध्यक्ष भी रहे फू ने पिछले सप्ताह कहा, 'अगर होता, तो मैं आपको नहीं बताता।' उन्होंने कहा कि बीजिंग के पास अगले महासचिव के लिए कुछ मानदंड हैं। यह भी कहा कि संयुक्त राष्ट्र एक बहुत ही नाजुक मोड़ पर है और एक मजबूत महासचिव की आवश्यकता है , जो वास्तव में बहुपक्षवाद के लिए प्रतिबद्ध हो, संयुक्त राष्ट्र की भूमिका को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हो और किसी एक महाशक्ति की नीतियों के साथ बहुत अधिक जुड़ा हुआ न हो।

भारतीय अमेरिकियों ने बंगाल में भाजपा की जीत का किया स्वागत

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में भारतीय अमेरिकी नेताओं ने पश्चिम बंगाल में भारतीय जनता पार्टी की जीत का स्वागत किया है। उन्होंने इसे 'ऐतिहासिक जनादेश' और राज्य में शासन, सुरक्षा और विकास के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ बताया है। प्रख्यात भारतीय अमेरिकी डॉ. भरत बराई ने इस परिणाम को 'पश्चिम बंगाल की जनता के लिए एक बड़ी जीत' बताया। उन्होंने आरोप लगाया कि पिछली सरकार ने 'राज्य के सभी संसाधनों का उपयोग करके एक माफिया साम्राज्य को बढ़ावा दिया।' उन्होंने कहा कि मतदाताओं को बलात्कार, आगजनी, हत्या जैसी धमकियों से धमकाया और उन्हें मतदान करने से रोका। उन्होंने यह भी दावा किया कि 'टीएमसी के गुंडों ने ईवीएम पर भाजपा उम्मीदवारों के लिए मतदान बटनों को टेप से ढक दिया और ब्लॉक कर दिया। 'पश्चिम बंगाल में आतंक के शासन' से लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर किया गया है।

ओवरसीज फ्रेंड्स ऑफ बीजेपी (ओएफबीजेपी-यूएसए) के अध्यक्ष डॉ. अदापा प्रसाद ने बंगाल और विशेष रूप से असम की जनता को भाजपा की बंगाल में ऐतिहासिक और असम में शानदार जीत पर हार्दिक बधाई दी। उन्होंने आगे कहा कि पार्टी ने पुडुचेरी में भी बड़ी जीत हासिल की और केरल में महत्वपूर्ण लाभ प्राप्त किए, जबकि तमिलनाडु में सीटों की संख्या में यथास्थिति बनाए रखी।

डॉ. अदापा प्रसाद ने कहा कि इस परिणाम के व्यापक निहितार्थ हैं। उन्होंने कहा, 'भाजपा की बंगाल में जीत भारत की सुरक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। बंगाल के बुरे दिन अब समाप्त हो गए हैं। उन्होंने आगे कहा कि राज्य ने '50 वर्षों तक बेरोकटोक गुंडागर्दी, जबरन वसूली, हिंसा, घुसपैठ, जनसांख्यिकीय परिवर्तन, उद्योगों की हानि और अन्य समस्याओं का सामना किया है। ओएफबीजेपी-यूएसए के महासचिव डॉ. वासुदेव पटेल ने राज्य के रणनीतिक महत्व पर जोर देते हुए कहा, 'पूर्व में स्थित भारत का यह सीमावर्ती राज्य राष्ट्र की सुरक्षा और अखंडता के लिए महत्वपूर्ण है।' उन्होंने कहा कि संगठन संयुक्त राज्य अमेरिका भर में विजय समारोह आयोजित करने की योजना बना रहा है। हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. इंद्रनील बसु-रे ने कहा कि दशकों के शासन के कारण 'पूर्ण औद्योगीकरण का पतन, व्यापक बेरोजगारी, बढ़ती गरीबी और बुनियादी संसाधनों की कमी' के साथ-साथ 'अपराध की अत्यधिक मात्रा' भी हुई है, जिसमें एक आपराधिक गिरोह सड़कों पर राज कर रहा है।उन्होंने कहा, 'देशभक्त बंगालियों के 50 वर्षों से अधिक के संघर्ष के बाद बंगाल में भाजपा की शानदार जीत हासिल हुई है।' उन्होंने आगे कहा कि यह क्षण 'बंगाल की गरिमा को पुनः प्राप्त करने और उसकी आध्यात्मिक गौरव को फिर से स्थापित करने का अवसर प्रदान करता है।'

उन्होंने कहा, 'यह ऐतिहासिक जनादेश जनता के विश्वास, आकांक्षाओं और मजबूत शासन, विकास और सांस्कृतिक गौरव की इच्छा को दर्शाता है। एआईटीसी के अप्रभावी और अक्षम शासन का अंत बंगाल के लिए एक नए अध्याय की शुरुआत है।

वेंस का काफिला गुजरते ही चली गोलियां: व्हाइट हाउस के पास एक हथियारबंद व्यक्ति ने की गोलीबारी; लगा लॉक डाउन

वॉशिंगटन , एजेंसी। अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन डीसी में उस समय भारी हड़कंप मच गया जब व्हाइट हाउस के पास अचानक गोलीबारी की घटना हो गई। एक हथियारबंद व्यक्ति और अमेरिकी सीक्रेट सर्विस के अधिकारियों के बीच हुई इस भयंकर गोलीबारी के बाद व्हाइट हाउस को सुरक्षा कारणों से कुछ देर के लिए पूरी तरह से लॉक डाउन कर दिया गया। यह घटना वाशिंगटन स्मारक के पास ठीक उस समय हुई जब अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस का काफिला वहां से गुजर रहा था।

सोमवार को अमेरिकी समयानुसार, दोपहर करीब साढ़े तीन बजे 15वीं स्ट्रीट एसडब्ल्यू और इंडिपेंडेंस एवेन्यू एसडब्ल्यू के पास एक संदिग्ध व्यक्ति को हथियार के साथ देखा गया। अमेरिकी सीक्रेट सर्विस के डिप्टी डायरेक्टर मैथ्यू सी. क्विन ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि व्हाइट हाउस परिसर के बाहरी इलाके में लगातार गश्त कर रहे सादे कपड़ों वाले एजेंटों ने एक ऐसे संदिग्ध व्यक्ति की पहचान की, जिसके पास बंदूक थी। जब वर्दीधारी अधिकारी उस संदिग्ध व्यक्ति के पास पहुंचे, तो उसने मौके से पैदल भागने की कोशिश की और सीक्रेट सर्विस के एजेंटों पर सीधे गोलियां चला दीं।

क्या सीक्रेट सर्विस की जवाबी कार्रवाई में संदिग्ध को लगी गोली : संदिग्ध व्यक्ति के अचानक हमला करने के बाद सीक्रेट सर्विस के एजेंटों ने तुरंत जवाबी कार्रवाई की और उस पर गोलियां चलाईं। इस पुलिसिया फायरिंग में संदिग्ध व्यक्ति घायल हो गया, जिसे फौरन हिरासत में लेकर इलाज के लिए स्थानीय अस्पताल ले जाया गया। सीक्रेट सर्विस के अधिकारी क्विन ने बताया कि इस दौरान संदिग्ध व्यक्ति द्वारा चलाई गई एक गोली पास में मौजूद एक नाबालिग को भी लग गई। हालांकि, अच्छी खबर यह है कि नाबालिग की जान को कोई खतरा नहीं है और उसकी चोटें जानलेवा

नहीं हैं। क्या यह हमला मौजूदा अमेरिका के राष्ट्रपति पर किया गया था? घटना के तुरंत बाद सबसे बड़ा सवाल यही उठा कि इस हथियारबंद व्यक्ति का असली निशाना आखिर कौन था। क्या वह उपराष्ट्रपति या मौजूदा अमेरिका के राष्ट्रपति पर हमला करना चाहता था? इस पर डिप्टी डायरेक्टर क्विन ने स्पष्ट किया कि अभी तक यह पता नहीं चल पाया है कि बंदूकधारी का निशाना कौन था। उन्होंने कहा कि हमारी टीम 24 घंटे इस इलाके में पूरी मुस्तैदी से गश्त करती है। यह हमला मौजूदा अमेरिका के राष्ट्रपति की ओर निर्देशित था या नहीं, फिलहाल इसकी जांच की जा रही है और जल्द ही सच सामने आ जाएगा।

गोलियों की आवाज सुनकर मौके पर मौजूद लोगों का क्या हाल था : गोलीबारी शुरू होते ही दोपहर करीब 3:45 बजे सीक्रेट सर्विस ने व्हाइट हाउस के नॉर्थ लॉन से मीडियाकर्मियों को तुरंत सुरक्षित ब्रीफिंग रूम में पहुंचा दिया। वरमोंट से व्हाइट हाउस घूमने आए 21 वर्षीय रयान नेफ और उनकी मां अमांडा नेफ ने बताया कि वे तस्वीरें ले रहे थे, तभी उन्होंने उपराष्ट्रपति वेंस का काफिला गुजरते देखा। रयान के मुताबिक, इसके तुरंत बाद पांच-छह गोलियों की तेज आवाजें आईं। इलाके की हर पुलिस और हर गाड़ी उसी दिशा में तेजी से भागने लगी। लोग पूरी तरह से भ्रम और खौफ में थे। घटना के बाद डीसी पुलिस ने इलाके की घेराबंदी कर दी और कई घंटों तक सड़कों को बंद रखा।

Printed, Published and Owned by SARABJIT MAKAN and Printed by ILEVAN HASMUKHRAI THAKAR Printed at Jay Graphics & Printers, C/15, Vikram Chambers, Ashram Road, Ahmedabad - 380009. and published from F/1 first floor, rajas apartment, near old railway crossing, maninagar east maninagar, Ahmedabad, Gujarat-380008. Editor SARABJIT MAKAN, Mo.: 9638877700, 9662420070.